किताब का नाम

आलमगीर हाज़िक

छोटी बड़ी बीमारियों की अलामत और इलाज का तरीका

सलाम फार्मेसी®

यूनानी कम्पनी

SALAAM PHARMACY®

मुसन्निफ़
हकीम आलमगीर हाज़िक

पेज नं.	लिस्ट (List)
1	**जोड़ों का दर्द** कमर घुटना पीठ गर्दन के दर्द का तरीक़ा इलाज।
4	**किडनी** और **पित** की थैली का **पत्थर** गलाने का आसान तरीक़ा इलाज।
6	**बवासीर ख़ूनी** बादी ठोंठा मस्सा महेसी के इलाज का तरीक़ा।
8	**चेहरे पर दाना** कील मुंहासा या पूरे जिस्म पर फोड़ा फुंसी निकलने की वजूहात और उसको ख़त्म करने का तरीक़ा इलाज।
12	**सरअते अंज़ाल, जिरयान, एहतेलाम** की बीमारी को ख़त्म करने का तरीक़ा इलाज।
15	**मर्दाना कमज़ोरी** या मुकम्मल नामर्दी के इलाज का तरीक़ा।
23	**लिकोरिया** यानी निस्वानी आज़ाए तनासुल से सफ़ेद पानी ख़ारिज होना उसके इलाज का तरीक़ा। 23
24	पित्ती उछलना या **जुल पुतती** के इलाज का तरीक़ा। 24
25	**बेऔलाद होने का अस्बाब क्या है।**
29	**बेऔलाद मर्द** की बीमारी के इलाज की दवा यह है।
33	**बेऔलाद औरत** की बीमारी के इलाज की दवा ये है। 33
36	**हैज़ की कमी** या **हैज़ का बंद होजावा** उसके इलाज का तरीक़ा। 36
37	**नसयान** यानी **भूलने की बीमारी** या **दिमाग कमज़ोर** हो गया हो उसके इलाज का तरीक़ा। 37
38	**बच्चा दानी** या **पीस्तान** में **गाँठ गिलटी** हो उस को गलाने का तरीक़ा इलाज।
39	**दूध की कमी** या बच्चा पैदा होने के बाद की **कमज़ोरी** के इलाज का तरीक़ा।
40	**शूगर** बीमारी नहीं होने वाले बीमारीयों की अलामत है और उसके इलाज का तरीक़ा।

पेज नं.	लिस्ट (List)
41	**हैज़ ज़्यादा** या **बहुत ज़्यादा** आरहा है या मुसलसल हैज़ जारी रहता है या बेतरतीब है, इसके इलाज का तरीक़ा।
43	**गैस** से पैदा होने वाली बीमारीयों की अलामत और इलाज का तरीक़ा।
46	**जिगर मेदा लीवर** में **सूजन** हो उस का इलाज।
47	**पेशाब** के रास्ते में **जलन** हो या **ख़ून** आरहा है उसका इलाज।
48	**गुर्दा** में **सूजन** पैदा हो गई है या **गुर्दा सिकुड़** गया है या **गुर्दा ख़राब** हो गया है या **गुर्दा कमज़ोर** हो गया है उसके इलाज का तरीक़ा।
49	बहुत पुराना **नज़ला ज़ुकाम** सर्दी से हो रहा हो या गर्मी से उसका इलाज।
51	**फेफड़ों में पानी** भर गया है उसकी मालूमात और उसके मुकम्मल इलाज का तरीक़ा ये है।
54	**ऑक्सीजन की कमी**, जब मरीज़ का पेट तेज़ी से फूलने पचकने लगे और **सांस फूलना - सर्दी - खांसी - नज़ला - ज़ुकाम - जरासीम - वाइरस** ख़त्म करने का तरीक़ा इलाज।
56	**दमा** सांस फूलने की बीमारी का इलाज।
57	**पेशाब में जलन** हो या मसाना में **गोश्त बढ़ गया** है इसके इलाज का तरीक़ा।
58	**मिर्गी** और **हिस्टेरिया** क्यों और कैसे होती है और इस बीमारी के इलाज का तरीक़ा।
60	**सरदर्द, चक्कर** आता हो, **घबराहट, बेचैनी**, नींद की कमी से होने वाली बीमारीयों के इलाज का तरीक़ा।

पेज नं.	लिस्ट (List)
61	**जुनून** आधा या पूरा **पागलपन** की बीमारी के इलाज का तरीक़ा।
63	**हाई ब्लड प्रैशर** की बीमारी या **लो ब्लड प्रैशर** का मर्ज़ है उसके इलाज का तरीक़ा।
65	**दिल की कमज़ोरी दिल का दौरा** पड़ना और ख़ून की नाली में फ़ासिद बलग़म के ज़र्रात जमा होजाना और **घबराहट बेचैनी** के इलाज का तरीक़ा ये है।
69	**कैंसर** की बीमारी **गाँठ गिलटी** के अस्बाब और उसके इलाज का तरीक़ा ये है।
73	**मुँह** या **नाक** से **ख़ून** जारी हो गया है तो इस बीमारी को ख़त्म करने का तरीक़ा इलाज।
74	**मुँह ज़बान मसूड़ा** में **छाला** या ज़ख़्म हो गया है या **कैंसर** हो गया है इसके इलाज का तरीक़ा।
76	**मुँह** में **छाला, ज़बान** पर **दाना** निकलना और **सीने** में **जलन** रहना उसके इलाज का तरीक़ा।
77	**अपेंडिस** की बीमारी के इलाज का तरीक़ा।
78	**निस्वानी आज़ाए तनासुल का बाहर आना** या ख़ारिश जलन रहती हो उसके इलाज का तरीक़ा।
79	**भगंदर** की बीमारी के इलाज का तरीक़ा।
80	**अमराज़े ख़बीयह** यानी **सफ़ेद दाग़** का इलाज।
81	**दाँतों में दर्द** या **पायेरिया** के इलाज का तरीक़ा।
82	**फ़ालिज लक़वा** या हाथ पैर उंगलीयों में **टेढ़ापन** या **थरथराहट** होती है उसके इलाज का तरीक़ा।

पेज नं.	लिस्ट (List)
86	**थाइरॉयड** बादी या ख़ुशक हो उस का इलाज।
87	**कान का दर्द** या **कान का बहना** उसके इलाज का तरीक़ा।
87	**बच्चा पैदा** होने के बाद सूजन बुख़ार और दर्द को ख़त्म करने का इलाज।
88	**टेटनस** क्यों और कैसे होती है **अर्क़ुन्निसा** का इस बीमारी से रिश्ता क्या है उसकी मुख़्तसर मालूमात और इलाज का तरीक़ा।
91	**साटीका अर्क़ुन्निसा** की मुख़्तसर मालूमात, टेटनस से उसका क्या रिश्ता है और इस बीमारी के इलाज का तरीक़ा।
93	**ऐसाबी बीमारी** गर्दन पीठ कमर पुट्ठा हाथ पैर का ढीला होजाना इस बीमारी की मुख़्तसर मालूमात और इलाज का तरीक़ा।
95	**हरनीया** की बीमारी के इलाज का तरीक़ा।
96	**बच्चों के दाँत** निकलते वक़्त होने वाली बीमारीयों की जानकारी और इलाज का तरीक़ा।
98	**उल्टी, संडास, घबराहट, बेचैनी, कमज़ोरी** के इलाज का तरीक़ा ये है।
100	**मौसम का बुख़ार** या **मलेरीया टाइफ़ाइड** या चढ़ने उतरने वाला बहुत **पुराना बुख़ार** है, इस तरह के सारे बुख़ार को ख़त्म करने का तरीक़ा इलाज।
102	**बार बार हमल गिरजाने** वाली बीमारी के इलाज का तरीक़ा।
103	**बीमारीयों** की **पैदाइश** कैसे होती है।

हमारी हिक्मत का तरीक़ा अमल

इस किताब में जो मज़मून है वो हमने इलाज के दरमयान किए गए तजुर्बात की बुनियाद पर बयान किया है क्यों की हमको यूनानी तरीक़ा इलाज की बहुत सी हिक्मत पर इख़तिलाफ़ है जैसे मिसाल के तौर पर बलग़म को पका कर इलाज करना क्यों की बलग़म पक जाने के बाद फ़ासिद हो जाता है और उसके ज़र्रात बिखर जाते हैं और फेफड़ा के अंदर से तो ख़ारिज होजाते हैं लेकिन जो दवा लुआब को फ़ासिद बलग़म की शक्ल में बदलती है वो ख़ून के अंदर के लुआब को फ़ासिद करके बलग़म के फ़ासिद ज़र्रात में तबदील कर देती है और यही बलग़म के ज़र्रात ख़ून की नालीयों में चिपक कर सुद्दा पैदा करके बड़ी बड़ी बीमारीयों को वजूद में लाते हैं और जो बलग़म जिस्म के किसी आज़ा में ठहर जाते हैं वो भी किसी बीमारी के पैदा होने का अस्बाब बन जाते हैं और दूसरी हिक्मत का इख़तिलाफ़ ये है की अगर किसी का आज़ाए तनासुल मुर्दा हो गया है तो उसको ज़िंदा करने के लिए मुख़्तलिफ़ किस्म का ऐसा तिला जो किसी ना किसी तरह से नुक़्सान पहूँचाता है जैसे चमड़ा खाल को निकाल देना या खाल जला देने वाला या दाना वग़ैरा निकलने का अस्बाब बना देना ये सब दुरुस्त हिक्मत नहीं है क्यों की आज़ाए तनासुल में सिर्फ चमड़ा है और लुआब की मोटी नस है और नाली है और बाक़ी सिर्फ़ सुर्ख़ ख़ून वाली नसों का महांजाल है इसके इलावा कुछ नहीं है, अब अगर आज़ाए तनासुल मुर्दा हो जाए तो सिर्फ उसको ताक़त की ज़रूरत है और मुतहर्रिक करने की इसके इलावा और भी कुछ बीमारीयों को हमने अपने तरीक़ा हिक्मत से इलाज करके लोगों को फ़ायदा पहुँचाया है और आने वाली अगली किताब को **انشاءاللہ** तफ़सील से अपने तजुर्बात और हिक्मत को किताब की शक्ल में जारी करूंगा **انشاءاللہ العزیز** हमने अपनी दवाओं में सिर्फ ताक़त को बढ़ावा दिया है या मुख़्तलिफ़ किस्म की दवाओं से होने वाले नुक़्सानात का तिरयाक़ और उसकी इस्लाह की हिक्मत को अपनाया है और मुख़्तलिफ़ किस्म की जरासीम वाइरस फफूंद को ख़त्म करके सेहत को काएम रखने की हिक्मत को काएम किया है। **الحمدللہ رب العالمین**۔

जोड़ों का दर्द कमर घुटना पीठ गर्दन के दर्द का तरीक़ा इलाज।

घुटना पीठ कमर गर्दन और जोड़ों के दर्द की बीमारी में इस दवा को इस्तेमाल करें

लबाब शबाब माजून

याकूत मुकव्वी खास माजून

जोड़ों का दर्द घुटना पीठ कमर के दर्द की शुरुआत से पहले या आज भी जिरयान मनी खारिज होरही या चिकट बलगमी संडास होरही है या बहोत ज़्यादा बलगम खारिज होता है तो इस दवा को एक या दो डब्बा ज़रूर इस्तेमाल करें दोनों माजून के साथ में

पैगामे शिफा टैब्लेट

जोड़ों का दर्द कमर, पीठ, गर्दन, घुटना का दर्द इस लिए होता है या तो जोड़ों के बीच में लुआब की कमी हो गई है या लुआब बहुत ज़्यादा पतला हो गया है अगर लुआब पतला नहीं है लुआब की कमी से जोड़ का दर्द गर्दन पीठ कमर या घुटना में दर्द शुरू हो रहा है तो ये लुआब की कमी आपको आहिस्ता-आहिस्ता कई तरह की बड़ी बीमारी और बुढ़ापे की हालत में पहुँचा देती है क्यों की जिस्म के अंदर का पूरा निज़ाम लुआब और उसके अंदर मौजूद हर तरह के लुआबी जौहर से जिस्म के हर आज़ा का निज़ाम जुड़ा हुआ है लुआब के अंदर हर आज़ा के लिए अलग अलग जौहर मौजूद रहता है या लुआब जिस आज़ा पर पहूँचता है उस आज़ा की शक्ल एख्तियार कर लेता है सबसे पहले पेट के रास्ता से होते हुए पीठ कमर पुट्ठा के आगे पीछे का हिस्सा और घुटना और पैरों के अंदर मौजूद मोटी लुआबी सफ़ेद नस और लुआबी झिल्ली में दाख़िल होता है और साथ में दिमाग के ऊपर मौजूद लुआबी झिल्ली जो दिमाग को पकड़ कर रखती है और दिमाग को गेज़ा फ़राहम करती है और इसी दिमाग की झिल्ली के साथ ऐसाबी नसों का जाल मौजूद है जो हर वक़त दिमाग को गेज़ा फ़राहम करता है और दिमाग के ज़रीया से चलने वाला जिस्म की हर आज़ा को हर तरह की हरकत और हर तरह के सन्देस पहूँचाने का ज़रीया भी है यानी पूरे जिस्म के सारे निज़ाम को चलाने का ज़रीया दिमाग है और इसी लुआब के जौहर से आज़ाए रईसा के ऊपर की झिल्ली को ताक़त मिलती है यानी की दिल के ऊपर फेफड़ा के ऊपर जिगर के ऊपर गुर्दा के ऊपर जो लुआबी झिल्ली है ये झिल्ली ही इस सच्चाई की हक़ीक़त है की अगर ये झिल्ली कमज़ोर ढीली होजाती है तो कोई ताक़त उस आज़ा को कमज़ोर होने से और बीमारी होने से नहीं बचा सकती है, लुआब से नस बनती है लुआब से हड्डी बनती है हड्डी का गूदा बनता है और खाल के ऊपर का तेल भी लुआब का एक जुज़ है और एक ख़ास बात ये भी

बता रहा हूँ की शूगर को जो चीज़ कंट्रोल करती है यानी शूगर ऐतेदाल में रखती है वो इंसुलिन भी लुआब का एक जौहर है लुआब का एक जुज़ है, जोड़ों के दर्द गर्दन पीठ कमर घुटना के दर्द को दर्द नाशक दवा के ज़रीया से घसीटना नहीं चाहीए अगर इस बीमारी को दर्द नाशक दवा के ज़रीया टाइम पास कर रहे हो तो ये बात अच्छी तरह से याद रखना हमने जिस बात का ज़िक्र किया है ये बहुत मुख़्तसर सी हक़ीक़त है ये एक इशारा है किताबी ज़बान में लुआब को माद्दाए मन्वियह कहते हैं यानी जिस माद्दा से मनी बनती है, जोड़ों के दर्द के पीछे बहुत बड़ी और लंबी हक़ीक़त मौजूद है इस बीमारी की बुनियाद सिर्फ दो चीज़ों पर मौजूद है या तो लुआब बहुत पतला हो गया है इस लिए जोड़ों के बीच में जो लुआब है वो फैल गया है और दोनों जोड़ों की गाँठ के ऊपर लुआबी गोश्त है ये लुआबी गोश्त नरम हो कर फैल गया है इस लिए जोड़ों के बीच में बहुत मामूली नहीं के बराबर लुआब मौजूद है और जवाइंट की गाँठ पर नरम गोश्त की गद्दी रहती है ये गद्दी लुआब की कमी से या घिसाव पैदा हो कर फैल जाती है और पैर टेढ़ा होने लगता है या बहुत ज़्यादा सूजन पैदा हो कर दर्द तक्लीफ का ज़रीया बन जाता है ये बात बहुत अच्छी तरह से समझ कर दिमाग में बैठा लो की नौजवानी की ताक़त और जोड़ों की मज़बूती और हर तरह की चुसती फुर्ती का राज़ ये है की लुआब अगर गाढ़ा और बहुत ज़्यादा गाढ़ा ठोस होने की हालत के क़रीब है तो ये हर तरह की बीमारी से दूर और हर तरह की नौजवानी की हालत में होता है और अगर लुआब की कमी हो जाए या लुआब संडास पेशाब के रास्ता से फ़ासिद हो कर ख़ारिज हो जाए या लुआब फ़ासिद हो कर बलग़म की शक्ल में ख़ारिज हो जाए या लुआब की हरारते अज़ीज़िया ख़त्म हो कर लुआब पतला हो जाए तो ये सारी ख़राबी हर तरह की कमज़ोरी और बुढ़ापे की हालत में पहुँचा देती है कोई भी उम्र का इन्सान हो चाहे पच्चीस या पच्चास साल की उम्र का इन्सान है उसके अंदर बुढ़ापे वाली हर तरह की कमज़ोरी पैदा होजाती है इस बीमारी का बेहतरीन इलाज ये है की **माजून लबाब शबाब** को इस्तेमाल करने से जोड़ों का दर्द घुटना कमर पीठ गर्दन के दर्द से मुकम्मल आराम होजाता है और **माजून लबाब शबाब** के साथ **माजून याक़ूत मुक़व्वी ख़ास** का इज़ाफ़ा कर लेने से फ़ायदा इतना ज़्यादा बढ़ जाता है की जिस्म के अंदर हर तरह की ताक़त का एहसास ज़ाहिर होने लगता है क़ुव्वते मुदाफीअत और ऐसाबी नस और ऐसाबी झिल्लियों में सुर्ख़ ख़ून वाली नसों में जोड़ों की गाँठ और हड्डी के अंदर हर तरह की ताक़त बढ़ जाती है और ये सभी आज़ा में ठोस करने वाली ताक़त का इज़ाफ़ा होजाता है ये दोनों माजून एक साथ इस्तेमाल करने से बड़ी तेज़ी से लुआब की पैदाइश में इज़ाफ़ा होजाता है और हर आज़ा की ताक़त काएम होजाती है ये दोनों माजून दर्दनाशक नहीं है इस माजून से क़ुदरती ताक़त में इज़ाफ़ा होता है इस लिए घुटना और जोड़ का दर्द हमेशा के

लिए ठीक होजाता है इस **माजून लबाब शबाब** और **माजून याक़ूत मुक़व्वी ख़ास** को कम से कम एक महीना तक इस्तेमाल करें इस से आपको ये फ़ायदा होगा की आपका जिस्म आपके अंदर आई हुई ताक़त की गवाही देगा की आप पच्चास फ़ीसद तक मुकम्मल ठीक हो गए हो या सौ फ़ीसद का फ़ायदा हो गया है अगर आपके अंदर सिर्फ पच्चास फ़ीसद का फ़ायदा हुआ है तो दो तीन महीना तक इस्तेमाल करने के लिए आपको किसी से मश्वरा लेने की ज़रूरत नहीं है लुआब से सब कुछ होता है हड्डी बनती है हड्डी का गूदा बनता है और हड्डी के गूदा से ख़ून बनता है, लुआब की कमी से हर तरह की बीमारीयों को अपना वजूद ज़ाहिर करने में देर नहीं लगती है और अगर लुआब की पैदाइश बढ़ जाती है और लुआब हज़म हो कर जिस्मानी आज़ा का जुज़ बन जाता है तो ज़्यादा उम्र होने के बाद भी जवानी का एहसास ज़ाहिर होता है और अगर बलग़मी संडास होने की वजह से घुटना और जोड़ों का दर्द शुरू हुआ है तो **माजून लबाब शबाब** के साथ में **इतरीफ़ल सरसरा** को इस्तेमाल करें **इतरीफ़ल सरसरा** भूख पैदा करेगा खाना हज़म करेगा और उसकी ख़ास सिफ़त ये है की गेज़ा से तैयार होने वाले आग – हवा - पानी और लुआब को हज़म करता है और ग़लीज़ रियाह के ताफ़्फ़ुन को ख़ारिज करके जिस्म के बाहर करता है और हर आज़ा को बीमारीयों से बचाता है और पाख़ाना के रास्ता से ख़ारिज होने वाले लुआब को रोकने में मदद करता है और अगर आप दवा की ताक़त को बढ़ाना चाहते हो तो **माजून लबाब शबाब** और **इतरीफ़ल सरसरा** के साथ **माजून याक़ूत मुक़व्वी ख़ास** का इज़ाफ़ा कर लेने से बीमारी को जल्दी से ख़त्म करने में मदद मिलती है और अगर जोड़ों का दर्द घुटना कमर पीठ के दर्द की शुरूआत जिरयान मनी ख़ारिज होने की वजह से है तो एक या दो डब्बा **पैग़ाम शिफा टैब्लेट** का इज़ाफ़ा कर लेने से बहुत जल्द आराम होजाता है उसका तरीक़ा ये है की **माजून लबाब शबाब** और **पैग़ाम शिफा टैब्लेट** ये दोनों दवा के साथ में **माजून याक़ूत मुक़व्वी ख़ास** को भी इस्तेमाल कराएँ तो ज़्यादा बेहतर है, **पैग़ाम शिफा टैब्लेट** लुआब को पेवस्त करने की ताक़त को बढ़ाता है और संडास पेशाब मुँह नाक के रास्ता से लुआब को फ़ासिद हो कर ख़ारिज होने वाली बीमारी को ख़त्म करने में मदद करता है और हर तरह की ताक़त को वापिस लाने में मदद करता है।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून और अगर टैब्लेट है तो एक एक टैब्लेट सुबह खाली पेट सादे पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को दस दस ग्राम माजून और एक एक टैब्लेट खाली पेट सादे पानी से इस्तेमाल करें, और इतरीफ़ल को भी माजून के साथ माजून ही की तरह दस दस ग्राम सुबह शाम खाली पेट सादे पानी से इस्तेमाल करें।

किडनी और पित की थैली का पत्थर गलाने का आसान तरीक़ा इलाज

पत्थर चट्टा टैब्लेट की ख़ास सिफ़त ये है की हर जगह की पथरी को गलाकर ख़त्म करने में मदद करता है, गुर्दा मसाना यानी किडनी या पेशाब की थैली या पित की थैली में पत्थर मौजूद है तो बड़े आसानी के साथ और बग़ैर किसी नुक़्सान और बिना किसी तक्लीफ के पथरी हमेशा के लिए ख़त्म होजाती है अब पथरी को ख़त्म करने का आसान रास्ता और बेहतरीन तरीक़ा ये है की सबसे पहले आप ताज़ा रिपोर्ट निकालो पत्थर की साइज़ क्या है इसके बाद **पत्थर चट्टा टैब्लेट** का इस्तेमाल शुरू करदो इस दवा को दो महीना तक इस्तेमाल करो उसके बाद फ़ौरन दूसरी रिपोर्ट निकाल कर दोनों रिपोर्ट को सामने रखकर देखो की सोनोग्राफी में पथरी की पोज़ीशन क्या है पथरी ख़त्म हो गई है या कुछ हिस्सा बाक़ी है अगर पथरी छोटी है तो दो महीना में मुकम्मल ख़त्म होजाती है और अगर पथरी की साइज़ बहुत बड़ी है और साथ में छोटी बड़ी बीस ऐम ऐम के साथ में और भी मुख़्तलिफ़ साइज़ का दो-चार पत्थर मौजूद है तो आपको दो मर्तबा सोनोग्राफी कराने से और दो महीना तक दवा को इस्तेमाल करने के बाद हक़ीक़त और सच्चाई का रास्ता मालूम हो जाएगा और आप अपने लिए बेहतरीन फ़ैसला और अपना फ़ायदा नुक़्सान अपने आपसे मालूम कर सकते हो अगर पथरी गुर्दा मसाना में है तो ये पथरी बड़े आसानी के साथ दो तीन महीना में हर तरह की पथरी ख़त्म होजाती है और अगर पथरी पित की थैली में है तो किडनी की पथरी से कुछ वक़्त ज़्यादा लगता है पत्थर पित की थैली में है या किडनी में पत्थर है दोनों जगह का पत्थर मुकम्मल ख़त्म होजाता है बस साइज़ के हिसाब से कम या ज़्यादा वक़्त लगता है लेकिन ख़त्म ज़रूर होता है, पित की थैली और किडनी या पेशाब की थैली का पत्थर ख़त्म करने का हमारा तरीक़ा इस्तेमाल करो पहले रिपोर्ट निकालो उसके बाद दवा को इस्तेमाल करो उसके बाद दुबारा रिपोर्ट निकाल कर बेहतरीन रास्ता की जानकारी हासिल करके अपनी और दूसरों की तक्लीफ ख़त्म करने का ज़रीया बन जाओ, **नेकी कर दरिया में डाल।**

किडनी में पथरी किस तरह से होती है

किडनी का काम है ख़ून की ग़लाज़त को साफ़ करके ख़ून के अंदर का पानी ग़लाज़त के साथ अलग कर के पानी पेशाब की थैली में डाल देना रहता है, जब ख़ून किडनी के अंदर दाख़िल होता है तो गुर्दा के गोश्त के रेशा के रास्ता से हो कर पानी पेशाब की थैली में चला जाता है, अब अगर ख़ून के अंदर ग़लाज़त बढ़ जाती है और गुर्दा के गोश्त के रेशा के रास्ता से हो कर बाहर की तरफ़ निकलते वक़्त गोश्त के रेशा में ख़ून की ग़लाज़त चिपक जाती है तो गुर्दा की और ख़ून की गर्मी से ठोस होने लगती है और किडनी के गोश्त के रेशा का ये रास्ता बंद होजाता है और पथरी का बीज तैयार होजाता है और किडनी चौबीस घंटा अपने अंदर से ख़ून को गुज़ारती है और पानी पेशाब की थैली में डालते रहती है अब किडनी के गोश्त के रेशा में फुंसी हुई ग़लाज़त के ऊपर धीरे धीरे ख़ून की ग़लाज़त जमा होते रहती है और अपने इर्द-गिर्द के रेशा को दबाती है और उसकी साइज़ बड़ी होते

रहती है और ख़ून की ग़लाज़त किडनी की गर्मी से ठोस होते रहती है उसी को पथरी का नाम दिया जाता है जब बहुत ठोस होजाती है तो उसकी चुभन से दर्द होता है और पत्थर होने का यक़ीन बढ़ जाता है और उल्टी मतली कमर में दर्द पेट में दर्द होने से रिपोर्ट निकालने के बाद पथरी और उसकी साइज़ का इलम होता है।

पित की थैली में पथरी किस तरह से होती है

पित की थैली यानी सफ़रा की थैली (पित) का जिस्म के अंदर क्या काम है पित यानी सफ़रा जिस्म को गर्म रखने वाली आग है इस आग के ज़रीया से गेज़ा से निकला हुआ रस यानी जूस को पकाने का काम करके जिस्म के हर आज़ा की गेज़ा तैयार करके ज़िंदगी के एहसास को काएम करता है और सफ़रा के कम या ज़्यादा होने से जवानी बुढ़ापा सेहत या बीमारी की शक्ल तैयार होती है और सफ़रा की थैली सिर्फ़ गोदाम यानी स्टोर करने की जगह है जो गेज़ा आप ज़बान और मुँह के रास्ता से मेदा में दाख़िल करते हैं इसके अंदर सफ़रा मौजूद रहता है अगर जिगर यानी लीवर की हिक्मत या इंजीनियरिंग के हिसाब से गेज़ा को पकाने के लिए जो आग यानी सफ़रा चाहीए ये सफ़रा अगर दाख़िल होने वाली गेज़ा के अंदर मौजूद है तो अब पित की थैली से सफ़रा ना बाहर आएगा और ना थैली में जाएगा बाहर बाहर से काम होजाता है और अगर ज़बान के ज़रीया से मेदा में दाख़िल होने वाली गेज़ा के अंदर ज़रूरत के हिसाब से ज़्यादा सफ़रा मौजूद है तो ये सफ़रा की थैली में जमा स्टोर होजाता है और अगर ज़बान मुँह के ज़रीया मेदा में दाख़िल होने वाली गेज़ा के अंदर सफ़रा बहुत मामूली मिक़दार में मौजूद है तो गेज़ा को पकाने के लिए अब लीवर यानी जिगर अपनी हिक्मत के हिसाब से गोदाम के अंदर का सफ़रा बाहर निकाल कर मेदा में दाख़िल करेगा और गेज़ा पकाने का काम मुकम्मल करेगा अब सवाल पैदा हो गया पथरी किस तरह से होती है ये बहुत बड़ी कहानी है उसका मुख़्तसर ये है की जो गेज़ा आप इस्तेमाल करते हो अगर इस गेज़ा में सफ़रा ज़रूरत के हिसाब से मौजूद है तो पित की थैली में किसी तरह की हलचल नहीं होती है तो पित की थैली में पड़ा हुआ सफ़रा के अंदर गाढ़ापन पैदा हो कर थैली में तलछट जमा हो कर ठोस होजाती है और कुछ लोगों के मेदा जिगर और पेट के अंदर की ख़राबी की वजह से ख़ून और सफ़रा दोनों के अंदर बहुत ज़्यादा ताफ़्फ़ुन और ग़लाज़त पैदा होजाती है इस लिए पित बहुत ज़्यादा गाढ़ा होजाता है और पित की थैली में तलछट जमा होजाती है और पित की गर्मी से ठोस होजाती है जब दर्द का एहसास होता है तो रिपोर्ट निकालने पर पत्थर की शक्ल ज़ाहिर होजाती है और बाज़ लोगों को दोनों जगह पथरी रहती है किडनी और पित की थैली में, ऐसे लोगों को पथरी ख़त्म होजाने के बाद एक दो डब्बा **इतरीफ़ल सरसरा** ज़रूर इस्तेमाल कर लेना चाहीए ताकि दुबारा पथरी की बीमारी से नजात मिल जाये और अपनी बीमारी ख़त्म होने के बाद बेहतरीन रास्ता जानकारी दूसरों को ज़रूर बताना चाहीए।

तरीक़ा इस्तेमाल

गुर्दा , मसाना , पेशाब की नली या पेशाब की थैली में पत्थर है तो दो दो टैब्लेट दो टाइम सादा पानी से इस्तेमाल करें यानी दो टैब्लेट सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और दो टैब्लेट शाम को खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें।

और अगर पित की थैली में पथरी है तो दो दो टैब्लेट तीन टाइम सादा पानी से इस्तेमाल

बवासीर ख़ूनी बादी ठोंठा मस्सा महेसी के इलाज का तरीक़ा

खूनी बादी मस्सा ठोंठा कीड़ी महेसी की बीमारी में इस दवा को इस्तेमाल करें मुकम्मल आराम होजाता है

रोगन पाइरिया | बरगीन टैब्लेट | बासीर टैब्लेट | जखमीनों टैब्लेट

खूनी बादी मस्सा ठोंठा वाली बवासीर की बीमारी में इस दवा को इस्तेमाल करें

फानूस तेल | बासीर टैब्लेट | जखमीनों टैब्लेट

बवासीर अक्सर दायमी कब्ज रहने से या अंतड़ियों में कद्दू दाना या कीड़ी जरासीम पड़ने से पहले खुजली या रेंगने जैसा महसूस होता है, इसके बाद अंतड़ियों के निचले हिस्सा में कीडियों का हुजूम बढ़ता है अंतड़ियों की दीवार चाटते चाटते अंतड़ियों की दीवार में सूजन पैदा होजाती है अंतड़ी का निचला हिस्सा ढीला और कमज़ोर हो कर कुछ हिस्सा बाहर आजाता है, कीड़ी की वजह से अंतड़ी में ख़ुशकी पैदा हो जाती है, संडास सख़्त होजाती है, अंतड़ी की अंदरूनी परत कमज़ोर पड़ने की वजह से ख़राश पैदा हो कर ख़ून की धारी ज़ाहिर होती है, इसके बाद धीरे धीरे ख़ून की मिक़दार बढ़ जाती है, ख़ूनी बवासीर यातो बहुत ज़्यादा जुलाब आवर दवाएं इस्तेमाल करने की वजह से या कीडियों की वजह से अंतड़ियों में कमज़ोरी ढीलापन पैदा हो कर दर्द और ज़ख़म दोनों की शुरूआत होजाती है, बाज़ लोगों को मक़अद(मलद्वार) के अंदरूनी तरफ़ गोटी की तरह फूल जाता है शदीद किस्म का दर्द जलन शुरू हो जाता है और बैठने में तक्लीफ होती है, बाज़ लोगों को मक़अद में सूजन कमज़ोरी ढीलापन पैदा हो कर मस्सा ठोंठा बाहर आजाता है, अगर मस्सा ठोंठा बाहर है तो उसे काटना नहीं चाहीए क्योंकि ये गंदी जगह का ज़ख़म है अगर कभी खुल गया तो सीधा भगंदर बन जाने का यक़ीन रहता है, इस मुख़्तसर से मज़मून में तीनों बवासीर की वजूहात बयान नहीं हो सकती है, हमारी इस दवा से बवासीर मुकम्मल ठीक हो जाती है, अगर सिर्फ ख़ूनी बवासीर है तो इस दवा से ख़ून का गिरना रुक जाता है, अगर ख़ून बहुत तेज़ी से जा रहा है तो पहले दस दिन तक दवा को तीन टाइम इस्तेमाल करें या दो टैब्लेट जखमीनो दो टैब्लेट बासीर सुबह खाली पेट और शाम को दो-दो टैब्लेट इस्तेमाल करने से दो तीन दिन में ख़ून का गिरना रुक जाता है और दस दिन में मुकम्मल आराम हो जाएगा और दो से तीन महीना तक इस्तेमाल करने से ख़ूनी बवासीर हमेशा के लिए ख़त्म होजाती है और अगर दवा की ताक़त बढ़ाना है तो

बासीर टैब्लेट और जखमीनो टैब्लेट के साथ बरगीन टैब्लेट का इज़ाफ़ा कर लेने से पेट के अंदर अंतड़ियों में जरासीम वाइरस कीड़ी का ख़ातमा होजाता है तो ख़ूनी बवासीर को दुबारा उभरने का चांस ख़त्म होजाता है और अगर ठोंठा मस्सा भी है तो फानूस तेल या रोग़न पायेरिया को कापूस में भिगा कर मस्सा ठोंठा के चारों तरफ़ लगाऐं और साथ में खाने वाली दवा को इस्तेमाल करें दो से तीन महीना में ठोंठा मस्सा सिकुड़ कर ख़त्म हो जाएगा और क़ुदरती हालत में आ जाएगा और अगर सिर्फ बादी बवासीर ठोंठा मस्सा के साथ है तो रोग़न पायेरिया या फानूस तेल के साथ बासीर टैब्लेट और जखमीनो टैब्लेट को इस्तेमाल करने से दो से तीन महीना के अंदर बीमारी मुकम्मल ख़त्म होजाती है और अगर बासीर टैब्लेट, जखमीनो टैब्लेट और बरगीन टैब्लेट ये तीन दवा को एक साथ में इस्तेमाल करते हो तो हर तरह की बवासीर भगंदर हरनीया अपेंडिस ख़त्म होजाती है और अगर गुर्दा मसाना लीवर मेदा में किसी भी तरह का सूजन इन्फ़ैक्शन है तो ये भी ख़त्म होजाता है इसी तीन दवा से जिस्म के किसी भी दूसरे आज़ा में सूजन ज़ख़म और जरासीम के असरात होंगे तो वो भी ख़त्म होजाते हैं, और अगर सिर्फ कोई एक ही बीमारी है तो इस दवा से किसी तरह का नुक़्सान नहीं है, ये क़ुदरती जड़ी बोटियों का ख़ज़ाना है, सेहत को बेहतर बनाने में और बीमारी को ख़त्म करने का मददगार तोहफ़ा है, जिस्म के अंदरूनी आज़ा में सूजन या ज़ख़म या जरासीम से हर बीमारी को पैदा होनेकी शुरूआत होती है, जब तीनों सिफ़त एक साथ मिल जाती है तब बड़ी बड़ी बीमारीयों का वजूद ज़ाहिर होना शुरू होता है, जिस्म की आधी बीमारी सूजन, ज़ख़म, जरासीम से पैदा होती है, जिस्म के अंदरूनी आज़ा को सूजन ज़ख़म जरासीम से बचा लेते हो तो बड़ी बीमारीयों के वजूद को ज़ाहिर होने से पहले हिफ़ाज़त के साथ ख़ातमा हो चुका रहता है, ये दवा ख़ास क़ुदरती जड़ी बूटी होने की वजह से किसी तरह का नुकसान नहीं होता है और ये दवा सभी बीमारीयों को ख़त्म करने में काएमी मदद करती है।

तरीक़ा इस्तेमाल

सभी दवाओं के खाने का तरीक़ा सुबह खाली पेट एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को खाना खाने से एक दो घंटा पहले एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और तेल को साफ़ कापुस या कपड़े में भिगा कर मस्सा या ठोंठे की जगह पर लगाऐं और रोज़ नया साफ़ कापूस या कपड़ा इस्तेमाल करें, अगर दवा की ताक़त बढ़ाकर तेज़ी से फ़ायदा हासिल करना है तो सुबह दोपहर शाम तीन टाइम दवा को इस्तेमाल करें, अगर बहुत तेज़ी से ख़ून जारी है तो तीन टाइम इस्तेमाल करना ज़्यादा बेहतर है और अगर ये चार चीज़ से परहेज़ करें तो बहुत ज़्यादा बेहतर होगा, बड़े का गोश्त, मछली, बैंगन, कद्दू से परहेज़ करें बेहतर होगा।

चेहरे पर दाना कील मुंहासा या पूरे जिस्म पर फोड़ा फुंसी निकलने की वजूहात और उसको ख़त्म करने का तरीक़ा इलाज

चहरे पर दाना कील मुहासा या पूरे जिस्म पर फोड़ा फुंसी निकालने की बीमारी है तो इस दवा को इस्तेमाल करें मिकम्मल होजाएगा

इतरीफल सरसरा

मगज़ीन टैब्लेट

दवा की ताक़त बढ़ाने के लिए इस दवा का इज़ाफ़ा करने से दवा का असर बहोत तेज़ होजाता है और जलदी से मुकम्मल ठीक होने में मदद मिलती है

बरगीन टैब्लेट

नौजवान लड़का लड़की हो या उमरदराज़ मर्द औरत के चेहरे पर दाना कील मुंहासा निकल रहा है या जिस्म के किसी दूसरे हिस्सा पर फोड़ा फुंसी दाना निकल रहा है तो उसका मतलब है की आपके लुआबी मिट्टी के ख़मीर में लुआब को फ़ासिद ख़राब कर देने वाली गाढ़ी बदबूदार सड़न पैदा करने वाली ग़लीज़ रियाह हवा दाख़िल हो गई है और लुआब के अंदर मौजूद है अगर इस ग़लीज़ रियाह के अंदर कमज़ोर हालत है तो सिर्फ खुलिया का लुआब फ़ासिद हो कर दाना की शक्ल में ज़ाहिर होगा और इस दाना के अंदर से पंछा पानी की शक्ल का लुआब ख़ारिज होगा और अगर लुआब के अंदर की हवा में सड़न पैदा करने की ख़ासीयत मौजूद है तो ये ग़लीज़ हवा लुआबी गोश्त के कमज़ोर रेशा खुलिया को खा जाती है या उस जगह पर जरासीम वाइरस पैदा कर देती है और कुछ जगह पर ये वाइरस जरासीम अपने इर्दगिर्द के रेशा खुलिया में फफूंद पैदा कर के अपनी गेज़ा हासिल करती है और अपनी ताक़त को बढ़ा लेते हैं तो ये अपने वजूद को बड़ा करने में कामयाब होजाते हैं तो इस जगह फफूंद का दायरा बड़ा होजाता है तो ये फोड़ा की शक्ल में ज़ाहिर होता है और अगर ये कमज़ोर हालत में है तो दाना की शक्ल में और अगर अभी पंछादार दाना निकल रहा है तो ये सिर्फ़ दाना नहीं है और ना तो ये गर्मी दाना है ये दाना अगर सिर्फ गर्मी के मौसम में निकल रहा है तो भी ये गर्मी का दाना समझ कर बेफ़िकर नहीं होना चाहीए, इस गर्मी दाना से अपनी फ़िक्र को तेज़ करलो और खाने वाली दवा से इस बीमारी का इलाज करो, ये अलामत है की आपके लुआबी मिट्टी के ख़मीर में बड़ी बड़ी बीमारीयों को पैदा करने वाला ताफ़्फ़ुन ख़राबी मौजूद है, जब आपके सफ़रा यानी जिस्म की आग में ताफ़्फ़ुन पैदा हो जाएगा तो बस बीमारीयों का नाम गिनते रहना और जब चेहरे पर दाना मुंहासा निकल रहा हो तो अगर चेहरे पर दाना इस तरह का है की इस में पंछा है और फोड़ने पर फूट जाता है और इसमें से पंछा निकल कर साफ़ होजाता है और दूसरी तीसरी जगह पर इसी शक्ल का दाना थोड़ा दिन के बाद दुबारा ज़ाहिर होजाता है और जिस्म के किसी दूसरे हिस्सा में इस तरह का दाना मौजूद नहीं है ये दाना सिर्फ़ चेहरे पर निकलता है और ख़त्म होते रहता है और निकलते रहता है उसका मतलब है अभी लुआबी ख़मीर के अंदर बीमारी बहुत कमज़ोर हालत में मौजूद है और ये अलामत लड़का लड़की दोनों के चेहरे पर शुरूआती अलामत है ये बीमारी जब ताक़तवर हालत में पहूंच जाती है तो लड़कों के चेहरे पर मुंहासा की शक्ल में ज़ाहिर होगी,

मुंहासा उस दाना को बोलते हैं की जब दाना को दबाने पर दही दूध की शक्ल का मवाद पिच पिचा कर बाहर की तरफ़ निकलने लगे जिस तरह ट्यूब को दबाने पर क्रीम निकलती है, ये मुंहासा सिर्फ़ लड़कों को और मर्द को निकलता है लेकिन ये मुंहासा अगर किसी लड़की के चेहरे पर निकलने लगता है जिस शक्ल में लड़कों का मुंहासा होता है तो ये बहुत ज़्यादा ख़राबी की अलामत है क्यों की मर्दों के लुआबी ख़मीर में कीटाणु पैदा करने की ख़ासीयत होती है और लड़की के लुआबी ख़मीर की मिट्टी में अंडा पैदा करने की ख़ासीयत होती है इस लिए लड़कों को मुंहासा ऐसी हालत में निकलता है जब उनके लुआबी ख़मीर की मिट्टी में बीमारी की ताक़त इतना ज़्यादा बढ़ जाये की लुआबी शक्ल का कीड़ा पैदा करने की सिफ़त मौजूद हो और लुआबी गोश्त के रेशा की शक्ल का कीड़ा उसके दाँत के मसूड़ा में मौजूद है तो ऐसे लड़कों के गाल पर चेहरे के दूसरे हिस्सा में या पूरे चेहरा पेशानी गाल पर कान नाक पर कुछ मुंहासा जिस्म के दूसरे हिस्सा में मौजूद होगा अब ये मुंहासा अलग अलग लोगों में बीमारी के कम ज़्यादा और बहुत ज़्यादा होने के हिसाब से बीमारी की शक्ल में मुंहासा निकलता है लेकिन मुंहासा की बीमारी अलामत सब एक है अगर सिर्फ गाल पर मौजूद है तो उसका मतलब है दो महीना के इलाज से बीमारी ख़त्म हो जाएगी और अगर बहुत ज़्यादा मुंहासा है तो दो महीना में फ़ायदा ज़ाहिर होगा ख़त्म होने में ज़्यादा वक़्त जाएगा, और अगर लड़की के गाल पर या पूरे चेहरे पर लड़कों की तरह मुंहासा निकलता है और इस मुंहासा को दबाने पर दही दूध की शक्ल में करीम के ट्यूब की तरह पिच पिचा कर निकलता है तो ये अलामत लड़की के चेहरा पर होना कई तरह की दूसरी बड़ी बीमारीयों के होने या होजाने की अलामत है क्यों की मर्द के लुआबी ख़मीर की मिट्टी में कीटाणु पैदा करने की ख़ासीयत होती है और औरत के लुआबी ख़मीर की मिट्टी में अंडा पैदा करने की ख़ासीयत मौजूद है इस लिए लड़की हो या औरत उसको जब दाना कील मुंहासा निकलेगा तो अंडा की तरह फूटकर पानी की तरह साफ़ हो जाएगा और अगर लड़की का दाना मुंहासा लड़कों की तरह का हो गया है तो ऐसी लड़की का जिस्म मर्दाना सिफ़त के क़रीब हो गया है अब ऐसी लड़की को गाँठ गिलटी पैदा होना हैज़ की तर्तीब ख़राब होजाना हाथ पैर और चेहरे पर बाल निकलना ये सब बहुत आसान हो जाता है ऐसी बीमारी बड़े आसानी से वजूद में आजाती है, अब दाना कील मुंहासा को ख़त्म करने का इलाज बता रहा हूँ पहली दवा है **इतरीफ़ल सरसरा** ये दवा पेट के अंदर पैदा होने वाली हर तरह की बीमारी को ख़त्म करता है और पेट के अंदर का हवा पानी और जिस्म के अंदर का फैला हुआ हवा पानी का ताफ़्फ़ुन और ग़लाज़त को साफ़ करके बाहर की तरफ़ ख़ारिज करने में मदद करता है दूसरी दवा का नाम है **बरगीन टैब्लेट** ये टैब्लेट हर तरह की जरासीम वाइरस फफूंद को और लुआबी कीड़ी को ख़त्म करने में मदद करता है अब अगर मरीज़ पहले से बलग़मी बीमारी में मुबतला था या है जैसे सर्दी खांसी नज़ला ज़ुकाम या बलग़मी चीकट संडास के साथ माद्दाए मन्वियह ख़ारिज हो रहा है और बलग़मी बीमारी जरासीम वाइरस के साथ मौजूद है तो मगज़ीन टैब्लेट का इज़ाफ़ा करने से बड़े तेज़ी के साथ पूरे जिस्म की हर आज़ा के अंदर से और पूरे चेहरा गाल के ऊपर दाना कील मुंहासा ख़त्म करने में मदद करती है अगर आप खाने वाली दवा से पेट के रास्ता से बीमारी को ख़त्म करने की कोशिश करते हो तो आपको दूसरी कई तरह की बीमारीयों से छुटकारा पाने में मदद मिल जाएगी और आपकी खाई हुई गेज़ा से आपके जिस्म को पूरा फ़ायदा हासिल होगा आपकी हड्डी नस मज़बूत होगी और अगर आपके जिस्म के किसी हिस्सा

में जरासीम वाइरस या कीड़ी मौजूद है तो उसका नुक़्सान पूरे जिस्म को होता है, अब हम मरीज़ों के इलाज करने के दरमयान जो तजुर्बा और हिक्मत को अपना कर मुकम्मल फ़ायदा पहुँचाया हूँ वो याददाश्त बताने जा रहा हूँ की फोड़ा फुंसी चेहरे पर दाना मुंहासा निकलना आम बात है अगर चेहरे पर दाना मुंहासा या फोड़ा फुंसी निकलता है तो ये ख़ून की ख़राबी से नहीं होता है अगर चेहरे पर फोड़ा फुंसी मुँहासा दाना निकलता है तो ये अलामत है की पेट के ज़रीया से लुआब के अंदर ग़लाज़त और ताफ़्फ़ुन शामिल हो कर चेहरे पर नमूदार हुए हैं क्यों की पेट के अंदर की कैफ़ीयत का एहसास सबसे पहले चेहरे पर ज़ाहिर होता है, इन्सान का चेहरा लुआबी गोश्त का मर्कज़ है गले से ऊपर के हिस्सा में लुआबी गोश्त होता है उसकी नसों में ख़ून होता है लुआबी गोश्त के रेशा खुलिया में सिर्फ लुआब होता है इसलिए ऐसे लोगों को बलग़मी बीमारी जल्दी जल्दी होते रहती है, सर्दी ज़ुकाम नज़ला बुख़ार और ख़ासकर जिन्सी बीमारी में या तो हर वक्त मुबतला रहते हैं या जल्दी जल्दी कोई ना कोई शक्ल में जिन्सी बीमारी का दौर चलते रहता है ऐसे लोग हस्सास डरपोक बुज़दिल बहुत ज़्यादा होते हैं, इसकी वजह ये होती है की उनके अंदर कीड़ी का ख़ासकर और जरासीम वाइरस आम तौर से होता है ये लड़का हो या लड़की हो ये बेचारे अपने आप में नहीं होते हैं, ऐसे लोगों का रूह और नफ़्स अपने आप में परेशान रहता है इस लिए चिड़चिड़ापन बहुत ज़्यादा रहता है जिस्म के अंदर लुआबी पैदावार नौजवानी में ज़्यादा होती है इस लिए किसी बहुत बड़ी बीमारी में मुबतला नहीं होते हैं लेकिन परेशान हमेशा रहते हैं जैसे कोई अंजाना ख़ौफ़ मुसलसल रहता हो, अब अगर बीमारी लुआबी आज़ा पर है और ख़राबी लुआब के अंदर है तो ख़ून साफ़ करने वाली दवा से इलाज करना क्या होगा हिक्मत या कुछ और (----) क्यों की ख़ून के अंदर की ग़लाज़त को चौबीस घंटा गुर्दा यानी किडनी ख़ून की ग़लाज़त को साफ़ करके पानी पेशाब की थैली में डाल देती है और वापिस पेट के रास्ता से ख़ून में पानी आजाता है यानी आपको ख़ून साफ़ करने की ज़रूरत नहीं ख़ून को हर वक्त साफ़ करने का निज़ाम जिस्म के अंदर मौजूद है और ख़ून के अंदर सफ़रा यानी पित बड़ी मिक़दार में होता है और पित की वजह से ख़ून के अंदर सुरख़ी पाई जाती है यानी ख़ून लाल इसलिए होता है की इस में सफ़रा बड़ी मिक़दार में होता है, अगर ख़ून में कमज़ोर फफूंद या ज़हरीला माद्दा आजाता है तो सफ़रा उसको जलाकर कमज़ोर कर देता है और इस माद्दा की जली हुई बाक़ियात पेशाब के रास्ते से बाहर निकल जाती है और अगर कोई ऐसी फफूंद या कोई इस तरह का ज़हरीला माद्दा ख़ून में शामिल हुआ है जो सफ़रा के साथ मिलने पर इस ज़हरीला माद्दा या फफूंद की ताक़त को बढ़ा दे तो जिस्म की हर आज़ा में तनाव बेचैनी दर्द का एहसास बढ़ जाता है और जब तक ख़ून के अंदर का ये ज़हरीला माद्दा बाहर निकल नहीं जाता है तब तक आपको सुकून के साथ आम हालत में रहने नहीं देता है क्यों की ख़ून दिल के अंदर से होते हुए पूरे जिस्म की हर आज़ा की नसों में और सुर्ख़ गोश्त के रेशा में गर्दिश करते रहता है चौबीस घंटा दिल ख़ून को अपने अंदर से गुज़ारते हुए इस ख़ून को पम्प करके पूरे जिस्म की हर आज़ा को ज़िंदगी और ज़िंदा रहने का एहसास देता है और जिस्म को मुर्दा होने से बचाता है इस लिए अगर ख़ून के अंदर मामूली सी ख़राबी पैदा होती है तो फ़ौरन पूरे जिस्म की हर आज़ा को इस ख़ून की ख़राबी का एहसास होता है और बेचैनी बढ़ जाती है दर्द बुख़ार कमज़ोरी का एहसास ज़ाहिर होजाता है आपके अंदर उस वक़्त राहत महसूस होगी जब आपका ख़ून हर तरह की ग़लाज़त और फफूंद और ज़हरीले माद्दा से पाक साफ़ हो जाएगा इस लिए हमने चेहरे पर

दाना कील मुंहासा निकलने के बाद ख़ून साफ़ करने वाली हिक्मत और इस थियूरी को सरासर ग़लत मान कर अपनी हिक्मत से इलाज किया है, लुआबी ख़मीर का माद्दा बड़ी मिक़दार में गले और गर्दन के ऊपरी हिस्सा में इस्तेमाल होता है गले के अंदर मुँह के अंदर गाल में मसूड़ों में दिमाग के अंदर लुआबी ख़मीर की मिट्टी का माद्दा रहता है लेकिन लुआब का मुआमला ख़ून की इस कैफ़ीयत से अलग होता है अगर लुआब के अंदर गाढ़ी रियाह लुआब को फ़ासिद कर देगी या सूजन वरम पैदा कर देगी और अगर किसी लुआबी गोश्त के खुलिया पर अपना असर बना लेती है तो यहां के रेशा को खा जाती है और इस तरह से लुआबी रेशा में जरासीम या वाइरस या कीड़े पैदा कर देती है, ये सब कुछ होजाने के बाद भी आपके अंदर किसी तरह का तनाव पैदा नहीं होगा यानी आपके जिस्म के अंदर नुक़्सान पहूँचाने वाली कीड़े और जरासीम पैदा हो गई है फिर भी आप आम हालत में आम ज़िंदगी जी रहे हो जब तक ये कीड़ी और जरासीम बहुत बड़ा नुक़्सान करलेती है तब जाकर कोई अलामत ज़ाहिर होगी और आप उसका इलाज करोगे वर्ना ये जिस्म के अंदर लुआबी गोंद का ठोस करने वाला माद्दा हज़म करते रहती है और हडडी और लुआबी आज़ा कमज़ोर होते रहते हैं और अगर ये जरासीम या कीड़ी फोड़ा फुंसी दाना की शक्ल में बाहर निकल जाती है और अगर आपको दाना फुंसी फोड़ा निकल रहा है तो ये आपकी सेहत के लिए बेहतर इस लिए है की ये जिस्म के अंदर रह कर कोई बहुत बड़ी बीमारी पैदा करने से पहले बाहर आगया है और एक अलामत आपको मिल गई है की आपके लुआबी आज़ा के अंदर ख़राबी मौजूद है उसका इलाज करके जिस्म को पाक साफ़ करलो और ये भी एक अलामत है की अगर आपके अंदर बहुत ज़्यादा फ़ासिद बलग़म निकल रहा है यानी की खांसी बलग़म या नज़ला ज़ुकाम बार-बार हो रहा है और जल्दी जल्दी हो रहा है और बहुत ज़्यादा बलग़म ख़ारिज हो रहा है तो इस तरह का बलग़म खांसी की दवा से सिर्फ आपको राहत और आराम मिल जाएगा लेकिन मर्ज़ बीमारी मुकम्मल ख़त्म नहीं होगी इसका असल सबब है लुआबी आज़ा के अंदर लुआब को फ़ासिद करने वाला माद्दा मौजूद है इसलिए उसका इलाज करना ज़रूरी है, लुआबी ख़मीर की मिट्टी में पैदा होने वाली हर तरह की छोटी बड़ी बीमारी का इलाज इस दवा से कर के फ़ायदा पहुँचाया हूँ ये दोनों टैब्लेट **बरगीन टैब्लेट** और **मगज़ीन टैब्लेट** इस दोनों टैब्लेट के ज़रीया से लुआबी ख़मीर की मिट्टी में पैदा होने वाली हर तरह की जरासीम वाइरस फफूंद और कीड़ी वाली हर तरह की छोटी बड़ी बीमारीयों को ख़त्म करके कामयाबी हासिल किया हूँ और इस दवा को कुछ बीमारीयों में इस लिए इस्तेमाल कर देता हूँ की अगर जरासीम वाइरस होगा तो ख़त्म हो जाएगा और ये दवा किसी तरह का कोई नुक़्सान नहीं पहुँचाती है ये सिर्फ़ और सिर्फ ख़ास जड़ी बूटी से बनाया हुआ टैब्लेट है उसको एहतियात के तौर पर बेज़रूरत हफ़्ता पंद्रह दिन तक खालेनेसे जरासीमी बीमारी का ख़तरा ख़त्म होजाता है क्यों की सत्तर अस्सी फ़ीसद बीमारी की बुनियादी शुरूआत जरासीम वाइरस फफूंद या कीड़ी से होती है और तीसरी दवा का नाम है **इतरीफ़ल सरसरा** ये दवा हर तरह की पेट के ज़रीया पैदा होने वाली बीमारी को रोकने और ख़त्म करने में मदद करती है।

दवा को इस्तेमाल करने का तरीक़ा

एक एक टैब्लेट और आधा चम्मच **इतरीफ़ल सरसरा** सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और शाम के वक़्त खाना खाने से पहले एक एक टैब्लेट आधा चम्मच **इतरीफ़ल सरसरा** सादा पानी से इस्तेमाल करें, कोई परहेज़ नहीं है।

सरअते अंज़ाल, जिरयान, एहतेलाम की बीमारी को ख़त्म करने का तरीक़ा इलाज

अगर आप इस बीमारी की तकलीफों से परेशान हैं तो आज़माईश के लिए सिर्फ एक बार इस दवा को इस्तिमाल करें अगर ये दवा आपका एतिमाद और भरोसा बढ़ाती है तो आपको अपनी सेहत का रास्ता तलाश करने में आसानी होगी।

एहतेलाम, जिरयान, धात, मानी, मज़ी, वदी, सरअते अंज़ाल, रुकावट की बीमारी खतम करने केलिए इस दवा को इस्तेमाल करने से मुकम्मल ठीक होजाने में मदद मिलती है।

हरीसा बूटी टैब्लेट

सरअते अंज़ाल की बीमारी खतम करने केलिए काएमी कुदरती रुकावट पैदा करने के लिए इस दवा को इस्तेमाल करने से इस बीमारी का मुकम्मल खात्मा होता है।

हरीसा बूटी टैब्लेट

शबाबे कलबिया माजून

सबसे पहले आपको ये जानना ज़रूरी है की इन्सानी जिस्म के अंदर चार चीज़ों की ज़रूरत होती है और इसी चार सामग्री की कमी ज़्यादती से इन्सान के अंदर सेहत बीमारी बचपन जवानी नौजवानी बुढ़ापा की शक्ल में ज़ाहिर होता है ये चारों सामग्री हैं आग उसको सफ़रा बोलते हैं ये बहुत अहम जुज़ है नौजवान और सेहत की हालत में रखने के लिए और दूसरी तीसरी सामग्री है पानी और हवा यही दोनों सामग्री बीमारी और सेहत में बहुत अहम किरदार अदा करते हैं और ये तीन सामग्री मिलकर आपकी खाई हुई गेज़ा जो मिट्टी के ज़रीया पैदा होने वाली मिट्टी को लुआबी ख़मीर बनाने में बहुत अहम रोल अदा करते हैं ज़मीन के ज़रीया पैदा होने वाली आपकी गेज़ा मिट्टी है इस गेज़ाई मिट्टी को लुआबी ख़मीर बनाने में आग हवा पानी ये तीनों का अहम काम होता है।

एहतेलाम, जिरयान, मज़ी, मनी इसके निकलने की बहुत सी वजूहात होती है, उसको मुख़्तसर में बयान नहीं किया जा सकता लेकिन कुछ आम हालतें ये होती हैं की गुदूदे मन्वियह ढीला होजाता है जिस दर्जे का ढीलापन होगा उसी दर्जा का एहतेलाम

जिरयान होगा, अगर ढीलापन बहुत ज़्यादा बढ़ गया तो एहतेलाम याद नहीं रहता या पता नहीं चलता, एहतेलाम जिरयान का असल मर्कज़ दिमाग होता है, दिमाग के अंदर जिन्सी आज़ा का कुछ हिस्सा होता है और इस हिस्सा के खुलिया का मुतहर्रिक होना ठीक है लेकिन खुलिया हद से ज़्यादा हस्सास होजाता है तो जिन्सी आज़ा में हर वक्त मुतहर्रिक रहने की कैफ़ीयत बनी रहती है और जो लज़्ज़त छूने और करने से होनी चाहीए वो एहसास किसी तरह की हरकत के बग़ैर होता रहता है, ऐसे मरीज़ का जिन्सी आज़ा पर क़ाबू कंट्रोल ख़त्म होजाता है, ऐसे मरीज़ों का जिन्सी और जिस्मानी आज़ा बग़ैर लगाम का घोड़ा बन जाता है, अगर इस बीमारी का सही इलाज नहीं हुआ तो जिस्मानी आज़ा कई तरह की मुख़्तलिफ़ बीमारीयों में मुबतला होजाते हैं, जिस्मानी आज़ा में कमज़ोरी पैदा होना शुरू होजाती है जिसकी अलामत है पेशानी की खाल में स्याही और चमड़ा पतला होना शुरू होता है, हड्डियां पतली होजाती हैं, अगर नौजवान में ये कैफ़ीयत है तो उसकी हड्डीयों में पतलापन पैदा होजाता है और हड्डीयों का ठोसपन ख़त्म हो कर हड्डी नरम होजाती है, ताक़त मौजूद होगी नौजवानी की गर्मी की रवानी से लेकिन इसके अंदर ख़ौफ़ज़दा कैफ़ीयत, अकेलापन, तन्हाई में रहना, भीड़भाड़ से कराहत महसूस होना, भूलने की बीमारी, याद्दाश्त और दिमाग कमज़ोर होने लगता है, पढ़ने लिखने से कराहत महसूस होती है, एहसासे कमतरी पैदा होजाती है अपने आपको कमज़ोर डरा हुआ महसूस करता है, हर चीज़ से ख़ौफ़ज़दा रहता है ऐसे लोग या तो नशा के आदी बन जाते हैं या तो इंतक़ामी ज़हेन के मरीज़ होजाते हैं, भूक में कमी या खाने से बेर्गुबती पैदा होजाती है, ऐसे लोगों की खाल से अंदाज़ा करना बहुत आसान होता है, नौजवानी में खाल चमकती है और जब मर्ज़ होजाता है तो बेरौनक और खुरदरी या ढीली यानी अपनी उम्र से बीस साल आगे की कैफ़ीयत पैदा होजाती है, इसके नुक़्सानात इतने ज़्यादा हैं की आने वाली किताब में बयान किया जाएगा, जो अलामत धात गिरने, एहतेलाम, जिरयान, मनी या मज़ी की शदीद बीमारी की कैफ़ीयत में ज़ाहिर होती है वही अलामत मुश्तज़नी करने वाले मरीज़ की भी है यानी मनी बीमारी से बाहर निकले या हाथ से बाहर निकाली जाये कमज़ोरी और मुख़्तलिफ़ किस्म के नुक़्सानात दोनों में होते हैं, अगर एहतेलाम, जिरयान, मनी की शिकायत शादीशुदा इन्सान को है तो ये बहुत ज़्यादा नुक़्सान और आने वाले ख़तरा की अलामत है, ऐसे मर्ज़ की पहली ख़राबी ये है की उसकी रुकावट टाइमिंग ख़त्म होजाती है, आज़ाए तनासुल में ढीलापन पैदा होजाता है, अगर अभी नहीं है तो आगे जाकर मुकम्मल नामर्दी यक़ीनी हो जाएगी क्योंकि हड्डीयों और नसों में कमज़ोरी पैदा होना यक़ीनी है और कई बड़ी बीमारीयों को दावत में आना है क्योंकि जिस्मानी आज़ा जो लुआब पैदा करते हैं इसका कुछ हिस्सा ज़ाए होजाता है यानी एहतेलाम जिरयान के ज़रीया ख़राब होजाता है, और लुआब के अंदर से गर्मी ख़त्म होने लगती है और नसों में ढीलापन पैदा होना शुरू होजाता है, इस तरह जिस्मानी सेहत का ज़वाल शुरू

होजाता है यानी इसका इलाज बहुत ज़रूरी होता है, इलाज इस तरह होना चाहीए कि हर तरह की ताक़त भी बढ़ जाये और जिस्मानी सेहत में काएमी इज़ाफ़ा करने की ख़ासीयत मौजूद हो, **सलाम फार्मेसी कंपनी** के तोहफ़ा की आज़माईश ज़रूर करना चाहीए **हरीसा बूटी टैब्लेट** के अंदर बेहतरीन ख़ासीयत ये है की ये अपने असरात को ख़त्म नहीं करता है धात जिरयान मनी वदी मज़ी एहतेलाम जोश रूकावट की बीमारी को हमेशा के लिए ख़त्म करने में मदद करता है जब तक ख़राबी का जुगाड़ ना पैदा हो जाए **हरीसा बूटी टैब्लेट** माद्दाए मन्वियह मनी को गाढ़ा करने में बेमिसाल सिफ़त रखता है अगर इस टैब्लेट को दो से तीन महीना तक मुसलसल इस्तेमाल कर लिया जाये तो लुआबी ख़मीर की मिट्टी से पैदा होने वाली बीमारीयों से छुटकारा मिल जाता है अब अगर गुदूदे मन्वियह की ताक़त को बढ़ाना है तो **हरीसा बूटी टैब्लेट** के साथ **माजून अम्बरी ख़ास** का इज़ाफ़ा कर लेने से गुदूदे मन्वियह के अंदर उसके रेशा खुलिया में ताक़त के साथ मज़बूती पैदा होजाती है और मर्दाना ताक़त का जोश रूकावट काएम होजाता है अब अगर मुसलसल हमबिस्तरी करने से माद्दाए मन्वियह में कमी पैदा हो रही है और लुआबी ख़मीर की मिट्टी का हिस्सा घट रहा है लुआब की कमी से मर्दाना ताक़त की ख़ाहिशात में कमज़ोरी पैदा हो रही है या हो गई है तो **माजून याक़ूत मुक़व्वी ख़ास** का इज़ाफ़ा करलें अगर ये तीन दवा को एक साथ में इस्तेमाल करते होतो हर तरह का जोश रूकावट कमज़ोरी ख़त्म होजाती है और जोश रूकावट की बीमारी हमेशा के लिए ख़त्म करने में मदद करती है ये तीन दवा की ज़रूरत हर वक्त काम आती है क्यों की अक्सरीयत में लोग टाइम पास दवा को इस्तेमाल करके अपने आपको टाइम पास बना लेते हैं ऐसे मरीज़ जिसको महीनों तक औरत की ख्वाहिश पैदा नहीं होती है या औरत को देखने छूने के बाद भी एहसास नहीं होता है और अगर एहसास होता भी है तो औरत को इस्तेमाल करने से पहले ही मनी ख़ारिज होने लगती है और मुसलसल ख़ारिज हो कर सिकुड़ जाता है या औरत को इस्तेमाल करते ही फ़ौरन मनी ख़ारिज होजाती है तो ऐसे मरीज़ों को ये तीन दवा को एक साथ इस्तेमाल करने से ये सारी बीमारी एक साथ मौजूद हो या कोई एक ही तरह की ख़राबी मौजूद है तो ये बीमारी मुकम्मल ख़त्म होजाती है और मर्दाना सेहत काएम होजाती है इस दवा को आप पंद्रह दिन इस्तेमाल करके इस दवा की ताक़त का अंदाज़ा करके कम से कम दो तीन महीना इस्तेमाल करने से बीमारी को हमेशा के लिए ख़त्म करने में मदद मिलती है और अगर किसी मरीज़ को बहुत ज़्यादा स्पैशल करना है तो इसके साथ में **माजून शबाबे कलबिया** का इज़ाफ़ा कर सकते हो, **भरोसा कंपनी का होता है दवाई का नहीं,** इस दवा की आज़माईश ज़रूर करें।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें, इसी तरह शाम को भी खाना खाने से एक या दो घंटा पहले दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें।

मर्दाना कमज़ोरी या मुकम्मल नामर्दी के इलाज का तरीक़ा

मर्दाना कमज़ोरी या मुकम्मल नामर्दी की बीमारी खतम करना है तो इस दवा से ईलाज शुरू करें ये दवा नामर्दी का मर्ज हमेशा के लिए खतम करने में मदद करती है।

मुरगाबी तेल

हरीसा बूटी टैब्लेट

याकूत मुकव्वी खास माजून

दवा की ताक़त को बढ़ाने के लिए इस दवा **अम्बरी खास** का इज़ाफ़ा करने से ईलाज स्पेशल होजाता है

अम्बरी खास माजून

नस बूढ़ी नहीं होती इस लिए मर्द बूढ़ा नहीं होता

इस मुख़्तसर मज़मून को पढ़ो उसके बाद इतमीनान से सोचो समझो अगर आपके फ़ैसला करने की सलाहीयत इजाज़त देती है तो एक बार इस दवा की आज़माईश करने के बाद जिन्सी बीमारीयों से मायूसी ख़त्म हो जाएगी और जिन्सी आज़ा को बेहतरीन सेहत और ठोस ताक़त देने वाली दवा का इलम और मालूमात ख़ुशहाल अज़दवाजी ज़िंदगी को ख़ूबसूरत बनाने में मदद करती है।

अगर सिर्फ मर्दाना कमज़ोरी है, आज़ाए तनासुल में मुकम्मल सख़्ती तनाव नहीं हो रहा है और आज़ाए तनासुल में किसी वजह से या ग़लत रास्ता पकड़ने से ख़राबी आगई है तो ये बीमारी मुकम्मल ठीक होजाती है, हैज़ की हालत में औरत से हमबिस्तरी करलिए हो या मुखन्नस से जुफ़्ती करलिए हो या मुश्तज़नी करके आज़ाए तनासुल की नसों को ख़राब कर लिया हो और मुश्तज़नी करने से कुछ नसों में कमज़ोरी आती है और कुछ नस चिपक कर बंद होजाती है और कुछ नस मुर्दा हो कर ख़ुशक होजाती है और बाज़ लोगों की नसों में बहुत ज़्यादा कमज़ोरी पैदा हो कर नस सिकुड़ जाती है उसी लिए आज़ाए तनासुल सिकुड़कर छोटा पतला कमज़ोर होजाता है और हैज़ वाली औरत या मुखन्नस से जुफ़्ती करने पर आज़ाए तनासुल की नस में मुकम्मल ख़ुशकी पैदा होजाती है और कुछ लोगों का इतना मुर्दा और कमज़ोर हो जाता है की ठीक होने में काफ़ी वक़्त लगता है कुछ लोगों की नसों में इतनी ख़ुशकी पैदा हो जाती है कि नसों के ज़र्रात के बीच में लुआब का गोंद ख़त्म होजाता है और नसों की दीवार पतली होने का शुरूआती दौर में इस तरह शुरूआत होती है की तनाव के वक़्त आगे पीछे से फूलना शुरू होजाता है बीच का हिस्सा बड़ी मुश्किल से फूलता है लेकिन मुकम्मल तनाव नहीं होता है ऐसी ख़राबी की अलामत अपने कमज़ोर होने को ज़ाहिर करता है, अगर हम ने मुकम्मल ख़राबियों की अलामत को बयान नहीं किया है तो अगर मरीज़ की अलामत में कुछ फ़र्क़

है तो उसका कुछ दूसरा मतलब और किसी दूसरी तरह की ख़राबी नहीं है शुरूआत किसी भी तरह की अलामत के साथ हो अंजाम मुकम्मल नामर्दी पर ही ख़त्म होता है, बस फ़र्क़ ये रहता है गेज़ा के हालात और ख़ुशी ग़म से ताक़त और कमज़ोरी पर असर होता है, किसी की बीमारी धीरे धीरे आती है और किसी की बड़ी तेज़ रफ़्तार से बुरे अंजाम तक पहूंच जाती है, अगर सिर्फ आज़ाए तनासुल में कमज़ोरी है तो उसका किफ़ाईती इलाज है सिर्फ **मुर्ग़ाबी तेल** इस्तेमाल करलें बाहर का हिस्सा आज़ाए तनासुल की बंद और मुर्दा नस सिकुड़ी हुई कमज़ोर बेजान नसों में ताक़त पैदा करके क़ुदरती हालत पर लाने में मदद करता है, इस तेल के इस्तेमाल से दुबारा नसों में ताक़त आजाएगी और अगर अंदर से ख़राबी नहीं है तो वापिस क़ुदरती हालत में आ जाएगा, और दूसरा किफ़ाईती इलाज ये है **मुर्ग़ाबी तेल** के साथ अगर **माजून अम्बरी ख़ास** इस्तेमाल करलेते हो तो इस दवा तेल माजून से आपको दवा की सच्चाई और भरोसा का यक़ीन हो गया तो आपको बेहतरीन फ़ैसला करने में आसानी होगी, थोड़े पैसों में ज़्यादा समझ आ जाएगी तो ठोकर खाने भटकने से बेहतर है, **भरोसा कंपनी का होता है दवाई का नहीं ज़ायक़ा हलवाई बनाता है मिठाई का नहीं**, और अगर मुकम्मल और बेहतरीन इलाज करना है तो, सब से पहले ये जानलो की मर्दाना कमज़ोरी हो या मुकम्मल नामर्दी दोनों का इलाज एक ही दवा से होता है फ़र्क़ सिर्फ ये होता है की मुकम्मल नामर्दी यानी जब उठने की ताक़त ख़त्म हो जाएगी जिन्सी आज़ा मुकम्मल मुर्दा हो जाये इसको ठीक होने में दो से तीन महीना में मुकम्मल ठीक होजाता है और अगर कुछ जान बाक़ी है यानी कुछ नस मोटी मोटी नसों में कुछ जान बाक़ी है सिर्फ बारीक नसों में ख़ुशकी पैदा हुई है तो ऐसी हालत में जल्दी से मर्ज़ ख़त्म होजाता है, अब पहले इस बीमारी का इलाज बता रहा हूँ इसके बाद इस बीमारी के होने का अस्बाब और उसके नुक़्सानात और मनफ़ी असरात किस तरह होते हैं, मर्दाना कमज़ोरी हो या मुकम्मल नामर्दी उसके इलाज की दवा ये है।

(1)सबसे अहम और पहली दवा का नाम है **रोग़न मुर्ग़ाबी** ये तेल आज़ाए तनासुल की नस को ताक़त देता है ख़ुशक हो गई मुर्दा नसों के खुलिया ज़र्रात को दुबारा मुतहर्रिक करता है, सिकुड़ी हुई मुर्दा हो कर बेजान हो गई नसों के रेशा को खोलता है और इस में आई हुई ताक़त को काएम करता है और नसों को ठोस और मज़बूत करता है आज़ाए तनासुल की मुर्दा हो कर ख़ुशक हो गई नस सिकुड़ी हुई कमज़ोर बेजान नसों में ताक़त पैदा करके दुबारा क़ुदरती हालत पर लाने में मदद करता है।(2) दूसरी दवा का नाम है **माजून याक़ूत मुक़व्वी ख़ास** ये दवा बहुत तेज़ी से लुआब पैदा करती है और लुआबी आज़ा के गोश्त के रेशा खुलिया को नस और हड्डी की ताक़त को बढ़ाता है उसे ठोस और मज़बूत करता है ख़ुशक और मुर्दा हो गए रेशा खुलिया और नसों को मुतहर्रिक करके हर तरह के आज़ा की ताक़त को बढ़ाता है, माद्दाए मन्वियह , क़ुव्वते बाह, वीज़ कीटाणु को बढ़ाने में मदद करता है, नसों, हड्डीयों, जोड़ों की ताक़त को बढ़ाने में और उसको काएम करने में मदद करता है। (3) तीसरी दवा है **हरीसा बूटी टैब्लेट** ये दवा हिकमत का ख़ज़ाना है लुआब के अंदर से निस्वानियत को ख़त्म करता है यानी हरारते

अज़ीज़िया को बड़ी तेज़ी से बढ़ाता है, गुदूदे मन्वियह के रेशा को ठोस और मज़बूत करता है और खुलिया के अंदर की हरारत को काएम करता है, माद्दाए मन्वियह को मनी को बहुत ज़्यादा गाढ़ा करता है, मज़ी, वदी, मनी, एहतेलाम और सरअते अंज़ाल रुकावट की बीमारी को ख़त्म करता है, वीज़ कीटाणु की रुह और नफ़्स को बड़ी तेज़ी से जमा करता है और उसकी ताक़त को बढ़ाता है, क़ुदरती और काएमी जोश रुकावट पैदा करने में मदद करता है।

रोग़न मुर्ग़ाबी, याक़ूत मुक़व्वी ख़ास, हरीसा बूटी टैब्लेट से हर तरह की जिन्सी बीमारी मुकम्मल ख़त्म होजाती है अगर इस दवा के साथ **माजून अम्बरी ख़ास** का इज़ाफ़ा करते हो तो ये बेहतरीन फ़ैसला है और इलाज स्पैशल होजाता है और **माजून अम्बरी ख़ास** का फ़ायदा ये है कि पूरे जिस्म के लुआबी आज़ा की हरारते अज़ीज़िया को बड़े तेज़ी से बढ़ाता है जिस्म के लुआबी आज़ा और गुदूदे मन्वियह के रेशा और खुलिया के अंदर ताक़त देने वाली गर्मी को काएम करता है, गुदूदे मन्वियह के मुर्दा खुलिया और रेशा को दुबारा मुतहर्रिक करता है और गुदूदे मन्वियह की कमज़ोरी ख़त्म करता है उसकी ताक़त को बढ़ाता है, लुआबी आज़ा को ठोस और ताक़तवर बनाता है और वीज़ कीटाणु की पैदाइश बढ़ाने में मदद करता है, अगर आप इस चार दवा को एक साथ में इस्तेमाल करते हो तो नौजवानी की हरारत और जवानी की ताक़त को काएम करके जिस्म के हर आज़ा की ताक़त को ठोस और मज़बूत करने में मदद करता है, जोश रुकावट या जिन्सी आज़ा में किसी तरह की ख़राबी पैदा हो जाएगी, मर्दाना कमज़ोरी हो या मुकम्मल नामर्दी का इलाज करना है तो आँख बंद करके दवा को इस्तेमाल नहीं करना चाहीए पहली बार दवा ख़रीदने के बाद इस दवा की आज़माईश ज़रूर करना चाहीए अब अगर हमारे कंपनी **सलाम फार्मेसी** की दवा ख़रीद कर पहली मर्तबा लाए हो तो उसकी आज़माईश ज़रूर करो इस से आपको ये फ़ायदा होगा की अगर दवा टाइम पास है तो उसकी मालूमात हो जाएगी और अगर दवा के अंदर काएमी इलाज की ख़ासीयत है और हमेशा के लिए ठीक कर सकती है तो आपको बेहतरीन फ़ैसला करने में आसानी होगी, जिन्सी दवा की आज़माईश का ये तरीक़ा है की हमारी कोई भी एक दवा या सिर्फ तेल हो या चारों दवा को एक साथ में पहली बार इस्तेमाल करते हो तो दवा को इस्तेमाल करते वक़्त जो फ़ायदा दिखाई दे रहा है और जो ताक़त ज़ाहिर हो रही है उस पर भरोसा नहीं करना चाहीए, अब पूरी दवा ख़त्म होने का इंतेज़ार करो जब पूरी दवा ख़त्म हो जाएगी तो कम अज़ कम एक हफ़्ता दस दिन तक दुबारा दवा मत ख़रीदो, अब दवा की आज़माईश करो, दवा को इस्तेमाल करते वक़्त जो फ़ायदा दिखाई दे रहा था और जो ताक़त ज़ाहिर हो रही थी तो ये ताक़त और फ़ायदा दवा बंद करने के बाद दूसरे तीसरे दिन ख़त्म हो गया है या हफ़्ता दस दिन पूरा होने के बाद अभी तक दवा की ताक़त मौजूद है अगर दवा बंद करने के बाद दवा से आई हुई ताक़त ख़त्म नहीं होती है तो आप अपने लिए बेहतरीन फ़ैसला कर सकते हो और अगर दवा से ज़ाहिर होने वाली ताक़त दवा ख़त्म होने के बाद दूसरे तीसरे दिन दवा की ताक़त ख़त्म होगाई तो ये टाइम पास दवा है ऐसी दवा से काएमी इलाज होगा या नहीं अपनी अक़ल को इस्तेमाल करो, अगर हमारे

कंपनी की दवा से आया हुआ फ़ायदा मौजूद है तो ये क़ुदरती जड़ी बूटी से आया हुआ फ़ायदा है धीरे धीरे आहिस्ता-आहिस्ता आता है और हमेशा के लिए बीमारी से छुटकारा मिल जाता है और जिन्सी तक्लीफ से हमेशा के लिए नजात मिल जाती है, अब हम चालिस साल के इलाज के दरमयान लाखों मरीज़ों पर होने वाला फ़ायदा का तरीक़ा बयान कर रहा हूँ अगर आपके अंदर पच्चीस से तीस फ़ीसद जिन्सी ख़राबी पैदा हुई है तो एक बार की दवा से मुकम्मल आराम हो जाएगा लेकिन दो मर्तबा पूरी दवा को इस्तेमाल कर लेने से अंदरूनी बैरूनी आज़ा ठोस और मज़बूत होजाते हैं तो काफ़ी दिन तक या जब तक दुबारा ख़राबी का जुगाड़ ना बैठे मुकम्मल आराम और हर आज़ा ठोस और मज़बूत रहते हैं, और अगर आपके अंदर पच्चास फ़ीसद कमज़ोरी है यानी आज़ाए तनासुल ढीला और पिलपिला हो गया है तो आपको एक महीना में मुकम्मल सख़्ती पैदा होजाती है और ये ताक़त काएम होजाती है लेकिन दवा को पंद्रह दिन ज़्यादा इस्तेमाल कर लेना बहुत ज़्यादा बेहतर होता है और अगर सौ फ़ीसद आज़ाए तनासुल मुर्दा हो गया है और कभी तनाव या सख़्ती पैदा नहीं होती है और आधा एक इंच पर सिकुड़ कर अकड़ गया है और सिर्फ पेशाब के वक़्त उस जगह पर किसी अंग के होने का एहसास होता है यानी सौ फ़ीसद मुर्दा हो गया है तो परेशान होने की ज़रूरत नहीं है हमने ऊपर अपनी दवा के आज़माईश का तरीक़ा बयान किया है उसी तरीक़ा से आप एक बार दवा को रिपोर्ट समझ कर इस्तेमाल करो अगर दवाबंद करने के बाद दवाई से आया हुआ पच्चीस फ़ीसद का फ़ायदा दस पंद्रह दिन तक ख़त्म नहीं होता है तो दो से तीन महीना तक इलाज कर के मुकम्मल सेहत और नौजवानी का हमेशा के लिए फ़ायदा उठासकते हो।

ईसे ज़रूर पढ़ो बहुत बड़े नुक़्सान से बचाने के लिए ज़रूरी हिदायत और इसके बाद आप अपने लिए बेहतरीन फ़ैसला कर सकते हो

सबसे पहली बात ये है की जिन्सी ज़रूरत और जिन्सी आज़ा की अहमीयत का अंदाज़ा इस बात से लगाव की अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ने अपनी इबादत और फ़र्मांबरदारी के बदले में जो इनाम देगा उसको जन्नत की हूर कहते हैं यानी जिस मख़लूक़ को लालच का ज़रीया बनाया गया है वो औरत है यानी मर्दाना जिस्म की सबसे अहम ज़रूरत औरत है और जिन्सी आज़ा की ज़रूरत पूरे जिस्म के हर आज़ा में पेवस्त है और जिन्सी आज़ा यानी आज़ाए तनासुल में ज़िंदगी के हर तरह की ख़ुशी और हर तरह के ग़म और हर तरह की सेहत और हर तरह की बड़ी बीमारीयों का राज़ छुपा है जिन्सी आज़ा के अंदर से नेकी बदी जुलम और नफ़रत और इन्साफ़ और मुहब्बत रहेम दिल्ली का रास्ता मौजूद है इसी लिए शैतान इस ख़ास आज़ा को अपने महां जाल का हथियार बनाता है, युवावस्था में किसी शैतानी बच्चे के ज़रीया मुश्तज़नी की आदत सिखाता है लज़्ज़त और सुरूर का ज़ायक़ा चखाता है और कुछ दिन तक शैतान की बेटी मर्द के आज़ाए तनासुल पर फूंक मार कर दिमाग के अंदर एक नशा की तरह से सुरूर पैदा करके मुश्तज़नी के लिए बार-बार और मुसलसल आमादा करते रहती है, जब तक आज़ाए तनासुल में ख़ुशकी पैदा हो कर मुकम्मल ख़राबी कमज़ोरी या मुकम्मल नामर्दी पैदा हो जाएगी,

मुश्तज़नी करने से दिमाग के अंदर ख़राबी पैदा होती है क्यों की दिमाग के अंदर जिन्सी आज़ा के खुलिया(सेल के अंदर सोंचने वाली रौ यानी एहसास की लहर हमेशा मुतहर्रिक रहने की वजह से दिमाग के अंदर का दूसरा खुलिया(सेल बेकार और मफ़लूज हो कर रह जाता है इस लिए मुश्तज़नी करने वाले बच्चों के अंदर सुस्ती(काहिली), कमज़ोरी, बददिमाग़ी पैदा होजाती है, किसी काम के लिए फ़ौरन हरकत में नहीं आते, अब शैतान इस तरह रूह से इंतिक़ाम लेता है, नफ़्स का वज़ीर दिमाग है और रूह का वज़ीर अक़्ल है पूरे जिस्म को ख़ून सप्लाइ दिल करता है यानी दिल ख़ून को पम्प करता है इसी लिए दिमाग और नफ़्स को दिल से नफ़रत होजाती है क्यों की पहले सब कुछ ठीक था, अब ये दिल और अक़्ल दोनों ख़ून सप्लाइ नहीं करते हैं और जब चाहो फ़ौरन आमादा नहीं होते, आज़ाए तनासुल में तनाव सख़्ती ना होने का ज़िम्मेदार रूह और दिल को मुजरिम ठहराता है इसी लिए दिमाग के अंदर अपने आपसे नफ़रत होजाती है इस लिए ऐसे लोगों के अंदर यही नफ़रत और सोंच मुश्तज़नी करने वाले लोगों में आजाती है, नफ़रत, ग़ुस्सा, इंतिक़ाम ऐसे लोग मनफ़ी सोंचने लगते हैं, अब शैतान उनको किस तरह बर्बाद करता है, ये लोग इतने अहम और क़ीमती सबसे ख़ास आज़ा का इलाज चोरों की तरह से ढूँढते हैं और चोर की तरह से इलाज कराते हैं, इन्सान का जिस्म तालाब की तरह होता है समुंद्र नहीं है की कभी ख़ुशक नहीं होगा हमेशा तूफ़ान आते रहेगा, पागल को छोड़कर होश हवास और अक़्ल वाले इन्सान के अंदर जिन्सी आज़ा की ज़रूरत जोश, रुकावट, मनी की कमी, मर्दाना कमज़ोरी या मुकम्मल नामर्दी का होना बुराई या तौहीन वाली बात नहीं है, इंजन चलेगा तो बिगड़ेगा जितना चलेगा उतना बिगड़ेगा, अब अगर जिन्सी आज़ा में किसी भी तरह की ख़राबी या सिर्फ ढीलापन हो गया है या मुकम्मल नामर्दी हो गई है तो दवा ख़रीदने से पहले एक दो बार नहीं एक हज़ार बार सोंचना चाहीए और तहक़ीक़ कर लेने के बाद जब इतमीनान हो जाए की दवा ख़ून गरम करके टाइम पास है या उस दवा का असर काएम रहेगा, अगर दवा ख़ून को गर्म करके आज़ाए तनासुल में सख़्ती पैदा करने वाली है तो ये बात अच्छी तरह से याद करलो की ख़ून को पम्प करना दिल का काम है और अगर आज़ाए तनासुल में ढीलापन है या पूरा सख़्ती पैदा नहीं हो रही है या मुकम्मल मुर्दा हो गया है तो सिर्फ खाने वाली दवा से इलाज करना बहुत बड़ी बदनसीबी है क्यों की गाड़ी का टावर ट्यूब ख़राब हो या पंचर हो गया है तो इंजन की रफ़्तार बढ़ाकर या इंजन की ताक़त बढ़ाकर गाड़ी चलाने का अंजाम क्या होगा अपनी अक़्ल से मालूम करलो अगर आज़ाए तनासुल में कमज़ोरी ढीलापन या मुकम्मल मुर्दा हो गया है, सबसे पहले आज़ाए तनासुल का इलाज करो, इस पर ऐसा तेल इस्तेमाल करो जिस में आज़ाए तनासुल की खाल को किसी तरह का नुक़्सान ना होने पाए, इस तेल या तिला में जलाने या छाला पढ़ाने या दाना निकालने की ख़ासीयत ना हो, मैं आपको ये बात इस लिए बता रहा हूँ क्यों की आप हज़ारों साल पुरानी किताब को देख लो या कोई भी मुस्तनद किताब देख लो या जदीद दौर में पढ़ाई जाने वाली किताब से मालूमात हासिल करलो, आज़ाए तनासुल के मुर्दा होजाने के बाद जो दवा बताई गई है या इलाज का जो तरीक़ा बताया गया है या

तो आज़ाए तनासुल की खाल(चमड़ा) को जलाकर स्याह कर देगा या दाना निकल जाएगा या छाला पड़ जाएगा और बहुत ज़्यादा मरीज़ों ने बताया है की आज़ाए तनासुल पर पट्टी मार देते हैं और जब पट्टी खोलते हैं तो पूरी चमड़ी निकल जाती है सिर्फ नस दिखाई देती है, अब इस ज़ख़्म को ख़ुशक करने का इलाज करते हैं और किताबों का ये तिला सिर्फ़ आज़ाए तनासुल के लिए बनाया जाता है और हमने किताब की इस हिकमत को चालीस साल पहले फ़ेल कर दिया है मैं इस तिला को इलाज नहीं मानता हूँ इस तिला को दवा भी तस्लीम नहीं करता हूँ तिला हिकमत नहीं कुछ और है (----) और अब ऐसी तहरीर देखकर हमारे दिमाग में ये सवाल पैदा हुआ की जब सारी हिक्मत ठीक है तो इस ख़ास आज़ा के लिए ग़लती किस तरह हुई है ये सोंचने पर याद आया की जब ख़ूबसूरती से मज़हब में ख़राबी पैदा करने वाले कर देते हैं ये तो सिर्फ साईंस है दिमाग का खेल, अब हम किताब की हिक्मत को फ़ेल करने वाली हिक्मत बयान करने जा रहा हूँ इसका सबूत ये है की जिस्म का कोई भी हिस्सा जब तक सडेगा नहीं और जब तक मुर्दा नहीं होगा जिस्म से अलग नहीं होगा जो दवा से दाना निकल रहा हो या छाला पड़ जाये या खाल को जलाकर स्याह कर दे या पूरी चमड़ी निकल जाये तो ऐसी दवा हिक्मत है या कुछ और (----), ऐसी दवा किस तरह फ़ायदा करेगी, आज़ाए तनासुल में सिर्फ नस और चमड़ा है जब खाल को नुक़्सान हो रहा है तो नस को कैसे फ़ायदा होगा, चमड़ी चार परत होती है ये चमड़ी निकल जाती है तो इसपर बारीक झिल्ली आती है इसके अंदर मसाम होता है और रेशा नहीं होता है जब ये चार परत वाली क़ुदरती चमड़ी औरत के शर्मगाह की गर्मी रगड़ को देर तक नहीं झेल पाती है और जल्दी से अंज़ाल होजाता है तो ये एक परत वाली झिल्ली क्या करेगी, इस मुर्दा खाल में मसाम रेशा नहीं होता है तो आज़ाए तनासुल की नसों के बुख़ारात से निकलने वाली भाप नस को हमेशा के लिए मुर्दा कर देती है, अब हम अपनी हिक्मत बयान करने जा रहा हूँ हमारी हिक्मत के हिसाब से पूरे जिस्म के गोश्त में रेशा और खुलिया होता है यानी रेशों के बीच में खुलिया होता है और नस के अंदर ठोस ज़रारात से मिलकर नस बनती है जैसे सोना के अंदर ठोस ज़रारात होते हैं इसी लिए सोने की धात में लचक होती है और पूरे जिस्म की नस और खाल दोनों लुआब के अंदर का ठोस करने वाला माद्दा से बनता है, नस में ठोस करने वाला गोंद के ज़रारात हैं और खाल के अंदर लुआब के अंदर का हिस्स और लचक पैदा करने वाले माद्दा से बनती है और खाल के अंदर मसाम होता है यानी सुराख़ खुलिया होता है लेकिन चारों परत चमड़ी का अपना अलग अलग रेशा होता है एक ही लाईन में नहीं होता है जैसा गोश्त का रेशा सीधा सीधा होता है पहली परत चमड़ी का खुलिया जिस जगह पर है उस जगह पर दूसरी परत चमड़ी का खुलिया नहीं होता है वो इसके रेशा की जगह पर खुलिया होता है इसी तरह से चारों परत चमड़ी में मसाम होता है और पूरे जिस्म की खाल के नीचे लुआबी झिल्ली होती है जब लुआब के अंदर हेजान और गर्मी पैदा होती है तो खाल चमड़ी का मसाम खुलता है और लुआब का पसीना पानी बंकर बाहर आजाता है और लुआब के अंदर का तेल गोंद खाल के ज़रारात में ठहर जाता है इस से खाल को ताक़त मिलती है और ख़ुशकी ख़त्म होजाती है

इसी तरह से लुआबी झिल्ली के ज़रीया नसों के अंदर ठोस करने वाला गोंद पहूँचता है और नसों की ताक़त काएम रहती है, अब हम अपनी चालिस साल से इलाज करके लाखों मरीज़ों को सेहत और ख़ुशी देने वाली हिक्मत बता रहा हूँ हमारी हिक्मत का चालिस साल पुराना ख़ज़ाना ये है उसका नाम है **रोग़न मुर्ग़ाबी** इस तेल की ख़ास सिफ़त ये है की अपनी गर्मी से चमड़े के मसाम को खोलता है और नसों के ज़ररात को ताक़त देता है और नसों में गर्मी पैदा कर के ख़ुशक और मुर्दा नसों को नरम और लचकदार कर देता है और पूरे जिस्म के अंदर दौड़ने वाला ख़ून नसों की गोलाई को वापिस क़ुदरती हालत में लाता है हमने अपनी हिक्मत का तरीक़ा बताया है ईसी **मुर्ग़ाबी तेल** के ज़रीया से हमने लाखों से ज़्यादा मरीज़ों की मुकम्मल नामर्दी को ख़त्म किया है, ये **रोग़न मुर्ग़ाबी** आज़ाए तनासुल और पूरे जिस्म के हर आज़ा की बंद और सिकुड़ी हुई अकड़ी हुई नसों को फ़ौरन आराम देता है अगर सीना में दिल के मक़ाम पर या पीठ में गर्दन में नस का दर्द हो रहा है तो एक या दो तीन मर्तबा लगाने से मुकम्मल आराम होजाता है और अगर लक़वा का असर ज़ाहिर हो रहा है और बोलने में दुसवारी हो रही है और आँखों पलकों पर सुन हो गया है या चेहरा टेढ़ा हो गया है तो इस तेल को हर जगह लगा सकते हो आँखों की पलकों पर और भी हर जगह उसके लगाने से बंद नस अकड़ी हुई खुल जाती है और एक दो बार के लगाने से आराम होजाता है और जिस्म के दूसरे मक़ाम पर लगाने के लिए हमने **रोग़न मुर्ग़ाबी** का छोटा भाई बनाया है **रोग़न मुर्ग़ाबी** से आधी क़ीमत में है **रोग़न मुर्ग़ाबी** गाढ़ा तेल है उसका छोटा भाई **रोग़न कंगारू** ये तेल थोड़ा पतला है फ़ायदा दोनों का एक जैसा है अब हमारा मश्वरा ये है की जब जिन्सी आज़ा में कमज़ोरी ज़ाहिर होने लगे तो सबसे पहले एक बोटल रोग़न मुर्ग़ाबी तेल इस्तेमाल करो हो सकता है आपको खाने वाली दवा की ज़रूरत ना पड़े और सिर्फ आज़ाए तनासुल में कमज़ोरी आगई है और जिस्म के अंदर का निज़ाम बेहतरीन है तो कम ख़र्च में मुकम्मल आराम हो जाएगा और **मुर्ग़ाबी तेल** बग़ैर ज़रूरत के इस्तेमाल करने से फ़ायदा ये होगा की अगर आज़ाए तनासुल की किसी नस में ख़राबी पैदा होने वाली होगी तो ये ख़राबी आने से पहले ख़त्म हो जाएगी और आज़ए तनासुल में ताक़त पैदा हो जाएगी और आज़ाए तनासुल मज़बूत हो कर क़ुदरती हालत में रहेगा, अगर जिन्सी कमज़ोरी पैदा हो रही है तो किफ़ाईती इलाज ये है की पहले **मुर्ग़ाबी तेल** इस्तेमाल करो और अगर माद्दाए मन्वियह पानी की तरह पतला हो गया है और मनी को हद से ज़्यादा गाढ़ा कर के रुकावट पैदा करना है तो ये काएमी और बेहतरीन और किफ़ाईती इलाज है **हरीसा बूटी टैब्लेट** इस्तेमाल करो और बेज़रूरत इस्तेमाल करने से किसी तरह का कोई नुक़्सान नहीं है जब माद्दाए मन्वियह(लुआब) गाढ़ा होजाता है तो नसों में मज़बूती पैदा होजाती है और कई तरह की छोटी बड़ी बीमारीयों से नजात का ज़रीया बन जाता है और लुआबी बीमारी और फेफड़ा की बीमारी से बचाओ और मुहाफ़िज़ बन जाता है और अगर जिन्सी ख़ाहिशात मुर्दा हो गई हो और हफ़्ता महीना बीत जाने के बाद भी इरादा नहीं होता है आज़ाए तनासुल में ख़राबी नहीं है और बीवी के पास रहते हुए भी ख़ाहिशात बेदार नहीं होते हैं तो ऐसा इस लिए होता है की माद्दाए मन्वियह की कमी है

या गुदूदे मन्वियह कमज़ोर हो गए हैं तो माद्दाए मन्वियह बढ़ाने के लिए और अंदर से नसों को लुआबी रेशा खुलिया की ताक़त को बढ़ाने के लिए **याक़ूत मुक़व्वी ख़ास माजून** इस्तेमाल करलो इस माजून से लुआब की पैदाइश बढ़ जाती है और माद्दाए मन्वियह नौजवानी का एहसास देता है और मुकम्मल आराम हो जाएगा और अगर जिन्सी ख़ाहिशात बढ़ाकर ताक़तवर बनाने का इरादा है तो **अम्बरी ख़ास माजून** का इज़ाफ़ा करलो, **अम्बरी ख़ास माजून** की ख़ासीयत ऊपर बयान हो चुकी है और अगर आप एक साथ मुकम्मल इलाज करना चाहते हो तो जिन्सी कमज़ोरी को एहतियाती तदबीर के तहत या मुकम्मल ख़राबी होने के बाद एक साथ चारों दवा को ज़रूरत और बग़ैर ज़रूरत के इस्तेमाल करने से किसी तरह का कोई नुक़्सान नहीं होता है सिर्फ काएमी ताक़त बढ़ जाती है और हर तरह की ताक़त का इज़ाफ़ा होता है और जिस्म के दूसरे आज़ा की कमज़ोरी ख़त्म होजाती है, एक बात हमेशा याद रखना **भरोसा कंपनी का होता है दवाई का नहीं,** जिसके अंदर ख़िदमत-ए-ख़लक़ का शौक़ होता है वो अवाम को फ़ायदा देकर अपनी मज़दूरी हासिल करते हैं और जिसका मक़सद सिर्फ पैसा होता है ऐसे लोग सिर्फ सामान की शक्ल के साथ ख़ूबसूरत पैकिंग लेकर मार्कीट में उतर जाते हैं इस लिए जिन्सी आज़ा की दवाई ख़रीदने से पहले बहुत ज़्यादा तहक़ीक़ कर लेना चाहीए, अगर सौ फ़ीसद जड़ी बूटी है या तो आपको सौ फ़ीसद फ़ायदा देगी या तो कुछ कम फ़ायदा होगा लेकिन जड़ी बूटी से आपको सबसे बड़ा फ़ायदा ये होगा की किसी तरह के नुक़्सान का कोई ख़तरा नहीं होता है और अगर दवा टाइम पास है तो बहुत कम वक़्त में आपको टाइम पास बना देगी।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट सुबह ख़ाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को भी खाना खाने से एक या दो घंटा पहले दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें।

मुर्ग़ाबी तेल के इस्तेमाल का तरीक़ा ये है

मुर्ग़ाबी तेल सोने से पहले चौबीस घंटा में सिर्फ एक बार लगाना है, दस बूँद तेल आज़ाए तनासुल के चारों तरफ़ ऊपर नीचे हर जगह इस तरह से लगाव की तेल अच्छी तरह लग जाये, आज़ाए तनासुल पर रगड़ने घसड़ने की ज़रूरत नहीं है और मालिश करने की ज़रूरत नहीं है बस अच्छी तरह से सिर्फ तेल चारों तरफ़ लग जाने से मुरदह होकर ख़ुशक और सिकुड़ी हुई नसों को अपनी गर्मी से नरम और ढीला करके बंद हो गई नसों में धीरे धीरे ख़ून दौड़ने के लायक बनाता है, तेल लगाने के बाद कट चड्डी पहन लो ताकी जो तेल कपड़े में लगेगा वो तेल उसी पर कपड़े के साथ मौजूद होगा, अगर कोई दूसरा कपड़ा पहेनते हो और तेल कपड़े में लग जाता है तो फ़ायदा होगा मगर कमज़ोर फ़ायदा होगा जितना फ़ायदा होना चाहीए उस में कमी हो जाएगी।

परहेज़ करें: सिर्फ खट्टी चीज़ों का सख़्ती से परहेज़ करें अचार-खटाई-नीबू-दही के इलावा हर तरह की खट्टी चीज़ों से परहेज़ करें दुनियां में पैदा होने वाली हर चीज़ को इस्तेमाल कर सकते हो जिसका ज़ायक़ा तीखा-मीठा-फीका-कसीला-कड़वा ये खा सकते हो।

लिकोरिया यानी निस्वानी आज़ाए तनासुल से सफ़ेद पानी ख़ारिज होना उसके इलाज का तरीक़ा

अगर सफ़ेद पानी की शिकायत है तो सिर्फ लिकोरा टैब्लेट इस्तेमाल करने से आराम होजाएगा

लिकोरा टैब्लेट

अगर सफ़ेद पानी के साथ कमर दर्द, पेडू में दर्द जिस्म में कमज़ोरी या जोड़ों में भी दर्द की तकलीफ है तो लिकोरा टैब्लेट के साथ लबाब शबाब माजून भी इस्तेमाल करें

लिकोरा टैब्लेट लबाब शबाब माजून

औरत के आज़ाए तनासुल से सफ़ेद पानी का निकलना कई तरह की दूसरी बड़ी बीमारीयों को पैदा करने की शुरूआत होजाती है, ज़ाहिरी हालत में सफ़ेद पानी के निकलने से किसी तरह की तक्लीफ ज़ाहिर नहीं होती लेकिन इस बीमारी से जुड़ी हुई तकलीफों का जानना आप के लिए ज़रूरी है। आज़ाए तनासुल की अंदरूनी परत ढीली होने की वजह से इस बीमारी की शुरूआत होती है जब आज़ाए तनासुल के अंदरूनी हिस्सों में ढीलापन पैदा हो जाता है तो बच्चेदानी के रेशों में मनी (लुआब) की कमी हो जाती है और मनी बच्चा दानी के रेशा में ठहर नहीं पाती है तो हैज़ में कमी पैदा हो जाती है और निस्वानी आज़ाए तनासुल में जो रेशों का उभार होता है उसके ऊपर फ़ासिद लुआब की परत जम जाती है, इस में वरम की कैफ़ीयत पैदा हो जाती है उभरे हुए रेशे ढीले हो जाते हैं अगर ग़ैर शादी शूदा लड़की है तो इस का जिस्म कमज़ोर होने लगता है भूक कम या ख़त्म हो जाती है कमर दर्द, जोड़ों का दर्द, घुटने के नीचे खींचाव होना, सरदर्द और जिस्म में सुस्ती पैदा हो जाती है रहेम की अंदरूनी हरारत बढ़ जाती है और फ़ासिद लुआब रहेम में मुंजमिद हो कर रहेम की गर्मी से पहले दाना बनता है और फिर गाँठ की शक्ल एख्तियार कर लेता है। हमने जो अलामतें बयान की हैं वो इलाज के तजुर्बात से हासिल की गई हैं ऐसा ज़रूरी नहीं है कि सभी लड़कीयों में सारी अलामतें एक साथ ज़ाहिर हों शुरूआती बीमारी में कुछ अलामतें ज़रूर ज़ाहिर होती हैं लेकिन अगर सफ़ेद पानी का इलाज नहीं हुआ तो पूरी अलामतें ज़ाहिर होने लगेंगी। अगर सफ़ेद पानी की शिकायत शादीशुदा औरत को है तो ऊपर की अलामतों के साथ हमल जल्दी नहीं रुकेगा क्योंकि निस्वानी आज़ाए तनासुल के अंदर जो उभरे हुए रेशे होते हैं उस पर फ़ासिद मनी का अस्तर चढ़ा होता है जो फ़ासिद मनी में लिपटा हुआ होता है इस लिए हमल रोकने वाले किटाणु को फ़ौरन ज़िंदगी की हरारत और अंडे ना मिलने की वजह से वो किटाणु मुर्दा हो कर पानी बन कर निस्वानी मनी के साथ बाहर निकल जाते हैं। औरत या लड़की को अगर मामूली यानी कभी कभी हफ़्ता दस दिन में शरमगाह

से पानी आता है तो ये लिकोरिया नहीं है बल्कि शहवानी एहसास का नतीजा है और अगर कम या ज़्यादा रोज़ाना सफ़ेद पानी आता है तो **लिकोरा टैब्लेट** का इस्तेमाल करें एक दो डब्बा से आराम हो जाता है और अगर लिकोरिया के साथ कमर दर्द और कमज़ोरी भी है तो **लिकोरा टैब्लेट** के साथ में **माजून लबाब शबाब** का इज़ाफ़ा कर दें बदन में ताक़त भी आजाएगी और बीमारी भी ख़त्म हो जाएगी।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून दो दो टैब्लेट सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को भी खाली पेट दस दस ग्राम माजून दो दो टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें।

पित्ती उछलना या जुल पुतती के इलाज का तरीक़ा

पित्ती उछलना ऐसी बीमारी और तक्लीफ है कि इस में मरीज़ के पूरे जिस्म में बड़े दाने की शक्ल का दोदरा निकल आता है, इसमें जलन और खुजली दोनो होती है सुर्ख़-रंग के दाने पूरे जिस्म की खाल पर फैल जाते हैं, इस बीमारी में सफ़रा की ग़लाज़त और सफ़रा की ज़्यादती से ये मर्ज़ होता है जब सफ़रा ऐतेदाल से ज़्यादा ख़ून में शामिल होता है तो जुल पुतती का मर्ज़ होता है, ये मर्ज़ नव्वे[90] से पंचानवे[95] फीसद नौजवान ग़ैर शादीशुदा लोगों में होता है, इस मर्ज़ की बुनियादी हालत यही है कि नौजवान का ख़ून गरम, हड्डी और नसों में गर्मी होने की वजह से सफ़रा को कमज़ोर होने की जगह नहीं मिलती इस लिए नौजवानों में ही खास तौर पर ये बीमारियाँ होती हैं इस का इलाज है **पत्थर चट्टा टैब्लेट** जो सफ़रा और ख़ून की ग़लाज़त को साफ़ कर के ख़त्म करता है कुछ ठोस ज़र्रात जो फ़ासिद होते हैं उनको भी नरम करके साफ़ कर देता है **बरगीन टैब्लेट** जो ख़ून के अंदर मौजूद बहुत से ज़हरीले असरात और ख़ून में मौजूद जरासीम या वाइरस ख़त्म कर के जिस्म को पाक करता है और अगर साथ में **बासीर टैब्लेट** का इज़ाफ़ा करलें तो ज़्यादा बेहतर है।

पित्ती उछलना या जुल्पुत्ति का इलाज इस दवा से करें

पत्थर चट्टा टैब्लेट

बरगीन टैब्लेट

फानूस तेल

तरीक़ा इस्तेमाल

अगर **पत्थर चट्टा टैब्लेट** है तो दो टैब्लेट **पत्थर चट्टा** और एक टैब्लेट **बरगीन** सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें इसके बाद आधा घंटा कुछ ना खाएँ इसी तरह शाम को खाना खाने से एक या दो घंटा पहले सादे पानी से दो टैब्लेट **पत्थर चट्टा** और एक टैब्लेट **बरगीन** सादा पानी से इस्तेमाल करें, **रोग़न फानूस** को दाना, खुजली या जलन की जगह पर लगाऐं और इस जगह को एक घंटा तक खुला रखें ताकि तेल कपड़े में ना लगे।

बेऔलाद होने का अस्बाब क्या है

हमल ठहराने का तरीक़ा और इस बीमारी को ख़त्म करने का इलाज

बच्चा मर्द के अंदर होता है, औरत की मनी में अंडा होता है मर्द की मनी में कीटाणु होता है, औरत मर्द के वीज़(किटाणु) को अपने रहेम के अंदर पनाह देती है और मर्द के बीज को गेज़ा फ़राहम कर के इस किटाणु की परवरिश करती है उसे इन्सानी शक्ल में आने तक उसके साथ रहेम करती है, अपने जिस्म को निचोड़ कर इस बच्चे की रूह और नफ्स दोनों को ताक़तवर बना कर रहेम से बाहर निकलने में मदद करती है। बच्चा पैदा करने के लिए ख़राबी या बीमारी मर्द के अंदर है या औरत के अंदर बीमारी है या मर्द और औरत दोनों के अंदर बीमारी है, इस ख़राबी की पहचान बहुत आसान है किसी चेकअप की ज़रूरत नहीं है, शादी हुए कई साल हो गया है लेकिन हमल नहीं रुकता है, इसके लिए सबसे पहले ये मालूम करो की औरत को हैज़ जारी होने के बाद कम से कम चार दिन हैज़ रहता है या पाँच5 दिन या सात7 दिन तक हैज़ रहता है, अगर सात7 दिन तक हैज़ रहता है तो ऐसी औरत ज़्यादा से बहुत ज़्यादा बच्चा पैदा करने की ताक़त उसके रहेम के अंदर मौजूद है और अगर चार दिन हैज़ आता है तो ये आम हालत है बच्चा पैदा करने की, हमल आसानी से ठहरेगा, इस तरह की औरतों में किसी तरह का ऐब या ख़राबी नहीं है क्यों की चार पाँच दिन हैज़ आरहा है तो औरत के गुदूदे मन्वियह के खुलिया में अंडा पैदा करने की ताक़त मौजूद है इस लिए हैज़ आ रहा है।औरत का हैज़ ये साबित करता है की औरत के रहेम के अंदर मर्द के वीज़ (किटाणु)की गेज़ा मौजूद है, ऐसी औरत बच्चा पैदा कर सकती है, चार दिन से ज़्यादा हैज़ का आना गुदूदे मन्वियह के सेहत की अलामत है, जब तक हैज़ आरहा है औरत के अंदर बच्चा पैदा करने की सलाहीयत और ताक़त मौजूद है, अगर हैज़ बंद हो गया है तो बच्चा पैदा नहीं हो सकता है और हमल नहीं ठहरेगा, अगर औरत की उम्र छत्तीस36 अड़तीस38 साल से कम है तो हैज़ जारी करने का इलाज करें या हैज़ के ना आने की वजूहात तलाश करें और अगर औरत की उम्र चालीस साल हो गई है तो बच्चा पैदा करने की ख्वाहिश छोड़ दें क्योंकी अक्सरीयत में औरतों का हैज़ बंद होजाता है चालीस40 बयालिस42 साल की उम्र में, और अगर पैतालीस45 से पच्चास50 साल की उम्र में हैज़ आता होगा तो ऐसी औरत लाखों में एक होगी, हैज़ बंद होने के बाद औरत के गुदूदे मन्वियह में अंडा नहीं बनता है इस लिए चालीस40 साल के बाद हैज़ का इलाज करना सिर्फ कोशिश करना होगा हैज़ का आना बहुत मुश्किल है क्यों की ये फितरी अमल है, जब तक औरत के रहेम के अंदर हरारते अज़ीज़िया यानी ताक़त देने वाली गर्मी मौजूद है उस वक़्त तक औरत के गुदूदे मन्वियह में अंडा बनाने की ताक़त मौजूद रहती है और जब हरारते अज़ीज़िया

कमज़ोर होती है तो रहेम का निज़ाम बिगड़ जाता है और जब हरारते अज़ीज़िया ख़त्म होती है तो हैज़ बंद होजाता है, जब तक नौजवानी की हरारते अज़ीज़िया मौजूद है उस वक़्त तक औरत की जवानी नौजवानी का पूरा निज़ाम और जवानी का हर अमल हर काम जारी रहेगा और जब हैज़ बंद हो गया तो अब चालीस साल के बाद की पोज़ीशन रह गई है, अब बच्चा पैदा नहीं हो सकता है। इस किताब में मर्द और औरत दोनों की बीमारी और इलाज अलग अलग हिस्से में बयान किया जाएगा, पहला हिस्सा मर्द की बीमारी और उसके इलाज का तरीक़ा। दूसरा हिस्सा औरत की बीमारी और उसके इलाज का तरीक़ा बताया जाएगा।

किस तरह से हमल ठहरता है और वीज़ कीटाणु मुकम्मल होते हैं ख़ास मज़मून। पहला हिस्सा, बे औलाद मर्द के अंदर की बीमारी और ख़राबी का बयान और उसके इलाज का तरीक़ा।

दुनियां की हर चीज़ रेशा और ज़ररात की शक्ल में मौजूद है, इन रेशों और ज़ररात के बीच की जगह में जो खुला होता है उसको खुलिया कहते हैं, इस खुलिया में जब तक लुआब रहता है तब तक वो हिस्सा ज़िंदगी की तरफ़ माएल रहता है और वो हिस्सा अपने काम को अंजाम तक पहुँचाता है और जब ये खुलिया मुर्दा होना शुरू होता है बस यहां से ख़राबी और बीमारी की शुरूआत होजाती है, ठीक ईसी तरह जब मर्द के गुदूदे मन्वियह का खुलिया सिकुड़ कर तंग होजाता है तो गुदूदे मन्वियह के अंदर लुआब में कमी आजाती है और गोश्त का रेशा कमज़ोर या ढीला या बादी यानी रेशा मोटा होजाता है, गुदूदे मन्वियह के खुलिया में हरारते अज़ीज़िया यानी ताक़त देने वाली गर्मी कमज़ोर होजाती है, इस वजह से या तो खुलिया मुर्दा होना शुरू होजाता है या सिकुड़ कर बहुत ज़्यादा तंग होजाता है दोनों में से कोई एक शक्ल हो या दोनों कैफ़ीयत मौजूद हो, माद्दाए मन्वियह की मिक़दार बहुत ज़्यादा कम होजाती है, एक तो लुआब की मिक़दार बहुत ज़्यादा घट गई है इस लिए हरारते अज़ीज़िया बहुत कमज़ोर हालत में आजाती है, अब बीमारी डबल होजाती है, अब मर्द की नौजवानी और जवानी बुढ़ापा के क़रीब होने की अलामत ज़ाहिर करने लगती है, किसी मर्द या औरत के गुदूदे मन्वियह के खुलिया की तादाद घटने लगती है तो माद्दाए मन्वियह की मिक़दार घट जाती है, गुदूदे मन्वियह का रेशा ढीला होने लगता है और हरारते अज़ीज़िया कमज़ोर या ख़त्म होजाती है, इस तरह की मनी यानी वीज़ के अंदर कीटाणु बहुत कमज़ोर हालत में होते हैं यानी अलामत के तौर पर होते हैं, जिस्म तो ज़ाहिर होता है लेकिन इस में जान नहीं होती है, मर्द के आज़ाए तनासुल से निकल कर औरत की शर्मगाह में गिरते ही पानी बन जाता है, इसी लिए हमल ठहरता नहीं है, रिपोर्ट निकालने पर वीज कीटाणु का वजूद ज़ाहिर होता है लेकिन हमल नहीं ठहरता है, बच्चा पैदा करने के लिए गुदूदे मन्वियह के रेशों का खुलिया सौ फ़ीसद मुतहर्रिक होना चाहीए तो ये सौ फ़ीसद मर्दाना ताक़त को क़ुदरती हालत में ज़ाहिर करेगा, इस में जोश, रुकावट, आज़ाए तनासुल में सख़्ती(तनाव) ऐसा होगा जैसे ख़ुशक लक्ड़ी की तरह से है तो ये सौ फ़ीसद मर्दाना ताक़त है, अगर गुदूदे मन्वियह

का सत्तर70 फ़ीसद रेशा खुलिया मुतहर्रिक होता है तो ये कमज़ोर हालत है इस में जोश रुकावट आज़ाए तनासुल के तनाव में ढीलापन आजाता है, नसों में कमज़ोरी पैदा होजाती है आज़ाए तनासुल में सख़्ती ख़त्म होजाती है और जिस्म के लुआबी आज़ा के गोश्त के लुआब के अंदर क़ुदरती हरारत कमज़ोर हो जाती है और लुआब के अंदर हरारते अज़ीज़िया का ज़्यादा से ज़्यादा होना ज़रूरी है क्यों की जब ज़रूरत हो उस वक़्त माद्दाए मन्वियह को जितना ज़्यादा गाढ़ा करने की ताक़त होगी उतना ज़्यादा ताक़तवर ठोस कीटाणु पैदा होंगे, जिस्म के किसी हिस्सा में पहले से कीटाणु मौजूद नहीं रहते हैं, मर्द के लुआब में कीटाणु बनाने की सिफ़त और क़ुदरती सलाहीयत होती है, ये काम गुदूदे मन्वियह का होता है कीटाणु बनाने का, और दिमाग के अंदर हर तरह के एहसास और हर तरह की हरकत का खुलिया यानी सेल होता है, दिमाग के अंदर जब सोंचने वाली रौ यानी लहर चलती है तो जिस खुलिया यानी सेल के अंदर लहर यानी रौ ठहर जाती है तो उसि आज़ा का काम शुरू होजाता है, जब तक रौ अपनी जगह ना बदले इस आज़ा का काम ख़त्म नहीं होता है, इसी तरह आँखों से महसूस करने वाली हिस्स अपने एहसास को दिमाग के खुलिया में भेजती है ताकि दिमाग के अंदर आज़ाए तनासुल का खुलिया मुतहर्रिक कर दे और इस खुलिया(सेल) के अंदर आज़ाए तनासुल की लहर जमा होना शुरू होजाती है और लहर का ग़लबा होजाता है तो दिमाग का खुलिया रेशा दिल को औरत की तरफ़ माएल करता है और दिल को आमादा करता है की आज़ाए तनासुल की तरफ़ ख़ून को पम्प कर दे, जब दिल आज़ाए तनासुल में ख़ून को सप्लाइ करना शुरू करता है तो गुर्दा अपने काम को रोक देता है यानी गुर्दा हर वक्त ख़ून साफ़ करता रहता है, ख़ून के अंदर जो पानी है उसको ख़ून से अलग करके पेशाब की थैली में पानी को डाल देता है लेकिन जब दिल आज़ाए तनासुल की तरफ़ ख़ून को भेजना शुरू करता है तो गुर्दा का खुलिया सिकुड़ जाता है और अपना काम बंद कर देता है इसलिए ख़ून में पानी की मिक़दार बढ़ जाती है और पानी में हवा होती है इसलिए ख़ून का दबाव यानी ख़ून के दौड़ने की रफ़्तार बढ़ जाती है और लुआबी गोश्त का रेशा और उसका खुलिया मुतहर्रिक होजाता है और लुआबी रेशा के खुलिया में जो हरारते अज़ीज़िया है वो बढ़ जाती है और ख़ून के अंदर गर्मी बहुत तेज़ होजाती है और गुदूदे मन्वियह के खुलिया में लुआब बड़ी तेज़ी से गाढ़ा होने लगता है और खुलिया के लुआब में रूह और नफ़्स बहुत तेज़ रफ़्तारी से जमा होना शुरू होजाते हैं और गुदूदे मन्वियह के अंदर करोड़ों वीज़ कीटाणु का जिस्म वजूद में आजाता है, और ये कीटाणु बड़ी तेज़ी से मिनट और सिकंडों में बलूग़त यानी नौजवानी की तरफ़ बढ़ने लगते हैं, इस करोड़ों कीटाणु में से सिर्फ कुछ कीटाणु ही यानी बहुत मामूली सी तादाद में कीड़े अपने जिस्म की ताक़त क़ुव्वत को ठोस और मज़बूत करने में कामयाब होजाते हैं यानी बहुत थोड़े से कीटाणु में रूह और नफ़्स दोनों जमा होजाता है, अब अगर मर्द की मनी से कुछ सेकंड पहले औरत की मनी का अंज़ाल हो जाये तो औरत की मनी के अंडे को खाते हुए औरत के गुदूदे मन्वियह की तरफ़ बढ़ने लगते हैं जहां से मनी ख़ारिज हुई है उसी रास्ते को पकड़

कर आगे बढ़ते हैं, कुछ कीटाणु रास्ते में पानी बन जाते हैं और एक दो कीटाणु रहेम के अंदर दाख़िल होने में कामयाब होजाते हैं और अगर रहेम के अंदर के मौसम की हरारत में ठहर गए तो ज़िंदगी की शुरूआत हो जाती है वर्ना मंज़िल पर पहूंच कर पानी बन जाते हैं, और एक से ज़्यादा बच्चा पैदा करना मर्द की ख़ासीयत नहीं है औरत के रहेम के अंदर बहुत सारे कीटाणु दाख़िल होते हैं लेकिन औरत की बच्चेदानी एक से ज़्यादा कीटाणु पर रहेम करती है या सिर्फ एक कीटाणु को मेहमान बनाती है ये ख़ासीयत और ख़ूबी औरत के अंदर होती है, अब हमल ठहरने का दूसरा तरीक़ा ये होता है की जब मर्द की मनी ख़ारिज हो रही हो उसी वक़्त औरत को भी मनी ख़ारिज होने के लिए बच्चेदानी का मुंह खुल गया हो और मर्द की मनी का अंज़ाल बच्चेदानी के मुंह पर हो गया हो तो भी हमल ठहरने का अस्बाब बन जाता है। अब हमल ठहराने का तीसरा तरीक़ा ये है की मर्द अपनी मनी के अंज़ाल के वक़्त अपने आज़ाए तनासुल का आधा हिस्सा बाहर रखे और आगे पीछे हो कर मनी ख़ारिज करे क्यों की औरत की शर्मगाह में बाहर के हिस्सा से तीन साढ़े तीन इंच के बाद बच्चेदानी का मुंह होता है इस लिए अगर मर्द की मनी बच्चेदानी के मुंह पर गिरे तो हमल ठहरने का अस्बाब बन सकता है क्यों की अगर कीटाणु ताक़तवर होंगे तो रहेम अपने अंदर पनाह देगा और औरत का गुदूदे मन्वियह मुतहर्रिक हो जाएगा और हमल ठहर जाएगा, पहला बच्चा पैदा करने के लिए मर्द और औरत दोनों का जिन्सी अमल उरूज पर होना ज़रूरी है उसकी मिसाल ये है की जब लड़का और लड़की हरामख़ोरी के लिए आमादा होते हैं तो लड़का और लड़की दोनों के अंदर जब जिन्सी हवस उरूज पर आजाती है तो ईसी लिए दोनों के अंदर से हर तरह का ख़ौफ़ हर तरह की शरम और हया(ग़ैरत) ख़त्म होजाती है तब जाकर दोनों एक दूसरे से जिन्सी अमल शुरू करते हैं और सिर्फ एकबार की जुफ़्ती से लड़की को हमल ठहर जाता है ऐसा इस लिए होता है क्यों की दोनों के अंदर जिन्सी भूख हद से बहुत ज़्यादा बर्दाश्त के बाहर होजाती है और दोनों एक दूसरे पर टूट पड़ते हैं लड़की का रहेम(बच्चेदानी) फ़ौरन मुतहर्रिक होजाती है इस लिए हर हाल में हमल ठहर जाता है, अब दोनों की रूह और नफ़्स निज़ाम क़ुदरत के फ़ित्रत की सच्चाई के उरूज को बहुत क़रीब से देख लेते हैं इसी लिए दुनियां की पहचान भूल जाते हैं, ऐसा इस लिए होता है क्यों की दोनों की रूह एक दूसरे को बहुत क़रीब से देख लेती है अब अगर दोनों की शादी कर दी जाये तो अब दोनों एक दूसरे के मर्द औरत हो गए अब इसी जोड़े में पहले वाली कैफ़ीयत हर वक़त नहीं आऐगी और ना ही पहले की तरह जिन्सी भूख पैदा होगी हर वक्त, इस लिए ज़रूरी है की मर्द औरत दोनों के अंदर जिन्सी सेहत का निज़ाम बेहतरीन होना ज़रूरी है और जब बच्चा पैदा करना मक़सद हो तो जिन्सी भूख पैदा करना ज़रूरी है लेकिन ख़ून गरम करके जोश पैदा करने से बच्चा पैदा नहीं होगा इसके लिए क़ुदरती तरीक़ा से निज़ामे क़ुदरत का जिन्सी अमल पैदा होना चाहीए और इस क़ुदरती अमल को मुतहर्रिक करके क़ुदरती ताक़त को वापस लाने के लिए नीचे बताई गई ये चारो दवा को इस्तेमाल करके आज़माईश शर्त है।

बेऔलाद मर्द की बीमारी के इलाज की दवा यह है

बे औलाद मर्द की बीमारी का ईलाज इस दवा से करें ये दवा वीज़ किटाणु और कुदरती जोश रुकावट काएम करने में मदद करती है

मुरगाबी तेल

हरीसा बूटी टैब्लेट

याकूत मुकव्वी खास माजून

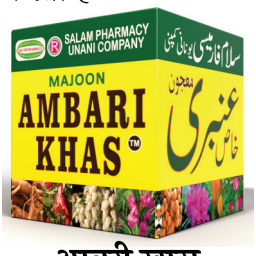

अम्बरी खास माजून

इस बीमारी के इलाज की दवा ये है।

1) पहली दवा **माजून अम्बरी ख़ास** का फ़ायदा ये है की पूरे जिस्म के लुआबी आज़ा की हरारते अज़ीज़िया को बड़े तेज़ी से बढ़ाता है, जिस्म के लुआबी आज़ा और गुदूदे मन्वियह के रेशा खुलिया के अंदर ताक़त देने वाली गर्मी को काएम करता है, गुदूदे मन्वियह के मुर्दा खुलिया रेशा को दुबारा मुतहर्रिक करता है और गुदूदे मन्वियह की कमज़ोरी को ख़त्म करके उसकी ताक़त को बढ़ाता है और लुआबी आज़ा को ठोस और मज़बूत करने में मदद करता है।

2)दूसरी दवा है **याक़ूत मुक़व्वी ख़ास माजून** ये दवा लुआब की पैदाइश(माद्दाए मन्वियह)को बड़े तेज़ी से बढ़ाती है इस लिए लुआबी खुलिया को मुर्दा होने से बचाती है और लुआबी गोश्त के रेशा को और नसों को और गुदूदे मन्वियह की ताक़त को बढ़ाने में मदद करती है और माद्दाए मन्वियह और वीज़ कीटाणु को बड़े तेज़ी से बढ़ाती है और जोड़ों को और जिस्म के हर आज़ा को ठोस और मज़बूत बनाने में मदद करती है।

3) तीसरी दवा है **हरीसा बूटी टैब्लेट** ये दवा जड़ी बूटी का ख़ज़ाना है, लुआब के अंदर से निस्वानियत को ख़त्म करता है यानी हरारते अज़ीज़िया को बड़ी तेज़ी से बढ़ाता है, गुदूदे मन्वियह के रेशा को ठोस और मज़बूत करता है और खुलिया की हरारत को काएम करता है, माद्दाए मन्वियह को बेहद गाढ़ा करता है, मज़ी, वदी, मनी, एहतेलाम और सरअते अंज़ाल रुकावट की बीमारी को ख़त्म करता है, वीज़ कीटाणु को ठोस और मज़बूत होने और रुह और नफ़्स को तेज़ी से जमा करने में मदद करता है, काएमी जोश रुकावट पैदा करने में मदद करता है।

4) चौथी दवा है **मुर्गाबी तेल**, ये तेल आज़ाए तनासुल की नस को ताक़त देता है, ख़ुशक हो गई नसों के खुलिया को दुबारा मुतहर्रिक करता है, सिकुड़ी हुई मुर्दा हो कर बेजान हो गई नसों के रेशा को खोलता है और इस में आई हुई ताक़त को काएम करता है और नसों को ठोस और मज़बूत करके आज़ाए तनासुल की ताक़त को क़ुदरती हालत पर लाने में मदद करता है।

मर्दाना कमज़ोरी या नामर्दी की दवा है तो उसकी आज़माईश ज़रूर करना चाहीए,

आज़माईश का तरीक़ा ये है की इस चार दवा को पंद्रह दिन तक इस्तेमाल कर के दवा को बंद करदो, दवा के ज़रीया से आया हुआ बीस20 से पच्चीस25 फ़ीसद का फ़ायदा दवा बंद करने के बाद मौजूद है या ख़त्म हो गया है, पहले इस की आज़माईश करो, हफ़्ता दस दिन तक इंतेज़ार करके देख लो अगर दवा से आया हुआ फ़ायदा ख़त्म नहीं हुआ है तो ये दवा क़ुदरती जड़ी बूटी से बनी है इसलिए आपके पूरे जिस्म के अंदर हर तरह की ताक़त को बढ़ाएगी और इस ताक़त को काएम करने में मदद कर देगी जब तक ख़राबी का जुगाड़ ना पैदा हो जाए और अगर दवा टाइम पास होगी तो दवा बंद होने के बाद दूसरे दिन दवा से आया हुआ फ़ायदा ख़त्म हो जाएगा और टाइम पास दवा से आप क़ुदरती ताक़त हासिल नहीं कर सकते हैं सिर्फ लज़्ज़त हासिल कर सकते हैं, आपको दोनों रास्ता बता दिया गया है, आप अपने लिए बेहतर फ़ैसला कर सकते हैं, अगर आपको इस दवा से इतमीनान हो गया है तो ख़त्म हो गई मर्दाना ताक़त को वापिस लाने के लिए दो से ढाई महीना का कोर्स करना है और अगर बच्चा पैदा करने के लिए इस्तेमाल करना है तो **मुर्ग़ाबी तेल** दो से ढाई महीना के बाद तेल बंद कर देना है, इसके बाद सिर्फ **माजून याक़ूत मुक़व्वी ख़ास**, **हरीसा बूटी टैब्लेट** और **अम्बरी ख़ास माजून** यही तीन दवा को दो ढाई महीना और इस्तेमाल कर लो टोटल चार से पाँच महीना का कोर्स ख़त्म हो जाएगा, हिक्मत के हिसाब से अगर मर्द और औरत के गुदूदे मन्वियह में सौ फ़ीसद ताक़त है तो बच्चा पैदा हो सकता है, हकीम सिर्फ़ हिकमत से अस्बाब पैदा करके क़ुदरती ताक़त लाने में मदद करता है और बच्चा पैदा करना सिर्फ़ अल्लाह के हाथ में होता है, अल्लाह जिसको चाहता है औलाद से महरूम कर देता है और अल्लाह जिसको चाहता है औलाद से माला-माल कर देता है, मर्ज़ी सिर्फ़ अल्लाह की चलती है इन्सान का काम है सिर्फ कोशिश करना।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट सुबह ख़ाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को भी खाना खाने से एक या दो घंटा पहले दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें।

परहेज़ करें:अचार, खटाई, लींबो, दही, छाछ और हर तरह की खट्टी चीज़ों से परहेज़ करें

ज़्यादा से ज़्यादा इस्तेमाल करें मछली, गोश्त, अंडा, दूध।

मुर्ग़ाबी तेल के इस्तेमाल का तरीक़ा ये है

मुर्ग़ाबी तेल सोने से पहले चौबीस घंटा में सिर्फ एक बार लगाना है, दस बूँद तेल आज़ाए तनासुल के चारों तरफ़ ऊपर नीचे हर जगह इस तरह से लगाव की तेल अच्छी तरह लग जाये, आज़ाए तनासुल पर रगड़ने घसड़ने की ज़रूरत नहीं है और मालिश करने की ज़रूरत नहीं है बस अच्छी तरह से सिर्फ तेल चारों तरफ़ लग जाने से मुर्दा होकर ख़ुशक और सिकुड़ी हुई नसों को अपनी गर्मी से नरम और ढीला करके बंद हो गई नसों में धीरे धीरे ख़ून दौड़ने के लायक बनाता है, तेल लगाने के बाद कट चड्डी पहन लो ताकि जो तेल कपड़े में लगे वो तेल उसी जगह पर कपड़े के साथ मौजूद रहेगा, अगर कोई दूसरा कपड़ा पहनते हो और तेल कपड़े में लग जाता है तो फ़ायदा होगा मगर कमज़ोर फ़ायदा होगा जितना फ़ायदा होना चाहीए उस में कमी हो जाएगी।

दूसरा हिस्सा, बेऔलाद औरत के अंदर की ख़राबी का बयान और इस बीमारी का इलाज

औरत को हमल नहीं ठहरता है तो सबसे पहले ये जानना ज़रूरी है की औरत को हैज़ आता है तो हैज़ कितने दिन रहता है, पहला बच्चा पैदा करने के लिए चार दिन हैज़ का आना ज़रूरी है, इस में तीन दिन ख़ुलासा और तेज़ी से आता हो, चौथे दिन कम हो कर औरत साफ़ हो गई हो और अगर पाँच5 दिन छे6 और सात7 दिन हैज़ आता है तो ये औरत की बेहतरीन पोज़ीशन है, चार पाँच दिन हैज़ वाली औरत आम तौर से पाई जाने वाली आम सिफ़त वाली औरत है उसको हमल ठहर जाता है और आसानी से बच्चा पैदा करती है और अगर छे6 दिन सात7 दिन तक हैज़ आता है तो ये बेहतरीन किस्म की औरत है, ऐसी औरत के रहेम बच्चेदानी के अंदर ज़्यादा से बहुत ज़्यादा बच्चा पैदा करने की सलाहीयत है और बड़े आसानी से हमल ठहर जाता है, अब अगर पाँच, छे, सात दिन तक हैज़ आने वाली औरत से बच्चा पैदा नहीं होता है तो मर्द को आदमी को अपना इलाज करना चाहीए क्यों की औरत के रहेम और गुदूदे मन्वियह के अंदर इतना अंडा है के एक साथ कई बच्चों को अपने रहेम के अंदर गेज़ा फ़राहम करके बच्चा पैदा कर सकती है, हैज़ एक अलामत है अगर सात दिन तक हैज़ आता है तो औरत के गुदूदे मन्वियह का रेशा और खुलिया सौ फ़ीसद सेहत याब और मुतहर्रिक है औरतों के बीमारी की शुरूआत इस एक बीमारी से होती है जो औरतों की बीमारी की माँ है, अगर किसी औरत को सफ़ेद पानी ख़ारिज होने की तक्लीफ यानी लिकोरिया की बीमारी शुरू हो जाए तो औरत को कई तरह की दूसरी बीमारीयों की शुरूआत होजाती है, यानी कमर दर्द, पैर के गोश्त में खिंचाव, दर्द, बदन में कमज़ोरी, सुस्ती काहिली शुरू होजाती है, बाज़ औरतों में ये अलामत फ़ौरन शुरू होजाती है, बाज़ औरतों में बहुत देर से ये अलामत ज़ाहिर होती है, इसके बाद हैज़ का निज़ाम बिगड़ना शुरू होजाता है, बाज़ औरतों के हैज़ में कमी होजाती है यानी सात दिन पाँच दिन तक हैज़ आने वाली औरत का हैज़ एक दो दिन में हैज़ आकर बंद होजाता है, और बाज़ औरतों के हैज़ की मिक़दार में कमी होजाती है क्यों की गुदूदे मन्वियह के अंडा की मिक़दार और हरारते अज़ीज़िया में कमी आजाती है, और बाज़ औरतों में एक महीना का गैप हो जाता है या दो तीन महीना के बाद हैज़ आएगा, कभी टाइम पर आएगा कभी ऊपर नीचे होना शुरू होजाता है, जब औरत को सफ़ेद पानी ख़ारिज होता है तो शुरूआती दौर में लिकोरिया पानी की शक्ल का रहेगा यानी पानी से थोड़ा सा गाढ़ा रहता है लेकिन जब लुआब की कमी होजाती है, गुदूदे मन्वियह और शर्मगाह की हरारते अज़ीज़िया कमज़ोर होजाती है, लुआब फ़ासिद होना शुरू होजाता है तो मनी का अंडा फ़ासिद होने लगता है, अंडा फ़ासिद होने की वजह से शर्मगाह के अंदर का लुआब दही छाछ की शक्ल का होजाता है, जब औरत की शर्मगाह के अंदर का पानी दही की शक्ल का हो जाए तो हैज़ के ख़ून में कमी होजाती है यानी छे6 सात7 दिन से घट कर एक या दो दिन तक हैज़ आकर बंद होजाता है या एक बार चार4 छे6 दिन तक हैज़ आगया उसके बाद दो तीन महीना तक हैज़ आना बंद हो गया यानी हैज़ का पूरा निज़ाम बिगड़ जाता है, गुदूदे मन्वियह का खुलिया मुर्दा होना शुरू होजाता है, निस्वानियत कमज़ोर होने लगती है यानी औरत का जोश जुनून कम होजाता है इस में से कोई भी एक या दो तरह की ख़राबी

हो जाये तो भी हमल नहीं ठहरता है, इसका इलाज कर लेना ज़रूरी है, अगर औरत को सफ़ेद पानी ख़ारिज होने की बीमारी है गाढ़ा या पतला पानी निकलते रहता है तो मर्द की मनी में कीटाणु होने के बावजूद हमल नहीं ठहरेगा क्यों की इस बीमारी में शर्मगाह के अंदर गाढ़ा लुआब की परत जमी रहती है इस लिए जब मर्द की मनी का अंज़ाल होता है तो फ़ौरन शर्मगाह की हरारत महसूस नहीं होती है और रहेम के गोश्त के रेशा और खुलिया से टच नहीं होता है क्यों की फ़ासिद लुआब की परत में अण्डा नहीं ताफ़्फ़ुन होता है, तो मर्द की मनी के कीटाणु फ़ौरन पानी बन जाते हैं क्यों की मर्द की मनी के कीटाणु को अंडा मिल गया तो उन अंडों के ज़रीया गुदूदे मन्वियह का रास्ता पकड़ कर रहेम के अंदर दाख़िल होजाते हैं, और औरत के गुदूदे मन्वियह के लुआब में लाखों अंडे मौजूद रहते हैं अगर पच्चीस दिन के अंदर हमल ठहर गया तो यही अंडे गेज़ा बन कर मर्द के कीटाणु को ज़िंदा रहने में मदद करते हैं, अब अगर पच्चीस दिन तक कोई मेहमान नहीं आया तो ये अंडे गुदूदे मन्वियह की हरारत से हैज़ के ख़ून में तबदील हो कर बाहर आजाते हैं, इस तरह गुदूदे मन्वियह का खुलिया हर महीना साफ़ होते रहता है, अब अगर औरत को मुसलसल लिकोरिया की शिकायत रहती है तो गुदूदे मन्वियह की हरारत में ख़लल आजाता है, कभी गर्म कभी सर्द कभी ख़ुशकी पैदा हो जाएगी, कभी बहुत ज़्यादा तरी पैदा हो जाएगी, यानी कोई मुस्तक़िल मिज़ाज नहीं रह जाता है गेज़ा के हिसाब से लुआब के अंदर तबदीली आती है और जब रहेम के अंदर कोई बीमारी नहीं रहती तो रहेम के अंदर का निज़ाम बेहतर रहता है और जब लिकोरिया की बीमारी मुसलसल होजाती है तो गुदूदे मन्वियह के गोश्त के रेशा के बीच की जगह यानी खुलिया मुर्दा होने लगता है, यानी रेशा के बीच की जगह ख़त्म होने लगती है और लुआब की मिक़दार घट जाती है और हैज़ का निज़ाम बिगड़ने लगता है, अगर शादी से पहले लड़की को ये बीमारी हो जाए तो **लिकोरा टैब्लेट** के इस्तेमाल से लिकोरिया की बीमारी ख़त्म हो कर रहेम का निज़ाम बेहतर होजाता है और कई दूसरी बीमारीयों से बचाव और कमज़ोरी से निजात मिल जाती है, और अगर शादी होने के बाद हैज़ का निज़ाम बिगड़ना शुरू हो गया है तो, या तो मर्द औरत की मर्ज़ी के बग़ैर सोहबत करता हो यानी औरत जब तक पूरी तरह से सोहबत के लिए राज़ी और तैयार ना हो जाए या मर्द के अंदर की कमज़ोरी को औरत हज़म करले और औरत बहुत ज़्यादा सबरी हो, तो ऐसी औरत को भी सफ़ेद पानी की बीमारी होते रहती है, औरत की इस बीमारी का इलाज करते रहना चाहीए इसकी वजह ये है कि जब सफ़ेद पानी ख़ारिज होने लगता है तो औरत का जोश जुनून यानी निस्वानियत ख़त्म होजाती है, मर्द की ज़रूरत के वक़्त बड़ी कोशिश के बाद अगर तैयार हो जाए तो औरत को क़ुदरती लज़्ज़त का एहसास नहीं होता है, मर्द के आज़ाए तनासुल की रगड़ से जब तक औरत को जोश आता है तब तक बहुत देर होजाती है और मर्द को अंज़ाल होजाता है इस तरह मर्द औरत दोनों को क़ुदरती लज़्ज़त का एहसास इतना नहीं हो पाता की दोनों को मुकम्मल सुकून का एहसास हो जाए, इस लिए मर्द औरत दोनों की बीमारी उलझते रहती है और दिमाग के अंदर ख़लल पैदा होजाता है, अंदरूनी टेंशन(दिमाग़ी तनाव) बना रहता है और औरत को कई तरह की छोटी बड़ी बीमारीयों का सिलसिला चलते रहता है, और हमल ना ठहरने का और भी कई तरह का अस्बाब बन जाता है, औरतों के रहेम या गुदूदे मन्वियह के गोश्त का रेशा के बीच की जगह का लुआब ख़त्म हो कर खुलिया मुर्दा होने लगता है तो

गोश्त का रेशा एक दूसरे रेशा में चिपक कर मुर्दा हो जाता है, अब इस मुर्दा रेशा की गर्मी ख़ुशकी से उसके इर्द गिर्द का खुलिया मुर्दा हो कर उसी गोश्त के रेशा में चिपक कर गाँठ गिलटी की शक्ल एख्तियार कर लेता है, शुरूआती दौर में ये बारीक खसखास के दाना जैसी रहती है बाद में धीरे धीरे इर्द गिर्द के खुलिया मुर्दा हो कर बड़ी गाँठ गिलटी की शक्ल एख्तियार कर लेते हैं, बाज़ औरतों में एक दो गाँठ बड़ी होती है और बाक़ी इर्द गिर्द में बारीक खसखास के जैसी छोटी छोटी होती है और बाज़ औरतों के रहेम के अंदर बड़ी गाँठ गिलटी नहीं होती है सिर्फ खसखास के दाना जैसी बारीक बारीक बेशुमार दाना होता है और बाज़ औरतों को सिर्फ एक या दो गाँठ होती है लेकिन ये गाँठ बड़ी रहती है, गाँठ गिलटी जिस्म के किसी भी हिस्सा में है इसके गाँठ बन जाने का एक ही तरीक़ा होता है की लुआबी गोश्त के रेशा का खुलिया मुर्दा हो जाता है और गोश्त का रेशा एक दूसरे रेशा में चिपकते हुए धीरे धीरे गाँठ की शक्ल एख्तियार कर लेता है, दूसरी सबसे बड़ी हक़ीक़ीत ये है की गाँठ सिर्फ और सिर्फ लुआबी आज़ा में होती है यानी जिस गोश्त में लुआब रहता है और ख़ून वाले गोश्त में गाँठ नहीं होती है, अगर औरत के रहेम के अंदर किसी भी शक्ल की गाँठ गिलटी हो तो हमल नहीं ठहरता है क्यों की पूरे रहेम का क़ुदरती निज़ाम बिगड़ जाता है इस लिए गाँठ गिलटी का इलाज कर लेना बेहतर है और अगर गाँठ गिलटी है तो ये गाँठ गिलटी भी आसानी के साथ गल जाती है, औरत तमाम बीमारीयों से छुटकारा पालेती है, इन सभी बीमारीयों को ख़त्म करने के लिए और इस बीमारी का इलाज करने के लिए इस दवा से मदद हासिल करें।

बेऔलाद औरत की बीमारी के इलाज की दवा ये है

बे औलाद औरत की बीमारी का ईलाज इस दवा से करें

फानूस तेल | **माजून ज्वाला खास** | **लिकोरा टैब्लेट** | **लबाब शबाब माजून**

अगर सफ़ेद पानी ख़ारिज हो रहा है तो सिर्फ **लिकोरा टैब्लेट** से पानी का ख़ारिज होना बंद होजाता है लेकिन इसके साथ में **माजून लबाब शबाब** को इस्तेमाल करा देने से कमर दर्द, पैरों का दर्द कमज़ोरी ख़त्म होजाती है और लुआब की पैदाइश में इज़ाफ़ा होजाता है, इस से रहेम की कमज़ोरी ख़त्म होने में मदद मिलती है, और अगर सफ़ेद पानी दही छाछ की तरह का हो गया है तो **लिकोरा टैब्लेट** और **माजून लबाब शबाब** के साथ **फानूस तेल** को भी इस्तेमाल करें, **फानूस तेल** शर्मगाह के अंदर सोते वक़्त कॉटन का कपड़ा भीगा कर रखें सुबह को निकाल कर फेंक दें और अगर हैज़ बंद हो गया है या

हैज़ की तादाद में कमी आगई है या एक दो दिन हैज़ आकर बंद होजाता है या एक दो महीना टाइम टेबल से आजाता है उसके बाद एक दो महीना ग़ायब होजाता है, हैज़ आता ही नहीं है या कभी एक दिन आएगा, किसी महीना हैज़ चार पाँच दिन आएगा कभी आएगा ही नहीं, तो हैज़ की इन सारी अलामतों में से कोई भी अलामत मौजूद हो या कई अलामात मौजूद हैं तो इस दवा को इस्तेमाल करने से हैज़ का निज़ाम मुकम्मल होजाता है, **माजून ज्वाला खास** और साथ में चलाएं **माहेरवाँ टैब्लेट** और अगर सफ़ेद पानी ख़ारिज हो रहा है तो एक दो डब्बा **लिकोरा टैब्लेट** साथ में इस्तेमाल करा दें और अगर शर्मगाह में दही छाछ की तरह का पानी हो गया है तो सिर्फ एक हफ़्ता तक **फानूस तेल** शर्मगाह के अंदर सोते वक़्त रखवा दो और सुबह को निकाल कर फेंक दो।

अगर किसी औरत को हमल नहीं ठहरता है तो सबसे पहले ये जानकारी मालूम करो की औरत को सफ़ेद पानी ख़ारिज होता है या नहीं और अगर होता है तो पानी कलर का लिकोरिया का मर्ज़ है तो सिर्फ **लिकोरा टैब्लेट** के इस्तेमाल से ये मर्ज़ ख़त्म होजाता है और अगर जिस्म की ताक़त बढ़ाना मक़सद है तो इसके साथ **माजून लबाब शबाब** इस्तेमाल करा दें, और दूसरी ख़राबी ये है की अगर औरत को कमर दर्द और पैर के गोश्त में खिंचाव है तो इसका मतलब ये है की औरत के गुदूदे मन्वियह का अंडा फ़ासिद हो कर लुआब के साथ शर्मगाह में जमा हो कर शर्मगाह और बच्चेदानी दोनों के गोश्त का रेशा और खुलिया दोनों को ख़राब कर रहा है, तो ऐसी औरत के हैज़ का निज़ाम ख़राब होना यक़ीनी है और बच्चेदानी और गुदूदे मन्वियह के अंदर अगर गाँठ गिलटी ना हो तो खसखास के दाना जैसी बहुत ज़्यादा बारीक और बहुत ज़्यादा तादाद में होते हैं, यही दाना एक दूसरे में मिल कर बाद में गाँठ गिलटी की शक्ल एख्तियार कर जाते हैं इस लिए दोनों बीमारी का एक ही इलाज है, चाहे बड़ी गाँठ गिलटी हो या बारीक खसखास के जैसी हो दोनों तरह की बीमारी में बच्चेदानी या गुदूदे मन्वियह के गोश्त के रेशा का खुलिया मुर्दा हो कर खुलिया ख़त्म हो जाने से गाँठ गिलटी की बीमारी होती है, इस में फ़र्क़ ये होता है की खसखास के दाना जैसी गाँठ हो या हैज़ बंद हो गया है, ये बीमारी दो तीन महीना में ख़त्म होजाती है और गाँठ गिलटी में दो तीन महीना से ज़्यादा लग जाता है, बड़ी गाँठ गिलटी को ख़त्म करने का तरीक़ा ये है की दवा शुरू करने से पहले रिपोर्ट निकालो की गाँठ गिलटी की साइज़ क्या है, उसके बाद दवा को शुरू कर दें, अब दो महीना पूरा होने के बाद दुबारा रिपोर्ट निकालो, अब आपको मालूम हो जाएगा की गाँठ गिलटी का कितना हिस्सा छोटा हुआ या गाँठ ख़त्म हो गई है, अगर गाँठ का कुछ हिस्सा छोटा हो गया है तो इसी से अंदाज़ा कर के कुछ दिन तक दवा चलाएँ, इसके बाद रिपोर्ट निकाल कर इतमीनान करलें, एक ख़ास बात ये भी याद रख्लो की अगर गाँठ गिलटी ख़त्म होगई है तो पंद्रह दिन या एक महीना बेज़रूरत दवा को ज़्यादा इस्तेमाल करें ताकी अगर किसी रेशा या खुलिया के अंदर ख़राबी या कमज़ोरी है तो मुकम्मल ख़त्म हो जाएग ताकि दुबारा होने का चांस ना रहे, इस दोनों तरह की बीमारी में जो दवा को इस्तेमाल करना है उसका नाम और फ़ायदा ये है, " **माजून ज्वाला खास** " इस दवा की ख़ासीयत ये है की पूरे जिस्म के लुआबी आज़ा के गोश्त और उसके रेशा और

खुलिया को मुतहर्रिक करता है और लुआबी आज़ा की हरारते अज़ीज़िया को बढ़ाता है, और मुर्दा खुलिया के रेशा को खोलने में मदद करता है, गुदूदे मन्वियह और बच्चेदानी की ताक़त को बढ़ाने में मदद करता है और दूसरी दवा का नाम है **माहेरवाँ टैब्लेट** ये दवा गुदूदे मन्वियह में अंडे की पैदाइश को बढ़ाने में मदद करता है और गुदूदे मन्वियह और रहेम के हर आज़ा को मुतहर्रिक करता है और बच्चेदानी की ताक़त को बढ़ाता है और हैज़ से होने वाली दर्द तक्लीफ को ख़त्म करता है और हैज़ को जारी करने में मदद करता है, इस दोनों दवा को एक साथ चलाना है और ये तीसरी दवा को कम से कम एक हफ़्ता तक इस्तेमाल करना ज़रूरी है, उसका नाम है **फानूस तेल**, इस तेल की बेहतरीन ख़ासीयत ये है की सडे गले हुए ज़ख़म को मवाद से पाक साफ़ करता है और ज़ख़म की ग़लाज़त और ताफ़्फ़ुन को ख़त्म करता है और गोश्त के रेशा और खुलिया को ज़िंदा करने में मदद करता है इसी लिए हर तरह के गहरे ज़ख़म, सूजन, कटे, फटे, जले हुए ज़ख़म की दर्द जलन को ख़त्म करता है, इस तरह के हर ज़ख़म को ख़त्म करके उस जगह किसी तरह का दाग़ और ज़ख़म का निशान ख़त्म कर देता है, ये तेल शर्मगाह के अंदर रखना इस लिए ज़रूरी है क्यों की शर्मगाह के अंदर गेहूँ के दाना जैसा मोटा रेशा होता है इसके मुंह पर सुराख़ होता है, जब औरत की मनी का अंडा फ़ासिद होजाता है तो शर्मगाह के अंदर दही छाछ की तरह का फ़ासिद माद्दा की परत जम जाती है, शर्मगाह के अंदर के उभरे हुए रेशा में लिपटी रहती है और शर्मगाह के अंदर ताफ़्फ़ुन पैदा करके शर्मगाह के अंदर हद से ज़्यादा ख़राबी पैदा कर देता है और उभरे हुए रेशों को और गोश्त के अंदर के रेशा खुलिया को बहुत ज़्यादा ढीला और कमज़ोर करने का ज़रीया बन जाता है और शर्मगाह को ख़राब कर देता है, इस लिए औरत को जलन और दर्द का एहसास होता है, शर्मगाह के अन्दर ये ऐब कई तरह की ख़राबी का ज़रीया है, इस से औरत को लज़्ज़त का एहसास कमज़ोर होजाता है और हमल ना ठहरने यानी हमल ख़राब होने का ज़रीया बन जाता है, ये **फानूस तेल** शर्मगाह के अंदर की सारी ग़लाज़त को साफ़ कर के उसके रेशा और खुलिया के अंदर के ताफ़्फ़ुन और ग़लाज़त को ख़त्म कर के उसके रेशा और खुलिया को खुलने में मदद करता है और शर्मगाह के अंदर जमी हुई गाढ़ी लुआबी ग़लाज़त की परत को साफ़ करके फितरी नयापन यानी नौजवानी के एहसास और लज़्ज़त को बढ़ाने में मदद करता है, **फानूस तेल** के इस्तेमाल से मर्द और औरत दोनों की लज़्ज़त में इज़ाफ़ा हो जाता है।

तेल, माजून, टैब्लेट को इस्तेमाल करने का तरीक़ा

फानूस तेल को इस्तेमाल करने का तरीक़ा ये है, कॉटन के पुराने और साफ़ कप्डे को फानूस तेल में भिगा कर शर्मगाह के अंदर सोते वक़्त रात को रख लो और सुबह को निकाल कर फेंक दो, ईसी तरह से कम अज़ कम एक हफ़्ता ज़रूर रखवाएं और लिकोरा टैब्लेट दो सुबह को दो टैब्लेट शाम को सादा पानी से इस्तेमाल करें, और दोनों माजून दस ग्राम सुबह को दस ग्राम शाम को सादा पानी से इस्तेमाल करें, अगर दवा खाली पेट खाते हो तो ज़्यादा बेहतर है और अगर तीनों दवा को इस्तेमाल करना है तो एक साथ में खा सकते हो गैप करने की ज़रूरत नहीं है और इस दवा में कोई परहेज़ नहीं है।

हैज़ की कमी या हैज़ का बंद होजाना उसके इलाज का तरीक़ा

बंद हैज़ को जारी करने केलिए
इस दवा को इस्तेमाल करें

माहेरवाँ टैब्लेट **ज्वाला खास माजून**

सफ़ेद पानी लुआब के जैसा है या दही के फुटकी की तरह का
है उसकी वजह से हैज़ में कमी है तो इस दवा से ईलाज करें

लबाब शबाब माजून **माहेरवाँ टैब्लेट** **लिकोरा टैब्लेट**

हैज़ कम से कम चार दिन आना ज़रूरी है अगर चार दिन से कम हैज़ आ रहा है तो ये रहेम के अंदर सफरावी हरारत ऐतेदाल से ज़्यादा होने की अलामत है अगर बच्चे दानी में हरारत ऐतेदाल पर होगी तो बच्चेदानी के रेशों में मौजूद मनी के अंडे पच्चीस से अट्ठाईस दिन के अंदर ख़ून में तबदील हो कर हैज़ की शक्ल में जारी होजाते हैं और दुबारा रहेम अपने दूसरे मरहले की शुरूआत कर देता है। दूसरा मरहला ये होता है कि पच्चीस दिन तक बच्चेदानी आने वाले मेहमान का इंतेज़ार करती है अगर इसी दरमयान हमल ठहर जाता है तो ये बच्चेदानी का मेहमान हो जाता है और रहेम की मनी और अंडे सब मेहमान की परवरिश में ख़र्च हो जाते हैं और हैज़ फौरन बंद हो जाता है क्योंकि रहेम अपने कुदती निज़ाम की तरफ़ लौट जाता है, और अगर औरत को चार से सात दिन तक हैज़ आरहा है तो ये औरत के रहेम के सेहत मंद और क़ुदरती हालत पर होने की अलामत है, अगर हैज़ चार दिन से कम आ रहा है तो ये बच्चेदानी के बिगड़े हुए निज़ाम की अलामत है ज़्यादा तर औरतों में हैज़ की कमी का असल सबब सफ़ेद पानी की शिकायत लिकोरिया है जिसकी वजह से मनी ज़ाए होजाती है और बच्चेदानी की अंदरूनी दीवार और बच्चेदानी के रेशे कमज़ोर और ढीले होजाते हैं, बच्चेदानी की हरारत में कमी पैदा हो जाती है, अगर सफ़ेद पानी की वजह से हैज़ में कमी पैदा होगी तो कमर दर्द, कमज़ोरी, सुस्ती, शदीद दर्द के साथ हैज़ का जारी होना, जुफ़्ती की ख्वाहिश ख़त्म हो जाना और जुफ़्ती के वक़्त दर्द या जलन का होना इसकी अलामतें हैं। अगर ये अलामतें ज़ाहिर हों तो ये साबित होता है कि सफ़ेद पानी की वजह से हैज़ में कमी पैदा हुई है, पहले इस्का इलाज करें **लिकोरा टैब्लेट** और **माजून लबाब शबाब** इन दोनों दवाओं को एक साथ इस्तेमाल करें, पहले पंद्रह दिन में या दूसरे पंद्रह दिन की दवा से पूरी तक्लीफ ख़त्म हो जाएगी, पहले पंद्रह दिन में अगर हैज़ आगया तो अंदाज़ा करें हैज़ में क्या बदलाव आया, अगर हैज़ बढ़ गया और तक्लीफ में कमी पैदा हुई तो दवा को कुछ दिनों तक जारी रखें, अगर एक महीना में तक्लीफ ख़त्म नहीं होती है तो रहेम के अंदर कमज़ोरी है और गुदूदे मन्वियह का रेशा खुलिया पूरी तरह से मुतहर्रिक नहीं है इस लिए बच्चेदानी और गुदूदे मन्वियह को मुतहर्रिक करने के लिए **माहेरवाँ टैब्लेट** और साथ में **माजून ज्वाला खास** को इस्तेमाल करें हैज़ की कमी और बंद हैज़ जारी हो जाएगा, दो दवा

एक साथ चलाएँ अगर कमज़ोरी भी है तो साथ में **माजून सलाम** भी दो से तीन महीने तक इस्तेमाल कराएँ।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून दो दो टैब्लेट सुबह ख़ाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें इसी तरह शाम को खाना खाने से एक या दो घंटा पहले दस दस ग्राम माजून दो दो टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें।

नसयान यानी भूलने की बीमारी या दिमाग कमज़ोर हो गया हो उसके इलाज का तरीक़ा

अगर बड़ी उमर के लोगों में नसयान दिमागी कमज़ोरी है तो इस दवा को इस्तेमाल करें

सलाम माजून **शबाबे कलबिया माजून**

बच्चों की हड्डियों को मज़बूत करने जिस्म को बढ़ने दिमाग को ताक़त देने में मदद करता है, कमज़ोर मरीजों की ताक़त बढ़ाने केलिए, ज़च्की के बाद औरतों जिस्म में ताक़त और चमक और दूध को बढ़ाने केलिए इस्तेमाल करें

सलाम माजून

अगर भूलने की बीमारी है और दिमाग कमज़ोर हो गया है या इस तक्लीफ में ज़्यादा दिन से मुबतला हैं और सर में दर्द, आँखों की रोशनी कमज़ोर होना शुरू होगई है, नींद में कमी आगई है, जिस्म कमज़ोर हो गया है, तो ऐसी हालत में इस दवा से फ़ायदा उठाएं, **माजून सलाम** और **माजून शबाबे कलबिया** और अगर सिर्फ भूलने की बीमारी है दिमाग कमज़ोर हो गया है तो **माजून शबाबे कलबिया** इस्तेमाल करें और अगर बच्चों को भूक की कमी जिस्मानी कमज़ोरी और दिमाग़ी कमज़ोरी है तो **माजून सलाम** इस्तेमाल करें इस से जिस्म के हर आज़ा में क़ुदरती ताक़त और हड्डीयों में मज़बूती दिल और दिमाग में क़ुव्वत पैदा होजाती है, इस माजून को बच्चों का कमज़ोर मेदा भी हज़म कर लेगा और बदन में चुसती फुर्ती बढ़ जाएगी, आँखों में रोशनी पैदा होगी, नसयान ख़त्म होजाएगा, याददाश्त बढ़ जाएगी, पढ़ने लिखने और सोचने की सलाहीयत में इज़ाफ़ा होगा और बच्चों का जिस्म तेज़ी से बढ़ने लगता है, हड्डी और नसों में मज़बूती पैदा होती है, माजून सलाम बच्चों के इलावा कमज़ोर मरीज़ों और ज़चकी के बाद औरतों को ताक़त देने में मदद करता है।

तरीक़ा इस्तेमाल

बड़ी उम्र के लोग दस दस ग्राम माजून सुबह ख़ाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को खाना खाने से एक दो घंटा पहले दस दस ग्राम माजून सादा पानी से इस्तेमाल करें और बच्चों को पाँच ग्राम माजून सुबह ख़ाली पेट सादा पानी से खिलाएं और इसी तरह शाम को भी पाँच ग्राम माजून ख़ाली पेट सादा पानी से खिलाएं।

बच्चा दानी या पीस्तान में गाँठ गिलटी हो उस को गलाने का तरीक़ा इलाज

अगर बच्चा दानी में गांठ गिल्टी है तो उसको गलाकर खतम करने केलिए इस दवा को इस्तेमाल करें

माहेरवाँ टैब्लेट

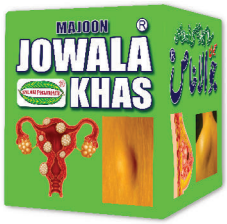

ज्वाला खास माजून

अगर पीसतान में गाँठ गिल्टी है तो उस को गलाकर खतम करने केलिए इस दवा को इस्तेमाल करें

कलबिया मोतदिल माजून

ज्वाला खास माजून

गाँठ गिलटी लुआबी आज़ा में ख़राबी पैदा होने से या लुआबी आज़ा में ख़राश पैदा हो कर रतूबत मुंजमिद होने से होजाती है पिस्तान के अंदर बेशुमार खुलिया होता है और इस जगह लुआब आने के बाद दूध में तबदील होजाता है लेकिन ये निज़ाम उस वक़्त तक नहीं बदलता है जब तक रहेम के अंदर किसी मेहमान की आमद ना हो जाये, एक बार हमल ठहर गया तो पीसतान का बेशुमार खुलिया मुतहर्रिक हो कर निज़ामे क़ुदरत में आ जाता है यानी दूध पैदा करने वाला खुलिया और लुआब का खुलिया दोनों एक साथ मुतहर्रिक होने के लिए मिलना शुरू हो जाता है, अगर हमल गिर गया तो भी दोनों तरह के खुलिया अपने क़ुदरती निज़ाम में आजाते हैं, जब तक लड़की कुँवारी या बग़ैर हमल के है तब तक सिर्फ लुआबी खुलिया मुतहर्रिक रहता है, अगर कुँवारी लड़की के लुआब में फ़साद पैदा होजाए तो ऐसी लड़की को गाँठ गिलटी जिस्म के दूसरे हिस्सा में होगी यानी ऐसी गाँठ चर्बी की गाँठ में शुमार होगी और इस तरह की गाँठ से कैंसर का ख़तरा नहीं होता, लेकिन अगर गाँठ पीसतान में है तो ऐसी गाँठ को मामूली ज़ख़म भी ख़ुशक होने से पहले ख़राब हो कर जरासीम को पैदा कर लेता है, अगर गाँठ में किसी भी तरह का ज़ख़म या इंजेक्शन से पानी वग़ैरा निकाला गया है तो दो महीना तक दवा चलाएँ और इसी से अंदाज़ा करके आगे का इलाज शुरू करके मुकम्मल गाँठ को गलाएं क्योंकि गाँठ का कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं किया जा सकता, पिस्तान की गाँठ गिलटी में **माजून ज्वाला ख़ास** और **माजून कलबिया मोतदिल** इसी दोनों दवा से मुकम्मल शिफा हो जाति है अगर सूजन और जरासीम का यक़ीन हो तो साथ में पंद्रह दिन या एक महीना तक **बासीर टैब्लेट** और **मगज़ीन टैब्लेट** का इज़ाफ़ा करलें, अगर रहेम(बच्चेदानी) में गाँठ गिलटी है तो उसकी बहुत सारी वजूहात हैं, मुख़्तसर ये है कि अक्सर इसक़ाते हमल की दवा बच्चेदानी को सिकोड़कर हमल को बाहर करती है इसी लिए रहेम की दीवार पर जिस जगह हमल ठहरा होता है वहां ज़ख़म बन जाता है और ये ज़ख़म गाँठ गिलटी के इलावा ट्यूमर भी बन सकता है क्योंकि इस जगह बढ़ाने की सिफ़त होती है, मुख़्तसर ये है कि अगर बच्चेदानी में गाँठ है तो पहले रिपोर्ट निकालें, उसके बाद दो महीना तक दवा को इस्तेमाल करें और दुबारा रिपोर्ट निकाल कर ये अंदाज़ा करें की दो महीना की दवा से कितना फ़ायदा

हुआ है, उसी से अंदाज़ा कर के आगे इलाज शुरू करें, ख़त्म होने तक रिपोर्ट से मालूम करके इतमिनान करलें, रहेम के अंदर गाँठ है तो **माहेरवाँ टैब्लेट** और **माजून ज्वाला खास** इस्तेमाल करें, सूजन का यक़ीन हो तो **बासीर टैब्लेट** इस्तेमाल करें इनशाअल्लाह कामिल शिफा होगी।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून दो दो टैब्लेट **माहेरवाँ** और अगर **बासीर टैब्लेट** इस्तेमाल कर रहे हैं तो एक टैब्लेट **बासीर** में से सुबह ख़ाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को भी दस दस ग्राम माजून दो दो टैब्लेट और अगर **बासीर** इस्तेमाल कर रहे हैं तो इस में से एक टैब्लेट खाना खाने से एक या दो घंटा पहले सादा पानी से इस्तेमाल करें।

दूध की कमी या बच्चा पैदा होने के बाद की कमज़ोरी के इलाज का तरीक़ा

जचकी के बाद ताक़त और दूध बढ़ाने केलिए इस दवा को इस्तेमाल करें

सलाम माजून

अगर साथ में ये भी चलाएँ तो बेहतर है

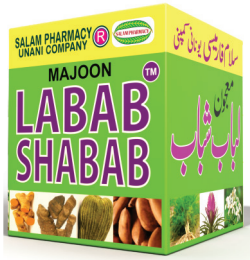

लबाब शबाब माजून

शबाबे कलबिया माजून

जचकी यानी बच्चा पैदा होने के बाद औरतों के जिस्म से क़ुदरती ताक़त कमज़ोर होजाती है इस लिए औरतों को बच्चा पैदा होने के बाद क़ुदरती दवाओं और ग़िज़ाओं से ताक़त देना बेहतर है ऐसा करने से जिस्म के हर हिस्सा में दुबारा क़ुदरती ताक़त और क़ुदरती चमक पैदा होजाती है और हर तरह की कमज़ोरी ख़त्म होजाती है, तमाम आज़ा दुबारा मुतहर्रिक हो जाते हैं, **माजून सलाम** के इस्तेमाल से औरतों में दूध की कमी ख़त्म हो जाती है और दूध के ज़रीया बच्चा के जिस्म में अच्छी सेहत और बेहतरीन ताक़त का इज़ाफ़ा होता है अगर **माजून सलाम** के साथ **माजून लबाब शबाब** या **माजून शबाबे कलबिया** का इज़ाफ़ा कर दें तो बेहतर नताइज मिलेंगे, ज़च्चा(बच्चा पैदा करने वाली औरत)और बच्चा दोनों की हड्डीयों में मज़बूती के साथ ठोस और ताक़त में इज़ाफ़ा होता है और जिस्म के हर अंग में चमक ज़ाहिर होने लगती है।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और आधा घंटा कुछ भी ना खाएँ, इसी तरह शाम को खाना खाने से एक या दो घंटा पहले दस दस ग्राम माजून सादा पानी से इस्तेमाल करें।

शूगर बीमारी नहीं होने वाले बीमारीयों की अलामत है और उसके इलाज का तरीक़ा

शुगर है तो ये दवा इस्तेमाल करें

जामुनी मेथी टैब्लेट

अगर इस दवा का इज़ाफ़ा करें तो ज़्यादा बेहतर होगा

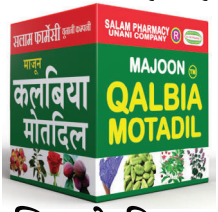

कलबिया मोतदिल माजून

बदन में लुआब की कमी पूरी करने और लुआब की कमी से होने वाली कमजोरी थकावट, पैर में खींचाव वगैरा को कम करने केलिए इस दवा का इज़ाफा करते हो तो बेहतर है

याकूत मुकव्वी खास टैब्लेट

जामुनी मेथी टैब्लेट आपका शूगर नहीं घटाता, इस दवा में शूगर घटाने की सिफ़त नहीं है, **जामुनी मेथी** शूगर को ख़त्म करने में मदद करता है, शूगर ख़ुद कोई बीमारी नहीं है क्योंकि शूगर हर इन्सान में होता है, शूगर बढ़ना होने वाली बीमारीयों की अलामत है, जब मेदा और लीवर कमज़ोर होजाते हैं तो लुआब की पैदाइश घट जाती है, लुआब में से ही नस और हड्डी को ठोस करने वाला गोंद निकलता है, और इसी के अंदर से इंसुलिन भी निकलती है और जब लुआब की पैदाइश कम होती है तो इंसुलिन की पैदाइश घट जाती है और शूगर बढ़ने लगता है और नसों की बीमारी अपना हाथ बढ़ाकर आपसे चिपक जाती हैं, सबसे पहले जिन्सी बीमारी गुप्त रोग है और इसके बाद ब्लड प्रैशर आया और इसके बाद बड़ी बड़ी बीमारीयों की लाईन लग जाती है। हमारी दवा **जामुनी मेथी टैब्लेट** सिर्फ़ ताक़त की दवा है, जिस आज़ा(अंग) के कमज़ोर होने से शूगर बढ़ना शुरू हुआ है उस आज़ा(अंग) में मज़बूती पैदा करके शूगर को ख़त्म करने में मदद करता है, पहले पंद्रह दिन की दवा से शूगर की अलामत यानी हाथ पैर में झनझनाहट थरथराहट ख़त्म होगी, दूसरे पंद्रह दिन की दवा से शूगर घटना शुरू होगा और जब नसों को ठोस करने वाला गोंद जिस्म के अंदर बढ़ेगा तो जिन्सी आज़ा फिर से बेदार होंगे लेकिन आपको मीठे की तरह औरत से भी परहेज़ रखना होगा और जब आपका शूगर हमारी दवा जामुनी मेथी से ऐतेदाल पर आजाए तो थोड़ा थोड़ा परहेज़ ख़त्म करना शुरू करदो और दवा को चालू रखू, जब परहेज़ ख़त्म होने के बाद शूगर का घटना बढ़ना ख़त्म हो जाएगा और एक ही शक्ल में रहने लगे तब आप दवा को बंद कर सकते हैं, **जामुनी मेथी टैब्लेट** से आपको सबसे बड़ा फ़ायदा ये होगा कि शूगर होते हुए भी आपके अंदर शूगर की कोई अलामत नहीं रहेगी, अगर **जामुनी मेथी टैब्लेट** के साथ **माजून कलबिया मोतदिल** भी शुरू कर दें तो **कलबिया मोतदिल** से ये फ़ायदा होगा की नसों में जो कमज़ोरी पैदा हुई है ये कमज़ोरी ख़त्म होगी और जिस्म के हर आज़ा दुबारा मुतहर्रिक होंगे और जिस्म के हर आज़ा रवानी की तरफ़ वापस आने लगते हैं, जब **माजून कलबिया मोतदिल** और

जामुनी मेथी को चलाते हुए दो से ढाई महीना हो जाए तो **मगज़ीन टैब्लेट** का इज़ाफ़ा कर लें, इस टैब्लेट से जिस्म का ढीलापन और जरासीम ख़त्म होजाती है और सेहत काएमी की तरफ़ आने लगती है और धीरे धीरे शूगर का बढ़ना ख़त्म होजाता है और जिस्म के अंदर हर तरह की ताक़त और क़ुव्वत बढ़ने लगती है और बीमारीयों का ख़तरा ख़त्म हो कर सेहत काएम होजाती है।

तरीक़ा इस्तेमाल

दो-दो टैब्लेट और अगर माजून है तो दस दस ग्राम माजून सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें, इसी तरह शाम को खाना खाने से एक या दो घंटा पहले दो दो टैब्लेट और दस दस ग्राम माजून सादा पानी से इस्तेमाल करें।

और अगर साथ में **याकूत टैब्लेट** भी इस्तेमाल कर रहे हैं तो चार-चार टैब्लेट सुबह शाम बाकी दवाओं के साथ खाले पेट सादे पानी से इस्तेमाल करें।

परहेज़: तमाम परहेज़ जो शूगर के मरीज़ करते हैं और बदन में ताक़त महसूस होने पर जिन्सी ख़ाहिशात पर भी काबू रखें, जैसे जैसे बदन क़ुदरती हालत पर आता जाएगा जिन्सी ख़ाहिशात में इज़ाफ़ा होता जाएगा इसलिए इलाज के दरमयान जुफ़्ती से भी परहेज़ करें ये आप और आपकी सेहत के लिए बेहतर है।

हैज़ ज़्यादा या बहुत ज़्यादा आरहा है या मुसलसल हैज़ जारी रहता है या बेतरतीब है, इसके इलाज का तरीक़ा

हैज़ बहोत ज़्यादा अरहा है तो इस दवा को इस्तेमाल करें मुकम्मल आराम होगा

जखमीनों टैब्लेट | बासीर टैब्लेट | बरगीन टैब्लेट

अगर कमज़ोरी बहोत ज़्यादा है तो इस दवा का इज़ाफ़ा करें

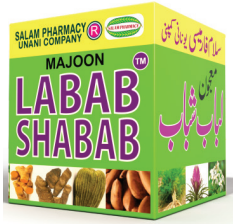

लबाब शबाब माजून

अगर लीकोरिया की बीमारी साथ में है तो इस दवा को इस्तेमाल करें

लिकोरा टैब्लेट

हैज़ का क़ुदरती निज़ाम है हर महीना जारी होने वाली तारीख़ को पकड़ा जाता है यानी जिस दिन हैज़ जारी हुआ था दुबारा हैज़ अट्ठाईस दिन या तीस दिन पूरा होते ही दुबारा हैज़ जारी हो गया है तो ये हैज़ अपने ठीक वक़्त पर जारी हुआ है दो से तीन दिन की कमी बेशी को ख़राबी में शुमार नहीं होता है, और हैज़ का सही वक़्त है कम से कम चार दिन और ज़्यादा से ज़्यादा सात दिन तक हैज़ रहना चाहीए और अगर आठ दिन तक हैज़ रहता है तो ये भी ख़राबी नहीं है लेकिन अगर हैज़ चार दिन से

सात दिन रहने के बाद बंद हो गया और दुबारा दस दिन के बाद या पंद्रह दिन के बाद या बीस दिन के बाद या बाईस दिन के बाद दुबारा जारी होजाता है तो ये हैज़ में ख़राबी का शुमार होगा, या दो चार दिन तक हैज़ जारी हो कर एक हफ़्ता तक बंद रहा फिर दुबारा हफ़्ता दस दिन में जारी बंद जारी बंद रहता है हैज़ तो ये बच्चेदानी और गुदूदे मन्वियह के अंदर हिस ऐतेदाल से बहुत ज़्यादा है, आम सेहत की हालत में गुदूदे मन्वियह पच्चीस दिन के बाद मुतहर्रिक होजाता है और तीन से चार दिन के बाद गुदूदे मन्वियह के गोश्त के रेशा के बीच खुलिया के अंदर माद्दाए मन्वियह में मौजूद अंडों की पहली परत का अंडा ख़ून में तबदील हो कर हैज़ की शक्ल में बाहर की तरफ़ जारी होजाता है दूसरे दिन दूसरी परत का अंडा ख़ून में तबदील हो कर बाहर की तरफ़ ख़ारिज होजाता है, बच्चेदानी के गुदूदे मन्वियह में कुल सात परत होती है गुदूदे मन्वियह के रेशा के बीच खुलिया में जितनी मनी(लुआब) होगा उसी हिसाब से हैज़ जारी होता है, अगर गुदूदे मन्वियह में लुआब भरा हुआ है तो सात दिन तक हैज़ जारी होगा और अगर गुदूदे मन्वियह में हिस्स ऐतेदाल से कुछ ज़्यादा है तो बच्चेदानी मुतहर्रिक होजाती है और लुआब की मिक़दार कम होजाती है इस लिए हैज़ की मिक़दार घट जाती है और अगर बच्चेदानी हद से ज़्यादा हस्सास और मुतहर्रिक है तो बच्चेदानी के अंदर जल्दी जल्दी अंडा खून में तबदील हो कर ख़ारिज होता रहेगा इस लिए इसका इलाज कर लेना बहुत ज़रूरी होता है वर्ना कुछ दिन के बाद बच्चेदानी में इतनी ख़राबी पैदा होजाती है की गाँठ गिलटी और हैज़ में हर तरह की ख़राबी पैदा होना आसान होजाता है और शादी के बाद हमल ठहरने में रूकावट पैदा होजाती है, इस बीमारी का बहुत आसान और बेहतरीन इलाज ये है की **जखमीनो टैब्लेट** और **बरगीन टैब्लेट** और **बासीर टैब्लेट** ये तीनों टैब्लेट एक साथ में इस्तेमाल करें पहले महीना में आराम हो जाएगा और दो से तीन महीना तक मुसलसल इस्तेमाल कर लेने से ये बीमारी से मुकम्मल आराम होजाता है और पंद्रह दिन या एक महीना तक **लिकोरा टैब्लेट** का इज़ाफ़ा कर लेने से ज़्यादा बेहतर होता है और अगर मुसलसल हैज़ जारी रहने की वजह से कमज़ोरी पैदा हो गई है तो साथ में **माजून लबाब शबाब** का इज़ाफ़ा करलें इस से जिस्म के अंदर लुआब की पैदाइश बढ़ जाती है और बच्चेदानी और गुदूदे मन्वियह में ताक़त ऐतेदाल पर आजाती है।

तरीक़ा इस्तेमाल

जखमीनो टैब्लेट, बरगीन टैब्लेट और **बासीर टैब्लेट** इन तीनों दवाओं में से एक एक टैब्लेट सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और अगर साथ में माजून भी है तो दस ग्राम माजून टैब्लेट के साथ इस्तेमाल करें और शाम को खाना खाने से एक या दो घंटा पहले चारों दवा को एक साथ सादा पानी से इस्तेमाल करें।

परहेज़: बड़े का गोश्त, मछली, अण्डा, मसाले-दार चीज़ें, कद्दू और बैगन के इलावा सब खा सकते हैं।

गैस से पैदा होने वाली बीमारीयों की अलामत और इलाज का तरीक़ा

भूख पैदा करने, खाना हज़म करने और हवा पानी सफरा लुआब को हज़म करने, पेट दर्द, मरोड़, पेट में जलन, अलसर और फ़ासिद गैस को खारिज करने, कीड़ी जरासीम को खतम करने मेदा लीवर अंतड़ियों का सूजन खतम करने केलिए इस दवा को इस्तेमाल करें

इतरीफल सरसरा

बासीर टैब्लेट

मगज़ीन टैब्लेट

दुनियां की हर मख़लूक़ जो ज़मीन से पैदा होने वाली चीज़ों से अपना पेट भरकर अपने जिस्म की परवरिश करती है और इस खाई हुई गेज़ा से जिस्म के हर आज़ा की ज़रूरत पूरी होती है और हर तरह की ताक़त और क़ुव्वत का इज़ाफ़ा होता है जिस्म के हर आज़ा को जो ताक़त मिलती है वो सारी ताक़तों का रास्ता पेट से हो कर जाता है, ज़मीन की गेज़ा खाने वाली मख़लूक़ को और इन्सान को भी चार चीज़ों की ज़रूरत होती है और इसी चार चीज़ आग यानी सफ़रा -पित और हुआ -पानी और मिट्टी ये चार सामग्री से इन्सानी जिस्म तैयार हो कर मुकम्मल होजाता है, अब इस चार में से किसी एक की कमी ज़्यादती से बीमारी का निज़ाम शुरू होता है बहुत छोटे बच्चा के अंदर लुआब की पैदाइश ज़्यादा होती है क्यों की लुआब से उसके जिस्म के हर आज़ा को बड़ा करने में मदद मिलती है और लुआब मिट्टी का ख़मीर है और आग यानी सफ़रा – हवा - पानी ये तीन सामग्री मिट्टी को ख़मीर बनाने में मदद करते हैं और इसी चारों सामग्री से मिलकर लुआब तैयार होता है और जब तक ये चारों जुज़ बराबर रहता है तो जिस्म बढ़ते रहता है और जब लुआब का निज़ाम बिगड़ जाता है तो बीमारी की शक्ल बन जाती है लुआब हज़म होने की सिफ़त पैदा हो जाएगी तो बच्चा सेहत के मैदान में हमेशा खेलता रहेगा और बीमारी से बहुत दूर होजाता है और नौजवानी में सफ़रा(पित) यानी आग बड़ी मिक़दार में पैदा होती है ये आग हवा पानी को बड़े तेज़ी से हज़म करती है इस लिए लुआब के अंदर ठोस करने वाला गोंद और ऐसाब के लिए लुआबी जौहर बड़ी मिक़दार में पैदा होता है, अगर ये बेहतरीन तरीके से हज़म हो जाएगी तो अच्छी सेहत और ताक़त के साथ दुनियां जन्नत बन जाती है वर्ना कई तरह की बीमारीयों की शक्ल में बीमारी का नाम गिनते रहो, और बूढ़े इन्सान के अंदर सफ़रा की कमी होजाती है और लुआब हज़म नहीं होता है इस लिए बुढ़ापे में लुआब से जुड़ी हुई हर तरह की बीमारीयों का वजूद नमूदार होता है और सूजन और गैस की बीमारीयां पीछा नहीं छोड़ती हैं, जब इन्सान की उम्र बढ़ जाये या जिस्म के अंदर सूजन गैस की बीमारी शुरू हो जाए तो सर के ऊपर से पैर के नीचे तक पूरे जिस्म के हर आज़ा का गोश्त का रेशा खुलिया और हर

तरह की नस हड्डी जोड़ों के साथ इन्सान की छे6 हिस्स आँख कान नाक अक़्ल दिमाग याददाश्त सब के सब मुतहर्रिक होजाते हैं, जिस्म के हर तरह के आज़ा को हुआ पानी सप्लाइ करने का सबसे बेहतरीन और सबसे ज़्यादा फ़ायदे मंद तरीक़ा है पैदल चलना या साईकल चलाना, ये दोनों तरीके में से कोई भी तरीक़ा इस्तेमाल करते हो तो आपके दिल और फेफड़ा के ऊपर से बहुत ज़्यादा बोझ वज़न कम होजाता है क्यों की पेट के ज़रीया से हवा पानी बड़ी मिक़दार में जिस्म के हर आज़ा को मिलने लगता है इस लिए दिल के ऊपर का दबाव कम होजाता है और चलने फिरने या मेहनत मुशक्कत करने से जिस्म के किसी आज़ा के गोश्त के रेशा खुलिया में अगर फ़ासिद माद्दा नुक़्सान पहूँचाने वाला हवा पानी ज़हरीली गैस लुआब के अंदर मौजूद है तो ये गैस हवा पानी मेहनत मुशक्कत करने से पसीना के रास्ता से ख़ारिज होजाता है और अगर आपको इस दोनों तरीक़ा को इस्तेमाल करने की फ़ुर्सत और मौक़ा नहीं है तो फिर इस दवा को इस्तेमाल करके पेट के रास्ते से हुआ पानी को साफ़-शफ़्फ़ाफ़ करके पूरे जिस्म के हर आज़ा का निज़ाम और पेट के अंदर की हर तरह की ख़राबी को ख़त्म करने के लिए **इतरीफ़ल सरसरा** को इस्तेमाल करें, और अंतड़ी के अंदर और दूसरे आज़ा मेदा लीवर के सूजन को ख़त्म करने के लिए **बासीर टैब्लेट** इस्तेमाल करें, इस दवा की आज़माईश ज़रूर करना अगर एक-बार आज़माईश के लिए इस्तेमाल करते हो और आपकी सेहत के लिए बेहतरीन दवा का तजुर्बा होता है तो हमेशा की परेशानी से नजात मिल जाती है, हर जानदार मख़लूक़ के जिस्म की सेहत और बीमारी का ज़रीया पेट है और इसी पेट के ज़रीया से जिस्म के अंदर अच्छी और बेहतरीन सेहत दाख़िल होती है, और इसी पेट के ज़रीया से हर तरह की छोटी बड़ी और बहुत बड़ी बड़ी बीमारीयों के दाख़िल होने का रास्ता मौजूद है, पेट के जरिये हव - पानी - सफ़रा - लुआब ये चारों जुज़ जिस्म के अंदर दाख़िल हो कर पूरे जिस्म की परवरिश करते हैं और हर तरह की सेहत और ताक़त और बेहतरीन क़ुव्वत का ज़रीया बन जाते हैं, और जब अंतड़ियों की अंदरूनी परत में हल्का सा मामूली वरम होजाता है या मामूली हिस्सा में थोड़ा थोड़ा करके या किसी एक जगह पर छाला पड़ जाता है तो गैस की बीमारी शुरू होती है और बाज़ लोगों को जलन और हल्का सा दर्द भी महसूस होता है, अब इस में से बाज़ लोगों को कई तक्लीफ एक साथ शुरू हुई है और बाज़ लोगों को किसी एक तक्लीफ से शुरूआत होती है और गैस यानी रियाह के अंदर ताफ़्फ़ुन बढ़ जाता है, रियाह गाढ़ी होजाती है, ये फ़ासिद रियाह आसानी से पूरा बाहर की तरफ़ ख़ारिज नहीं होती है और इस फ़ासिद गैस का कुछ हिस्सा अगर जिस्म के अंदर दाख़िल होता है तो जिस्म के जिस हिस्सा में दाख़िल होती है उस जगह के लुआब को या हवा के अंदर ताफ़्फ़ुन पैदा करती है यानी बदबूदार कर देती है और यहां से बीमारीयों की शुरूआत होजाती है अगर सही इलाज मिल गया तो ठीक हो गया वर्ना मुआमला उलझना शुरू होजाता है, अंतड़ी की अंदरूनी परत का सूजन मेदा लीवर का सूजन गुर्दा मसाना का सूजन हो या जिस्म के किसी भी हिस्सा में सूजन छाला पैदा हो गया है उसके लिए **बासीर टैब्लेट** एक बेहतरीन दवा है और अगर इसके साथ में **इतरीफ़ल सरसरा** को इस्तेमाल करते हो तो इस दोनों दवा

से सैकड़ों बीमारीयों से बचने का अस्बाब पैदा होजाता है क्यों की **इतरीफ़ल सरसरा** की ख़ास सिफ़त ये है की भूख पैदा करता है खाना को हज़म करता है और पेट के अंदर का हवा पानी लुआब और सफ़रा के ताफ़्फ़ुन को साफ़-शफ़्फ़ाफ़ करके फ़ासिद रियाह को ख़ारिज करता है और गैस को ग़लीज़ और गाढ़ा होने से रोकता है और गेज़ा से तैयार हुए लुआब को लुआबी आज़ा तक पहूंचने में मदद करता है, और ख़ून में दाख़िल होने वाले हवा – पानी - सफ़रा को ताफ़्फ़ुन और ग़लाज़त से साफ़-शफ़्फ़ाफ़ करके आगे बढ़ने में मदद करता है, जिगर मेदा छोटी बड़ी अंतड़ियों के सूजन को ख़त्म करके मेदा अंतड़ियों के रेशा खुलिया को मुतहर्रिक करता है और हर वक्त बीमार होने वाली सिफ़त को ख़त्म करता है बीमारीयों से बचाने में मदद करता है और अगर पेट के अंदर कीड़ी या जरासीम या केचुवा या यक़ीनी अल्सर का मर्ज़ मौजूद है तो इसके साथ में **मगज़ीन टैब्लेट** का इज़ाफ़ा करलें **मगज़ीन टैब्लेट** हर तरह की कीड़ी जरासीम वाइरस को ख़त्म करता है, इस दवा की बेहतरीन सिफ़त ये है की ये ख़ास जड़ी बूटी से बनाई गई जरासीम ख़त्म करने की दवा है क़ुदरती बूटी के अंदर बग़ैर ज़रूरत इस्तेमाल करने से किसी तरह का नुकसान नहीं होता है, इन्सानी जिस्म के अंदर बड़ी बड़ी बीमारीयों को वजूद में लाने का ज़रीया यही जरासीम या कीड़ी बनती है अगर इन्सानी जिस्म जरासीम से पाक हो जाएगी और पेट का निज़ाम क़ुदरती तरीके से सेहत की हालत में चलता रहे तो हमेशा हर तरह की बीमारी से आज़ाद हो कर ज़िंदगी गुज़ारने का मौक़ा मिलता है, ये तीन दवा को कम अज़ कम दो महीना तक इस्तेमाल कर लेने से बीमारी है तो ख़त्म होजाती है और अगर सिर्फ गैस की तक्लीफ है तो इसके साथ में दूसरी बीमारीयों से हिफ़ाज़त होजाती है, **इतरीफ़ल सरसरा**, **बासीर टैब्लेट** और **मगज़ीन टैब्लेट** ये तीनों दवा को एक साथ में इस्तेमाल करना बेहतरीन फ़ैसला होगा, इन्सानी जिस्म के अंदर कीड़ी और जरासीम वाइरस किस तरह बन जाते हैं इस सवाल का मुख़्तसर जवाब ये है की जब पेट के ज़रीया से जिस्म के अंदर फ़ासिद ग़लीज़ गाढ़ी शदीद ताफ़्फ़ुन शुदा गैस दाख़िल होजाती है तो ये रियाह जिस जगह पर होती है उस जगह के गोश्त के रेशा खुलिया में ताफ़्फ़ुन पैदा कर देती है और इस आज़ा के कमज़ोर खुलिया रेशा को मुर्दा कर देती है, इस तरह से जरासीम वाइरस का वजूद ज़ाहिर होता है तो लुआबी आज़ा की बीमारीयां वजूद में आती हैं और अगर हवा और पानी के ग़लीज़ ताफ़्फ़ुन का असर होता है तो ये हवा पानी ख़ून में शामिल हो कर सफ़रा को फ़ासिद करती है और बुख़ार की कोई शक्ल वजूद में आजाती है, और अगर ये ताफ़्फ़ुन ख़ून के किसी आज़ा पर अपना असर डालती है तो ख़ून के आज़ा की बीमारी वजूद में आती है, गैस की बीमारी और गैस से पैदा होने वाली बीमारीयों को ख़त्म करने के लिए इस दवा को एक-बार ज़रूर इस्तेमाल करके इस दवा की आज़माईश करें।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम इतरीफ़ल और एक एक टैब्लेट सुबह शाम खाली पेट सादे पानी से इस्तेमाल करें और अगर दवा का असर तेज़ करना हो तो तीन टाइम यानी सुबह दोपहर शाम तीनों वक़्त दस दस ग्राम इतरीफ़ल और एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें।

जिगर मेदा लीवर में सूजन हो उस का इलाज

अगर मेदा लीवर में सूजन है या जिस्म के किसी दूसरे आज़ा में सूजन है तो इस दवा को इस्तेमाल करें आराम होगा

बासीर टैब्लेट

मेदा लीवर छोटी बड़ी अंतड़ियों की बीमारी को खतम करने में मदद करता है और हाज़्मा की ताक़त को बढ़ाता है, अगर इसका इज़ाफ़ा करें तो बेहतर है

इतरीफल सरसरा

इस जदीद दौर में हर जगह केमिकल की बहार है, खाने पीने की चीज़ों से लेकर जदीद दवाओं तक अब तो केमिकल ज़रूरीयाते ज़िंदगी का एक हिस्सा बन चुका है, किसी भी तरीक़े से पेट में जाने वाले केमिकल का कम ज़्यादा होना या आपस में टकराओ सीधा मेदा लीवर में ख़राबी का सबब बनता है, और मेदा लीवर की मामूली ख़राबी से जिस्म का निज़ाम दरहम-बरहम हो जाता है और क़ुदरती निज़ाम को वापस लाने के लिए जदीद तरीके को इस्तेमाल में लाया जाता है, अगर आपका मेदा लीवर ख़राब हो गया है या इस में सूजन आगई है तो **बासीर टैब्लेट** इस्तेमाल करें फ़ौरन आराम होगा क्योंकि जिस्म के अंदर आधी बीमारी सूजन की वजह से शुरू होती है और आधी मेदा जिगर का निज़ाम बिगड़ने से खून और लुआब में ख़राबी पैदा होने से होती है, अगर मेदा, लीवर, गुर्दा, मसाना, दिल, दिमाग, फेफड़ा ये सब कमज़ोर हो गए हैं तो एक बार इस दवा को इस्तेमाल करके ज़रूर देखें, ये **माजून शबाबे कलबिया** जिस्म के इन ख़ास आज़ा को ताक़त देता है और जिस्म के ये ख़ास आज़ा जिस्मानी निज़ाम को बिगड़ने नहीं देते, अगर आज़ाए रईसा में सूजन की अलामत है तो भी इस दवा के इस्तेमाल से क़ुदरती हालत में आजाते हैं, **बासीर टैब्लेट** सूजन को ख़त्म करने और जिस्म को ठोस करने में मदद करता है, जिस्मानी निज़ाम बिगड़ने से बचाता है और जिस्म को सेहत की तरफ़ लाने में मदद करता है अगर साथ में **माजून शबाबे कलबिया** को इस्तेमाल करते हैं तो बेहतरीन इलाज के साथ क़ुदरती ताक़त का इज़ाफ़ा करने में मदद करता है और जिस्म के हर आज़ा में क़ुव्वते मुदाफीअत बढ़ जाती है और सेहत को काएम रखने में मदद करता है।

तरीक़ा इस्तेमाल

बासीर टैब्लेट और अगर **माजून शबाबे कलबिया** भी इस्तेमाल कर रहे हैं तो एक एक टैब्लेट और दस ग्राम माजून सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को खाना खाने से एक या दो घंटा पहले तीनों दवाओं को एक साथ सादा पानी से इस्तेमाल करें।

पेशाब के रास्ते में जलन हो या ख़ून आरहा है उसका इलाज

अगर पेशाब के रास्ते से ख़ून जा रहा है तो ये बहुत बड़ी बीमारी है मगर आसानी से ठीक हो जाती है क्योंकि ख़ून बेगैर ज़ख़्म के नहीं आता, लेकिन पेशाब में ख़ून आने का एक रास्ता और है और वो है गुर्दा, गुर्दा का काम है ख़ून साफ़ करना क्योंकि ख़ून में तीन हिस्सा पानी होता है, गुर्दा ख़ून की ग़लाज़त को पेशाब की थैली में डाल देता है इसी लिए पेशाब में ख़ून आने का एक मक़ाम गुर्दा भी है जब गुर्दा ख़ून से पानी को अलग करता है और अलग करने वाली झिल्ली में खुला पैदा हो जाता है तो इस पेशाब में हल्का सुर्ख़ी माएल ख़ून भी आता है दूसरा ख़ून आने का मक़ाम पेशाब की नाली है इस में ज़ख़्म की कई वजह होती है एक तो फ़ाहिशा औरतों से जुफ़्ती करना और दूसरा हाइज़ा औरतों से बार-बार जुफ़्ती करना, इन से सूज़ाक का मर्ज़ हो जाता है लेकिन सूज़ाक का नाम उस वक़्त तक नहीं दिया जाता जब तक पेशाब के रास्ते मवाद या ज़र्द ग़लीज़ सुर्ख़ी माएल पेशाब जारी ना हो जाये जब इस तरह के पेशाब जारी होगी तो इस में जरासीम पैदा हो जाने की अलामत है और अगर सिर्फ सुर्ख़ या सुर्ख़ी माएल पेशाब जारी होता है तो इसकी एक वजह ये भी होती है कि गुर्दा या मसाना में बारीक पथरी पैदा हो जाती है और इस के बाहर निकलते वक़्त मसाना के ऊपर या नीचे की नाली में ख़राश पैदा हो कर ज़ख़्म बन कर ख़ून जारी हो गया हो, पेशाब के रास्ते से ख़ून जारी होने का कोई भी सबब होया किसी भी वजह से ख़ून आरहा है तो इस दवा से बहुत जल्द आराम होगा, ख़ून रुकने के बाद कम-अज़-कम दो से तीन महीना ज़रूर इस्तेमाल करें ताकि ज़ख़्म के असरात मुकम्मल तौर पर ख़त्म हो जाएं हर तरह के जारी ख़ून को रोकने के लिए **जखमीनो टैब्लेट**, **बरगीन टैब्लेट** और **बासीर टैब्लेट** इन तीन दवाओं को एक साथ चलाने से आपको वजह जानने की ज़रूरत नहीं है, इस में एक दवा जरासीम के लिए है, एक ज़ख़्म के लिए और एक सूजन के लिए है, इसलिए तीनों एक साथ चलाना बेहतर है, अगर किसी वजह से ज़्यादा दवा इस्तेमाल नहीं करना चाहते तो सिर्फ **बासीर टैब्लेट** और **जखमीनो टैब्लेट** बस ये दो दवा चलाएँ **बरगीन टैब्लेट** जरासीम के लिए है, इन तीन दवाओं से हर तरह के जारी ख़ून को रोकने में मदद मिलती है और मुकम्मल आराम होजाता है।

अगर इस दवा का इज़ाफ़ा करते हो तो ज़्यादा बेहतर है

मगज़ीन टैब्लेट

पेशाब के रास्ते में खून या जलन होना इसका ईलाज इस दावा से करें

बरगीन टैब्लेट बासीर टैब्लेट जखमीनों टैब्लेट

तरीक़ा इस्तेमाल

एक एक टैब्लेट सुबह ख़ाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को खाना खाने से एक या दो घंटा पहले एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें।

परहेज़: मछली, बड़े का गोश्त, अण्डा, कद्दू, बैंगन से सख़्ती से परहेज़ करें।

गुर्दा में सूजन पैदा हो गई है या गुर्दा सिकुड़ गया है या गुर्दा ख़राब हो गया है या गुर्दा कमज़ोर हो गया है इसके इलाज का तरीक़ा

गुर्दा में सूजन है तो ये दवा इस्तेमाल करें

कलबिया मोतदिल माजून

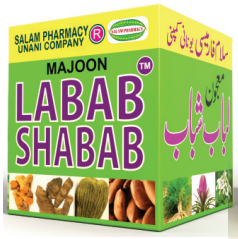

लबाब शबाब माजून

मगज़ीन टैब्लेट

बासीर टैब्लेट

अगर गुर्दा सिकुड़ गया है तो ये दवा इस्तेमाल करें

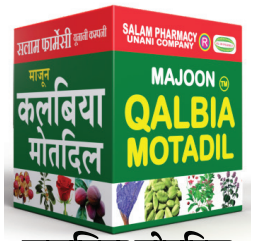

कलबिया मोतदिल माजून

याकूत मुकव्वी ख़ास माजून

आबे शबाब माजून

गुर्दा में कमज़ोरी की बुनियादी वजह यातो वरम होता है या गुर्दा के अंदर की नस सिकुड़ जाती है तो नसों के ऊपर रहने वाला गुर्दा और गुर्दा के अंदर का रेशा खुलिया भी सिकुड़ जाता है, जब गुर्दा की साइज़ कम होगी तो गुर्दा के रेशा का खुलिया भी कम हो जाता है, और बाज़ लोगों का कुछ हिस्सा खुलिया का बंद हो कर बाक़ी कुछ हिस्सों के रेशा खुलिया क़ुदरती हालत में रह कर ख़ून को साफ़ करता रहता है, और कुछ हिस्सा बेकार हो जाता है, लेकिन जब नसों में क़ुदरती ताक़त पैदा हो कर नस ठोस और मुतहर्रिक होती है तो उसके आज़ा वापस अपनी क़ुदरती शक्ल में आकर दुबारा क़ुदरती निज़ाम से चलने लगते हैं, गुर्दा का काम है ख़ून को साफ़ करके ख़ून का पानी पेशाब की थैली में डाल देना, ख़ून में तीन हिस्सा पानी होता है और गुर्दा हर वक्त ख़ून की ग़लाज़त को साफ़ करता रहता है, अगर पेशाब हो रही है तो ये समझ लें कि गुर्दा पूरी तरह से मुतहर्रिक है क्योंकि पेशाब की थैली में पानी आने का एक ही रास्ता है और वो है गुर्दा, जब ख़ून गुर्दा के वाल में दाख़िल होगा तो पानी पेशाब की थैली में जाएगा और ख़ून आगे बढ़कर दुबारा पानी ले लेता है, अगर गुर्दा में सिकुड़न है तो **माजून कलबिया मोतदिल** और **माजून याक़ूत मुक़व्वी ख़ास** इन दोनों दवाओं के साथ **माजून आबे शबाब** एक साथ पंद्रह दिन तक चलाएँ और अगर साथ में **शबाबे कलबिया** को चलाएँ तो बेहतर है क्योंकि **शबाबे कलबिया** गुर्दा को ताक़त देने की दवा है और जब एक महीना हो जाये तो **मगज़ीन टैब्लेट** का इज़ाफ़ा कर दें, दो महीना

के बाद रिपोर्ट निकाल कर देखें गुर्दा क़ुदरती साइज़ में आ गया है या कुछ कसर बाक़ी है, और सबसे बेहतरीन तरीक़ा ये है कि पेशाब पहले से ज़्यादा बढ़ गई है या पुरानी हालत में है, अगर पुरानी हालत में है तो खीरा ककड़ी खाकर या तरबूज़ खाकर फ़ौरन पानी पी लें इस से पेशाब बढ़ जाएगी और ख़ून की ग़लाज़त धीरे धीरे साफ़ होती रहेगी, इस इलाज में कम अज़ कम छे6 महीना बल्कि इस से ज़्यादा भी लग सकता है, और अगर गुर्दा में हल्की यानी मामूली सी सूजन पैदा हुई है तो कमर में दर्द होगा या भारीपन महसूस होगा बदन में जलन या चुंचुनाहट होगी और अगर गुर्दा की नसों में सिकुड़न पैदा हुई है तो गुर्दा की गोलाई कम हो जाएगी और ख़ून के अंदर मौजूद ठोस ज़र्रात बाहर नहीं निकल पाएँगे जिससे जिस्म में सुजन पैदा हो जाएगी, पैर या चेहरा या दोनों पर सूजन का ज़ाहिर होना गुर्दा के सिकुड़न की अलामत है, गुर्दा की जाली का सुराख़ तंग हो गया है, अगर गुर्दा में सूजन पैदा हुई है तो **माजून कलबिया मोतदिल** और **माजून लबाब शबाब** को **बासीर टैब्लेट** और **मगज़ीन टैब्लेट** के साथ इस्तेमाल करें इसी से मुकम्मल आराम होगा, अगर आपको एक महीना में कुछ अच्छा महसूस होता है तो इलाज कर के मुकम्मल ठीक होजाएं।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून और एक एक टैब्लेट सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम-अज़-कम आधा घंटा बाद नाशता करें, इसी तरह शाम को खाना खाने से एक दो घंटा पहले दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और हर तरह की खट्टी चीज़ से परहेज़ करें।

बहुत पुराना नज़ला ज़ुकाम सर्दी से हो रहा हो या गर्मी से उसका इलाज

अगर सिर्फ सर्दी, खांसी, नज़ला, ज़ुकाम है तो इस दवा को इस्तेमाल करें।

इतरिफल दायमी नज़ला

हर तरह की सर्दी, खांसी, नज़ला, ज़ुकाम, सांस में तंगी, हो या फेफड़ा में पानी भर गया हो उसका ईलाज इस दवा से करें

सर्दी हरन टैब्लेट

इतरिफल दायमी नज़ला

नज़ला, ज़ुकाम, सर्दी से हो रहा हो या गर्मी से उसका मर्कज़ दिमाग है और ये ग़फ़लत बरतने वाली बीमारी नहीं है क्योंकि मेदा जिगर दोनों मिलकर जो आमदनी करते हैं उसका बीस से पच्चीस फ़ीसद हिस्सा दिमाग को चला जाता है, अगर दिमाग उस लुआब को हज़म कर लेता है तो जिस्म के किसी भी आज़ा में कमज़ोरी का एहसास ज़ाहिर नहीं करता है और जिस्म के हर आज़ा अपने काम को सही ढंग से अंजाम देते हैं,

हर आज़ा अपने ताक़तवर और मज़बूत होने का एहसास ज़ाहिर कर के मुकम्मल इन्सान होने का एहसास ज़ाहिर करता है और कई तरह की कमज़ोरी और बड़ी बीमारीयों की शुरूआत का सबब भी नज़ला ज़ुकाम है, जब दिमाग का हाज़मा ख़राब होता है तो नज़ला ज़ुकाम की शुरूआत होती है, अगर दिमाग के अंदर सर्दी पैदा हो गई तो दिमाग की झिल्लियों में नाक की तरफ़ आने वाली और हलक़ और गले के और दिमाग के खुलियों रेशों में वरम पैदा होजाता है, ये वरम की कैफ़ीयत मर्ज़ के कमज़ोर या शदीद होने के हिसाब से होती है, और ये सर्दी फेफड़े के अंदर दाख़िल होने पर सांस में तंगी पैदा होने का सबब बनती है या फेफड़े में पानी होने का सबब बनती है, इस मर्ज़ की बड़ी लंबी कहानी है ये किताब सिर्फ तरीक़ा इलाज है इस लिए मुख़्तसर है, और दूसरा नज़ला ज़ुकाम गर्मी के सबब होता है और लुआब पिघलता है, लुआब में सफ़रा बढ़ जाता है गर्म नज़ला और ज़ुकाम की अलामत है की ऐसे मरीज़ों को गर्मी के मौसम में ज़्यादा गर्म मसालेदार गेज़ा के इस्तेमाल से छोटी बड़ी आंतों में रियाह के अंदर ताफ़्फुन बढ़ जाता है रियाह गाढ़ी होजाती है और कब्ज पैदा होजाती है पेट साफ़ नहीं रहता, जब दिमाग की रतूबत पिघल कर सीने की तरफ़ नाज़िल होती है और हवा की नाली का मुँह बंद करती है तो फेफड़ा रतूबत को हटाने की कोशिश करता है और खांसी इस तरह आती है कि एक दोबार खुरखुर करके रह जाती है और मुसलसल वाली खांसी नहीं आती है, लेकिन अगर फेफड़े में ऐतेदाल से ज़्यादा गर्मी पैदा हो गई तो हवा में ख़ुशकी पैदा हो कर फेफड़े की रतूबत ख़ुशक होने लगती है और दिमाग से आई हुई रतूबत हवा की नाली में चिपकने लगती है और मुसलसल खांसी के ज़रीया फेफड़ा इस रतूबत को हटाने की कोशिश करता है और फेफड़ा के अंदर की रतूबत गाड़े बलग़म की शक्ल एख्तियार करके सांस में तंगी का सबब बनती है, अगर इलाज में ग़लती हुई तो बलग़म फेफड़ा में ख़ुशक हो कर दूसरी बीमारीयों को जब्म देता है। इसका इलाज ये है कि अगर सर्दी से नज़ला ज़ुकाम हो रहा है या कुछ भी ठंडा खाने पीने से नज़ला, ज़ुकाम, सर्दी, खांसी या फेफड़े में पानी बढ़ने से सांस में तंगी पैदा हो रही हो और खांसी आने पर लासा(लुआब) जैसी रतूबत निकल रही है तो **दायमी नज़ला** और **सर्दी हरन टैब्लेट** इस्तेमाल करें आराम होगा,और गर्म नज़ला है तो बलग़म फेफड़ा में गाढ़ा होता रहता है और खांसी आने के बाद जब बलग़म निकल जाता है तो राहत महसूस होती है, अगर फेफड़े में बलग़म जम गया है और खांसी आती है और सांस फूलती है घबराहट बेचैनी पैदा होजाती है तो सिर्फ **कलबिया मोतदिल माजून** इस्तेमाल करने से मुकम्मल आराम होजाता है और अगर साथ में **सर्दी हरन टैब्लेट** का इज़ाफ़ा करलेते हो तो सांस फूलने की बीमारी को हमेशा के लिए ख़त्म करने में मदद करता है।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून अगर टैब्लेट है तो एक एक टैब्लेट सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम-अज़-कम आधा घंटा बाद नाशता करें, इसी तरह शाम को खाना खाने से एक दो घंटा पहले दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें।

फेफड़ों में पानी भर गया है उसकी मालूमात और उसके मुकम्मल इलाज का तरीक़ा ये है

फेफड़ों में पानी भरगया है उसके ईलाज का मुकम्मल ईलाज की दवा ये है

फेफड़ों में पानी भर गया है, इस बीमारी को मुकम्मल खतम करने केलिए और पानी भरने वाले रास्ते को खतम करने केलिए इस दवा को इस्तेमाल करें

कालबिया मोतदिल माजून

इतरिफल दायमी नज़ला

सर्दी हरन टैब्लेट

एमरजनसी में चौबीस से अंडतालीस घंटा में फेफड़ा का पानी खतम करने केलिए इस दवा को इस्तेमाल करें

हरीसा बूटी टैब्लेट

फेफड़ों का पानी निकालने के बाद अगर एम.डी.आर. टीबी होगई है तो उसके ईलाज की दवा ये है

फेफड़ों से पानी निकालने के बाद फेफड़ों की झिल्ली पर होने वाले ज़ख़्म को और जरासीम, वाइरस, इन्फ़ैकशन को खतम करने केलिए इस दवा को इस्तेमाल करें

मगज़ीन टैब्लेट

बरगीन टैब्लेट

बासीर टैब्लेट

जख्मीनों टैब्लेट

फेफड़ा के अंदर पानी इस लिए भरना शुरू होता है क्यों की फेफड़ा के अंदर से ताक़त को काएम रखने वाली गर्मी हरारत कमज़ोर होजाती है या ख़त्म होजाती है और ऐसाबी झिल्लियों में लुआबी जरासीम पैदा होजाती है और लुआब के अंदर से ठोस करने वाला गोंद खा जाती है और लुआब फटे हुए दूध की शक्ल में होजाता है और लुआबी आज़ा कमज़ोर होना शुरू होजाता है, हड्डीयों में भुरभुरापन पैदा होने लगता है और सुर्ख़ ख़ून वाली नस सफ़ेद ख़ून वाली लुआबी नसों में और लुआबी ऐसाबी झिल्लियों में भुरभुरापन खुरदरापन पैदा होने लगता है और फेफड़ा - दिल - दिमाग - जिगर - गुर्दा - तिल्ली ये सारे आज़ा के ऊपर की झिल्ली में कमज़ोरी पैदा होना शुरू होजाती है और फेफड़ा क्यों की लुआब और ख़ून दोनों तरह के माद्दा से बना है और फेफड़ा के अंदर साफ़-शफ़्फ़ाफ़ बेहतरीन किस्म के ख़ून की कुछ मिक़दार पैदा होती है इस लिए फेफड़ा में लुआब के बेहतरीन किस्म का ठोस करने वाला और ज़्यादा ताक़त देने वाला लुआब मौजूद रहता है, ये लुआब दिमाग के खुलिया से होते हुए फेफड़ा के रेशा खुलिया के ज़र्रात में मौजूद होता है, गेज़ा से तैयार होने वाला लुआब अंतड़ियों की झिल्ली से होते हुए सबसे पहले दिमाग की झिल्ली

के अंदर दिमाग के ऊपर दाख़िल होता है और दिमाग उस लुआब से हद से ज़्यादा बारीक और नाज़ुक किस्म का ठोस करने वाला लुआबी गोंद का जौहर हासिल कर लेता है इसके बाद दिमाग का ये बचा हुआ लुआब ज़्यादा लचक देने वाला हद से ज़्यादा ठोस करने वाला गोंद फेफड़ा की तरफ़ भेज देता है उसी लुआब से ख़ून तैयार होता है, और फेफड़ा को और उसकी झिल्ली को सख़्त और ठोस रहने वाली ताक़त इसी लुआब से मिलती है, अब अगर लुआब को हज़म करने की ताक़त दिमाग के अंदर से ख़त्म हो जाए या फेफड़ा के अंदर से लुआब को हज़म करने वाली ताक़त ख़त्म हो जाए तो ये सारी बीमारी सर्दी - जुकाम - नज़ला - खांसी - निमोनिया - सांस फूलने की बीमारी वजूद में आजाती है, जिस्म के अंदर सिर्फ दो तरह की शक्ल के आज़ा होते हैं, या तो सिर्फ लुआब का जुज़ उसके अंदर मौजूद है या सिर्फ ख़ून का जुज़ उसके अंदर मौजूद है और जिस्म के हर आज़ा एक दूसरे आज़ा के सहारे जिस्म के अंदर काम करते हैं, लेकिन फेफड़ा पूरे जिस्म के हर आज़ा से मुख़्तलिफ़ है ये एक आज़ा पूरे जिस्म के सारे आज़ा का बादशाह आज़म सिर्फ़ फेफड़ा है, इसके अंदर नफ़्स और रूह दोनों की ताक़त मौजूद है और दोनों जिस्म का आज्ज़ा(सामग्री) आज़म भी इसके अंदर मौजूद है, लुआब और ख़ून दोनों जिस्म को मुतहर्रिक रहने में मदद करता है, रूह और नफ़्स दोनों जिस्म को ज़िंदा रहने की ताक़त फेफड़ा में मौजूद रहती या रूह और नफ़्स दोनों जिस्म को मुंजमिद करके मुर्दा कर देने वाली खासियत(ख़ास सिफ़त) फेफड़ा में मौजूद है, फेफड़ा के अंदर पानी इस लिए भर जाता है क्यों की फेफड़ा के अंदर हवा को खींचने और फेंकने की सिफ़त है, हर वक्त इसका यही काम है जब फेफड़ा हवा को खींचता है तो इस खिंचाव का असर फेफड़ा के ऊपर की झिल्ली पर खिंचाव का असर होता है लेकिन जब हवा को भेजता है दिल की नालीयों से हो कर दिल में हवा दाख़िल होती है तो इस भेजने का असर फेफड़ा के ऊपर की बाहरी झिल्ली के ऊपर किसी भी तरह का दबाव नहीं होता है, लेकिन खींचने का असर फेफड़ा के ऊपर की बाहरी झिल्ली के ऊपर हर हाल में होता ही होता है और जब फेफड़ा के ऊपर की बाहरी झिल्ली में सर्दी तरी पैदा होजाती है और झिल्ली के अंदर लुआब को पेवस्त करके झिल्ली को ठोस करने वाली सिफ़त ख़त्म होजाती है तो लुआब के अंदर का पानी लुआब के अंदर की हरारत(गर्मी) घट जाने कम होजाने या ख़त्म होजाने की वजह से झिल्ली में पेवस्त नहीं होता है और झिल्ली के रेशा खुलिया के रास्ता से झिल्ली और फेफड़ा के बीच में दाख़िल होने लगता है, इस लिए फेफड़ा में ख़लल पैदा होजाता है और सांस लेने में तक्लीफ होना शुरू होजाती है क्यों की फेफड़ा के रेशा खुलिया में सर्दी तरी का असर आजाता है और फेफड़ा की हरारत ख़त्म होने लगती है इस लिए फेफड़ा में दाख़िल होने वाली हवा पूरी तरह से साफ़-शफ़्फ़ाफ़ नहीं होती है और ये हवा दिल के अंदर दाख़िल हो कर ख़ून में शामिल होती है और इस तरह से कई तरह की तक्लीफ बीमारीयों की शक्ल में ज़ाहिर होती है और फेफड़ा-झिल्ली-लुआब-हरारत यानी सफ़रा इसी के बीच में सारी बीमारीयों का वजूद और सारी बीमारीयों का नाम छुपा होता है बस फ़र्क़ सिर्फ इतना होता है की अलामात थोड़ा सा ऊपर नीचे होती है और बीमारी का नाम बदल जाता है और बीमारी की शक्ल बदल जाती है, ये तीन दवा का नाम लिख रहा हूँ सिर्फ यही तीन दवा फेफड़ा और सांस लेने में तक्लीफ देने वाली सारी बीमारीयों का इलाज इसी तीन दवा में मौजूद है, पहली दवा का नाम है **सर्दी हरन टैब्लेट** ये दवा लुआब के अंदर से और लुआबी झिल्लियों के अंदर से और लुआबी आज़ा के अंदर लुआब को पेवस्त करने वाली ताक़त को बढ़ाकर दिल-दिमाग-गुर्दा-तिल्ली-जिगर-फेफड़ा के ऊपर की

झिल्ली की ताक़त को बढ़ाता है और झिल्लियों को ठोस और मज़बूत करने में मदद करता है, दूसरी दवा का नाम है **इतरीफ़ल दायमी नज़ला** ये दवा फेफड़ा की ताक़त को बढ़ाती है उसको मज़बूत करने में मदद करती है लुआब और ख़ून के अंदर से फ़ासिद माद्दा को ख़त्म करती है और सफ़रा को ऐतेदाल पर लाने में मदद करती है, और तीसरी दवा का नाम है **माजून कलबिया मोतदिल** ये दवा बेशुमार खूबियाँ अपने अंदर समेट कर रखता है, इस माजून की कुछ खूबियां ज़ाहिर में है और बेशुमार खूबियां इस दवा के बातिन में मौजूद है, इस **माजून कलबिया मोतदिल** की ज़ाहिरी सिफ़त ये है की सडे गले बदबूदार फ़ासिद हो कर पीला ख़ारिजी बलग़म की शक्ल एख्तियार कर चुके बलग़म को वापिस क़ुदरती हालत पर लाने में मदद करता है, और बलग़म को फ़ासिद होने से रोकता है फ़ासिद हो गए बदबूदार बलग़म को वापस लुआब की शक्ल एख्तियार करके लुआब को पेवस्त करने में मदद करता है, और ऐसाब की नसों को और ऐसाबी झिल्लियों को और दिल और दिमाग की नसों को मुतहर्रिक करता है और उसकी ताक़त को बढ़ाने में मदद करता है और दिल-दिमाग-जिगर -तिल्ली-गुर्दा-फेफड़ा के ऊपर की झिल्लियों के अंदर की बीमारी को ख़त्म करके ये सारे आज़ा की झिल्ली को ठोस और मज़बूत करने में मदद करता है और आज़ाए रईसा की ताक़त को बढ़ाता है, इस माजून का बातिनी फ़ायदा ये है की हर तरह की बड़ी बीमारी को आने से पहले उसको ख़त्म करने में मदद करता है क्यों की हर तरह की बड़ी बीमारी लुआब के फ़ासिद हो कर उसका ज़ायक़ा बदलने से या फ़ासिद बलग़म की शक्ल एख्तियार करने से होती है ये उसको ख़त्म करने में मदद करता है, ये तीन दवा का नाम हमने बताया है **सर्दी हरन टैब्लेट-इतरीफ़ल दायमी नज़ला-माजून कलबिया मोतदिल** ये तीन दवा को एक साथ इस्तेमाल करने से फेफड़ों में पानी भर जाने वाली बीमारी को हमेशा के लिए ख़त्म करने में मदद करता है और इसके इलावा फेफड़ों के ज़रीया से होने वाली हर तरह की बीमारी को ख़त्म करता है, सर्दी-खांसी-नज़ला-ज़ुकाम-निमोनिया-ज़ानूल जंब(विपरीत गुण) और नई पुरानी हर तरह की सांस फूलने वाली बीमारी को दमा की बीमारी को ख़त्म करने में मदद करता है, और अगर फेफड़ा में पानी भर गया है और उसको एमर्जन्सि में ख़त्म करना है तो **हरीसा बूटी टैब्लेट** को इस्तेमाल करें पहली ख़ुराक से फ़ायदा ज़ाहिर होगा और सात टैब्लेट ख़त्म होने से पहले फेफड़ा का पानी ख़त्म होजाता है, ये दवा फ़ौरन आराम पहुँचाती है और फेफड़ा में पानी आने से रोकने के लिए साथ में वही तीनों दवा को इस्तेमाल करें और एक ख़ास बात ये भी याद करलें की फेफड़ा में पानी भर जाने के बाद इंजेक्शन वग़ैरा से नहीं निकालना चाहीए क्यों की फेफड़ा के ऊपर की झिल्ली में जो ज़ख़म होता है इंजेक्शन से ये ज़ख़म एम.डी.आर. टीबी पैदा करने का रास्ता हमवार कर देता है अब अगर आप इंजेक्शन से पानी निकलवा चुके हो और एम.डी.आर. टीबी हो चुकी है तो उसका इलाज ये है की फेफड़े की झिल्ली पर जो ज़ख़म है उसको ख़त्म करने के लिए ये दवा को इस्तेमाल करें **जखमीनो टैब्लेट-बासीर टैब्लेट** जरासीम और फफूंद और इन्फ़ैकशन को ख़त्म करने के लिए **बरगीन टैब्लेट** और **मगज़ीन टैब्लेट** ये चार दवा से फेफड़ों का ज़ख़म इन्फ़ैक्शन जरासीम वाइरस फफूंद को ख़त्म करने में मदद मिलेगी और इसके साथ में **कलबिया मोतदिल माजून** और साथ में **इतरीफ़ल दायमी नज़ला** और **सर्दी हरन टैब्लेट** ये सात दवा को एक साथ इस्तेमाल करने से पहले पंद्रह दिन की दवा से आपको काफ़ी से ज़्यादा आराम हो जाएगा और दो से तीन महीना तक मुसलसल इस्तेमाल करने से मुकम्मल आराम होने में मदद मिलेगी इनशाअल्लाह।

ऑक्सीजन की कमी, जब मरीज़ का पेट तेज़ी से फूलने पचकने लगे और सांस फूलना - सर्दी - खांसी - नज़ला - ज़ुकाम - जरासीम - वाइरस ख़त्म करने का तरीक़ा इलाज।

और जरासीम के लिए मगज़ीन टैब्लेट का इज़ाफ़ा करें

मगज़ीन टैब्लेट

आक्सीजन की कमी जब मरीज़ का पेट तेज़ी से फूलने पिचकने लगे ऐसी हालत में इस दवा को इस्तेमाल करें

सर्दी हरन टैब्लेट

इतरिफल सरसरा

इतरिफल दायमी नज़ला

कलबिया मोतदिल माजून

दुनियां की हर मख़लूक़ जो ज़मीन से पैदा होने वाली चीज़ों से अपना पेट भर कर अपने जिस्म की परवरिश करती है और इस खाई हुई गेज़ा से जिस्म के हर आज़ा की ज़रूरत पूरी करती है और हर तरह की ताक़त और क़ुव्वत का इज़ाफ़ा होता है, जिस्म के हर आज़ा को जो ताक़त मिलती है वो सारी ताक़तों का रास्ता पेट से हो कर जाता है, ज़मीन की गेज़ा खाने वाली मख़लूक़ को और इन्सान को भी चार चीज़ों की ज़रूरत होती है और इसी चार चीज़ों से इन्सान की सेहत ज़िंदगी और बीमारी का अस्बाब बनता है, सफ़रा जिस्म की आग है और लुआब मिट्टी है हवा पानी से जिस्म के अंदर तबदीली पैदा होती है, सर्दी ज़ुकाम नज़ला होता है तो ऐसा ज़रूरी नहीं है की मौसम की तबदीली और सर्दी की वजह से हो रहा है, हमारा सौ फ़ीसद तजुर्बा इसी बात पर है की अगर सर्दी ज़ुकाम नज़ला खांसी है तो लुआब अचानक फ़ासिद हो कर नुक़्सान और तक्लीफ का ज़रीया बन गया है और लुआब ज़ाए हो रहा है यानी नाक से गिर कर मुँह से थोक कर ख़त्म हो रहा है तो उसके पीछे या तो जरासीम वाइरस है या पेट के अंदर से फ़ासिद हो कर जिस्म के अंदर दाख़िल हो रहा है और जिस्मानी आज़ा इस लुआब को क़बूल नहीं कर रहे हैं इस लिए उसको ख़ारिज होने के रास्ता पर लगा दिया और बाहर की तरफ़ आगया है और तक्लीफ का ज़रीया बन गया है यानी आपने जो गेज़ा को खाया है मेदा लीवर दोनों ने अपना काम मुकम्मल कर दिया है और ये लुआब बन गया है और इस

लुआब में पेट के रास्ता में दाख़िल होने से पहले किसी ज़हरीले माद्दा का शिकार हुआ पानी के ज़रीया से ज़हरीले असरात या पानी के अंदर जरासीम वाइरस का शिकार हुआ है या बाहर से खींची गई हवा में ज़हरीला ताफ़्फ़ुन या वाइरस जरासीम मौजूद था या पेट के अंदर के हवा पानी या गैस के अंदर शदीद किस्म का ताफ़्फ़ुन लुआब में शामिल हो गया है जिसकी वजह से लुआब फ़ासिद हो रहा है इसी लिए हमने इस दोनों दवा के ज़रीया से इलाज को मुकम्मल कर के बीमारी को ख़त्म करने में कामयाबी हासिल की है, अब अगर अचानक किसी को सांस फूलने लगती है और ऑक्सीजन की कमी महसूस हो रही है तो सबसे पहले पेट का रास्ता सीधा करो ताकि पेट के रास्ता से गोश्त के रेशा में शामिल होने वाला ऑक्सीजन का रास्ता सीधा हो जाए और पेट में ख़राबी है या नहीं ये सब सोचने का काम ख़त्म हो जाए इस लिए **इतरीफ़ल सरसरा** खिला दो और साथ में **इतरीफ़ल दायमी नज़ला** और **सर्दी हरन टैब्लेट** ये तीन दवा को एक साथ इस्तेमाल करा दो अगर पहली दूसरी ख़ुराक से आराम हो गया तो ठीक है उसी को चला दो कुछ दिन तक, वर्ना जरासीम वाइरस के होने का यक़ीन है तो **बरगीन टैब्लेट** का इज़ाफ़ा करदो, बुख़ार भी साथ में है तो **दायमी बुख़ार टैब्लेट** का इज़ाफ़ा करदो इनशाअल्लाह पहली दूसरी ख़ुराक से आराम होना शुरू हो जाएगा, एक अपना तजुर्बा बता दूं की इलाज के दरमियान जिस मरीज़ को **बरगीन टैब्लेट** या **मगज़ीन टैब्लेट** चल रहा है तो सौ मरीज़ों में से दो-चार मरीज़ ऐसे होते हैं जिसको ये दोनों दवा चल रही या तो दस दिन के बाद या पंद्रह दिन के बाद दाना निकलना शुरू होजाता है तो ये अलामत है की मरीज़ के गोश्त के रेशों में खुलिया में बारीक कीड़ी मौजूद है इस लिए दाना निकल रहा है और ये अलामत है की जंगल में आग फैली है और कीड़ी को जिस्म के अंदर पनाह ना मिलने से वाइरस बाहर की तरफ़ अपना मुँह करके अपने आपको बचाने की कोशिश में है, अब मरीज़ को ये बता दो की इसी दवा से पहले से मौजूद दाना फोड़ा फुंसी वो भी ख़त्म हो जाएगा और ये जो दाना अभी निकला है ये भी ख़त्म हो जाएगा लेकिन दवा को दो तीन महीना तक चलाना होगा, ये एक अलामत है की मरीज़ किसी बड़ी बीमारी में मुबतला होने वाला था और अब शिफा की तरफ़ आगया है और ये भी एक अलामत है की मरीज़ बहुत पुराना पेट का मरीज़ था और आज भी पेट का मरीज़ है पेट के मरीज़ों को ऐसा ज़रूर होता है।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून और एक एक टैब्लेट सब एक साथ सुबह शाम खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और अगर दवा का असर तेज़ करना मक़सद हो तो सुबह दोपहर शाम यानी तीन टाइम दस दस ग्राम माजून और एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें।

दमा सांस फूलने की बीमारी का इलाज

इस दवा को दायमी नज़ला ज़ुकाम सर्दी खांसी दायमी सांस फूलने की बीमारी दमा का ईलाज इस दवा से करें

सर्दी हरन टैब्लेट

इतरिफल दायमी नज़ला

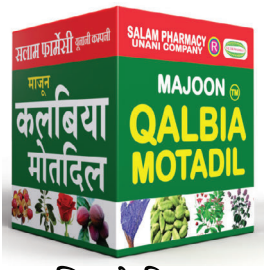

कलबिया मोतदिल माजून

फेफड़ों की कमज़ोरी से सांस फूलने की बीमारी होती है इस के इलावा जब किसी वजह से सर्दी पैदा होकर बलग़म गाढ़ा हो कर पक जाता है और बलग़म पीला हो जाये या फेफड़ों में बलग़म ख़ुशक हो जाए तो सांस में तंगी पैदा हो जाती है, जिस्म के अंदर हरारत ऐतेदाल से ज़्यादा हो जाये रतूबत फ़ासिद होने लगती है और बलग़म का ज़र्द और गाढ़ा होना या ख़ुशक होजाना ये कैफ़ीयत सेहत के लिए ख़राब अलामत है यानी आप किसी भी तरह की जरासीमी बीमारी में मुबतला हो सकते हैं इसी लिए ऐसी कैफ़ीयत को बदलना बहुत ही ज़रूरी होता है वर्ना जिस्मानी निज़ाम बदलने लगता है और जिस्म के अंदर तक्लीफ बढ़ जाती है ऐसी हालत में **माजून कलबिया मोतदिल** से हरारते आज़ीज़िया ये ऐतेदाल पर आती है जो जिस्म के हर तरह के अंदरूनी आज़ा की सूजन वरम को ख़त्म कर देती है, इसके इस्तेमाल से बलग़म अपना रंग बदल कर क़ुदरती रंग पर आने लगता है सेहत में बेहतरी ज़ाहिर होने लगती है, अगर बलग़म अपने असली हालत पर आने के बाद पतला हो कर सांस में तंगी पैदा करने लगे तो **सर्दी हरन टैब्लेट** का इज़ाफ़ा कर लें, अगर लुआबी आज़ा और लुआब में सर्दी पैदा हो जाये तो फेफड़ों में सिकुड़न पैदा हो कर सांस में तंगी पैदा होने लगती है, और अगर दमा का मर्ज़ दायमी है तो उसका इलाज है **माजून कलबिया मोतदिल, इतरीफ़ल दायमी नज़ला** और साथ में **सर्दी हरन टैब्लेट** चलाएँ इसी तीन दवा से मर्ज़ ख़त्म होगा लेकिन इस तरह के मरीज़ों के गले फेफड़े में सूजन भी होती है इस लिए **बासीर टैब्लेट** को पाँच से दस दिन तक खिला दिया करें अंदरूनी आज़ा की सूजन ख़त्म हो कर मर्ज़ के ख़त्म होने में मदद करेगा, दमा की बीमारी ख़त्म करने के लिए दो तीन महीना तक इस्तेमाल करने से मुकम्मल आराम होजाता है, सांस का मुआमला बड़ा ही अहम है इसलिए उसकी बहुत ही लंबी वज़ाहत की ज़रूरत है जो इस मुख़्तसर किताब में बयान करना मुश्किल है इसके बाद वाली किताब में तफ़सीली वज़ाहत के साथ सभी मर्ज़ का बयान और इलाज होगा।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून अगर टैब्लेट है तो एक एक टैब्लेट सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम-अज़-कम आधा घंटा बाद नाशता करें, इसी तरह शाम को खाना खाने से एक दो घंटा पहले दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें।

पेशाब में जलन हो या मसाना में गोश्त बढ़ गया है इसके इलाज का तरीक़ा

पेशाब ख़ुलने की जगह पेशाब की नाली में सूजन ज़ख़्म या गोश्त बढ़ गया हो या पेशाब में जलन हो तो ये तीन दवाएँ इस्तेमाल करें

बरगीन टैब्लेट बासीर टैब्लेट जखमीनों टैब्लेट

पेशाब में जलन होने के बहुत से अस्बाब होते हैं जैसे मसाना और पेशाब की नाली में वरम पैदा होने से पेशाब में जलन पैदा होजाती है और ख़ून की ग़लाज़त को साफ़ कर के गुर्दा पानी को पेशाब की थैली में डालता है, जब ख़ून में ग़लाज़त बढ़ेगी तो पेशाब में तुरशी और नमक बढ़ने से पेशाब में जलन पैदा हो जाती है और बाज़ दफ़ा गुदूदे मन्वियह के मुतहर्रिक होने से माद्दाए मन्वियह का कुछ हिस्सा गुदूदे मन्वियह से बाहर पेशाब की नाली की तरफ़ आकर ठहर जाता है और गुदूदे मन्वियह और मज़ी की बहुत तेज़ गर्मी से और बाज़ लोगों की मज़ी ख़ुशक होने से ख़राश पैदा हो कर जलन का सबब बनती है और बाज़ लोगों की मज़ी नाली में ठहर जाती है और वहां बेतरतीब हरारत से सड़न पैदा होकर इसमें जरासीम पैदा हो जाती है और जरासीम वाले मरीज़ के पेशाब की जलन फौरन ठीक नहीं होती और सही इलाज ना होने की सूरत में सूज़ाक का सबब बनती है, और बाक़ी दूसरी जितनी वजूहात हैं उसको ठीक करने का बेहतरीन तरीक़ा ये भी है कि आप खीरा ककड़ी बीज वाली यानी पुख़्ता खीरा खाकर फ़ौरन पानी पी लें आराम हो जाएगा, या तरबूज़ खाकर फ़ौरन पानी पी लें खुल कर साफ़ पेशाब होगी और जलन ठीक हो जायेगी और अगर मर्ज़ पुराना हो गया है हमेशा जलन चालू बंद चालू बंद होती रहती है तो **बरगीन टैब्लेट** इस्तेमाल करें आराम होगा और अगर बहुत ज़्यादा बेहतर करना हो तो **जखमीनो टैब्लेट** के साथ **बासीर टैब्लेट** इस्तेमाल करें तो कई और भी दूसरी बीमारी ठीक हो जाएगी, इन दोनों टैब्लेट को इस्तेमाल करने से पेशाब की नाली या पेशाब खुलने की जगह पर गोश्त बढ़ गया हो या सूजन पैदा हो गई हो या जरासीम पैदा हो गई हो और जिस्म के दूसरे कई हिस्सों में सूजन जरासीम वग़ैरा को ख़त्म करता है और अगर इन दोनों टैब्लेट को बेज़रूरत मर्ज़ ना होने की सूरत में इस्तेमाल करते हो तो जिस्म के हर हिस्सा से सूजन और जरासीम ख़त्म हो कर सेहत बेहतर होजाती है बाज़ दफ़ा किसी ख़ास या आम जगह की मामूली सी अंदरूनी सूजन और जरासीम किसी बड़ी बीमारी का सबब बनती है, इन दोनों दवाओं के इस्तेमाल से ऐसी सभी जगह की तक्लीफ को आराम हो जाता है और ये क़ुदरती जड़ी बूटी होने की वजह से किसी भी तरह का नुक़्सान नहीं करती है।

तरीक़ा इस्तेमाल

एक एक टैब्लेट सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को खाना खाने से एक या दो घंटा पहले एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें।

मिर्गी और हिस्टेरिया क्यों और कैसे होती है और इस बीमारी के इलाज का तरीक़ा।

मिर्गी हिस्टेरिया बावगोला का ईलाज इस दवा से करें मुकम्मल आराम होगा

लबाब शबाब माजून

कलबिया मोतदिल माजून

मगज़ीन टैब्लेट

मिर्गी और हिस्टेरिया दोनों अलग अलग बीमारी है लेकिन दोनों बीमारी की अलामत एक जैसी है सिर्फ इतना फ़र्क़ है की जब मिर्गी का दौरा पड़ता है तो हाथ पांव में खिंचाव और ऐंठन पूरे जिस्म पर झटका गर्दन में और मुँह चेहरे पर ऐंठन खिंचाव ज़्यादा और बाज़ लोगों को बहुत ज़्यादा रहता है, दौरा पड़ने के वक़्त लड़का हो या लड़की बस अचानक धड़ाम से गिरते हैं और दौरा शुरू होजाता है ये दौरा आम तौर से एक या दो मिनट तक रहता है, अगर दौरा एक मिनट में ख़त्म हो गया तो मरीज़ को ज़्यादा कमज़ोरी महसूस नहीं होती है होश में आने से दस पंद्रह मिनट आधा घंटा में मरीज़ चलने फिरने लगता है और अगर मिर्गी का दौरा दो से तीन मिनट तक रह गया तो मरीज़ के होश में आने के बाद मरीज़ के अंदर बहुत ज़्यादा कमज़ोरी सुस्ती पैदा होजाती है और फ़ौरन चलने फिरने से क़ासिर होता है मरीज़, मिर्गी वाला मरीज़ के दौरा पड़ते वक़्त मुँह से झाग निकलता है और कभी कभी ज़बान कट जाती है मसूड़ों में ज़बान पर ख़ून ज़ाहिर होता है ये अलामत मिर्गी के मरीज़ या मरीज़ा की होती है, लेकिन हिस्टेरिया के मरीज़ा का दौरा मिर्गी से इतना ज़्यादा फ़र्क़ नहीं होता है की शनाख़्त को अलग तरीक़ा से बयान किया जाये बस मिर्गी और हिस्टेरिया में इतना फ़र्क़ होता है की मिर्गी के मरीज़ या मरीज़ा के मुँह से झाग फेस निकलता है और कभी कभी ज़बान भी कट जाती है और हिस्टेरिया के मरीज़ा को दौरा मिर्गी की तरह होता है और ऐंठन थोड़ा कम रहती है और मुँह से झाग नहीं निकलता है और ना ज़बान कटती है हिस्टेरिया के मरीज़ का मिर्गी के मरीज़ा का दौरा एक जैसा होता है सिर्फ मुँह से झाग फेस का फ़र्क़ है, दोनों बीमारी का मर्कज़ दिमाग है हिस्टेरिया का मर्कज़ दिमाग और बच्चेदानी रहेम से ताल्लुक़ है और मिर्गी की बीमारी का दिमाग और दिल से ताल्लुक़ है, मिर्गी की बीमारी दिमाग के कुछ रेशा खुलिया(सेल) के नीम मुर्दा होने की वजह से होता है, बचपन के किसी हिस्सा में बहुत तेज़ बुख़ार होने की वजह से दिमाग के कुछ खुलिया(सेल) मैं ख़ुशकी पैदा हो कर जब खुलिया का दायरा अपनी असल साइज़ से

कम हो कर सिकुड़ जाता है लेकिन मुर्दा नहीं होता है और इसी बुख़ार की हालत में झटका आगया और बुख़ार की बीमारी ख़त्म होने के बाद दिमाग का ये खुलिया(सेल) अपनी क़ुदरती साइज़ में नहीं आया और दिमाग के अंदर पूरे खुलिया से मुख़्तलिफ़ रहा तो ये आगे जाकर जब दिमाग के अंदर किसी गहरी और प्रैशर वाली सोंच के दबाव में आने के बाद इस कमज़ोर खुलिया(सेल) पर दबाव बढ़ जाने से खिंचाव पैदा हो कर ख़ून के दबाव पर ख़लल पैदा होता है और ख़ून का बहाव कुछ सेकंड के लिए बेतरतीब होजाता है और ऐसाबी नसों झिल्लियों में खिंचाव पैदा होने से मिर्गी का दौरा पड़ जाता है, और हिस्टेरिया की बीमारी का अगर मुख़्तसर में बयान करूँ तो उसका ख़ुलासा ये है की हिस्टेरिया की बीमारी में रूह और नफ़्स के दबाव से दौरा पड़ता है क्यों की जब शहवत का ग़लबा होता है तो दिमाग के अंदर शहवत का खुलिया(सेल) मुतहर्रिक होजाता है तो रूह इतना ख़ौफ़ पैदा कर देती है की ऐसाबी झिल्ली और ऐसाबी नसों में खिंचाव पैदा होजाता है और ख़ून के दबाव और बहाव से दिमाग के अंदर सोंचने वाली रौ का हुजूम होजाता है और दौरा पड़ जाता है, हिस्टेरिया की बीमारी शादी के बाद एक दो बच्चा पैदा होने के बाद ख़त्म होजाती है और इस दोनों बीमारी का इलाज हमने किया मरीज़ ठीक होजाता है, इस बीमारी का इलाज है **माजून कलबिया मोतदिल** ये माजून दिमाग की नसों को और दिमाग के रेशा खुलिया(सेल) को और ऐसाब की नसों झिल्लियों की ताक़त को बढ़ाता है उसको मुतहर्रिक करने में मदद करता है और उसके साथ में **माजून लबाब शबाब** ये लुआब की पैदाइश को बढ़ाता है और उसके साथ में इस्तेमाल करें **मगज़ीन टैब्लेट** और दिल दिमाग जिगर मेदा गुर्दा मसाना और ऐसाब और ख़ून वाली नसों की ताक़त बढ़ाने के लिए ये चार दवा को एक साथ इस्तेमाल करें इसका फ़ायदा दो महीना के बाद ज़ाहिर होना शुरू होजाता है और चार से पाँच महीना में मिर्गी की बीमारी हमेशा के लिए ख़त्म होजाती है, और हिस्टेरिया की बीमारी में एक महीना के बाद से फ़ायदा ज़ाहिर होजाता है, हिस्टेरिया में **माजून कलबिया मोतदिल, माजून लबाब शबाब, मगज़ीन टैब्लेट** और साथ में **लिकोरा टैब्लेट** एक महीना तक इस्तेमाल करादें और अगर हैज़ में कुछ ख़राबी है तो साथ में **माहेरवाँ टैब्लेट** का इज़ाफ़ा कर दें या शुरू के एक महीना तक **लिकोरा टैब्लेट** इस्तेमाल करादें उस के बाद दूसरे महीना से **लिकोरा टैब्लेट** बंद कर के **माहेरवाँ टैब्लेट** को इस्तेमाल करें तीन से चार महीना तक दवा को इस्तेमाल करें इस बीमारी हिस्टेरिया को ख़त्म करने में मदद करेगा।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून एक टैब्लेट सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें आधा घंटा तक कुछ ना खाएं तो बेहतर है, इसी तरह शाम को खाना खाने से एक दो घंटा पहले पूरी दवा को एक साथ सादा पानी से इस्तेमाल करें।

परहेज़ :सिर्फ़ बड़े का गोश्त, मछली, अंडा छोड़कर बाक़ी सब कुछ इस्तेमाल कर सकते हैं।

सरदर्द, चक्कर आता हो, घबराहट, बेचैनी, नींद की कमी से होने वाली बीमारीयों के इलाज का तरीक़ा

हर तरह के सर दर्द के मरीजों का इस दवा से ईलाज करें मुकम्मल आराम होगा

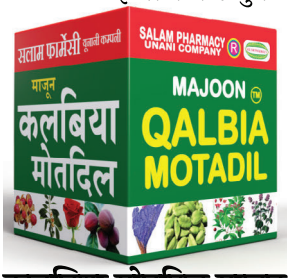

कलबिया मोतदिल माजून

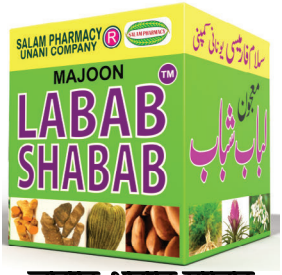

लबाब शबाब माजून

अगर सूजन का यकीन है तो बासीर टैब्लेट का इज़ाफ़ा करें

बासीर टैब्लेट

दिमाग इन्सान के जिस्म के हर आज़ा का मर्कज़ है, जिस्म के हर आज़ा की हरकत का एहसास दिमाग के इशारे पर होता है, जितना तेज़ रफ़्तार से दिमाग हरकत करेगा उतना तेज़ रफ़्तारी से हाथ पैर ज़बान हरकत करेगा, दिमाग के अंदर सोंचने वाली रौ(लहर) चलती है और पूरे दिमाग का खुलिया रेशा मुतहर्रिक रहता है और किसी जगह रौ ठहरती नहीं है दिमाग सोंचते रहता है और सोंचने वाली रौ(लहर) आगे बढ़ते रहती है किसी जगह रुकावट पैदा नहीं होती है ना तो लुआबी रेशा खुलिया में और ना तो सुर्ख़ ख़ून वाली बारीक बहुत बारीक नसों में ख़ून रवानी से दौड़ता है और बग़ैर ठहरे बिना रुकावट के चलते रहता है तो दिमाग के अंदर किसी तरह की कोई तक्लीफ ज़ाहिर नहीं होती है लेकिन जब ख़ून के अंदर ग़लाज़त और गाढ़ापन पैदा होजाता है तो दिमाग की बारीक नसों में रवानी के साथ आगे नहीं बढ़ता है इस लिए ख़ून के दबाव से दर्द महसूस होता है और नींद में कमी और तनाव पैदा होजाता है, और ये अलामत मलेरीया बुख़ार में ज़ाहिर होती है क्यों की ख़ून में ज़हरीला माद्दा दाख़िल होजाता है उसकी गर्मी ख़ुशकी से ख़ून गाढ़ा होजाता है इस लिए सर में दर्द ख़ून के दबाव से होता है और सर में दर्द की दूसरी वजूहात ये होती है की बहुत तेज़ गर्मी का मौसम है और धूप में रहने की आदत नहीं है और बहुत तेज़ धूप सूरज की गर्मी बर्दाश्त करने की आदत नहीं है, ऐसे लोगों को सूरज की तेज़ गर्मी से ख़ून के अंदर पानी की कमी होजाती है और ख़ून गाढ़ा होजाता है और इस गर्मी के असर से दिमाग की बारीक नसों में शदीद किस्म की ख़ुशकी पैदा हो कर पूरे दिमाग की नसों से लचक ख़त्म होजाती है, जब तक दिमाग की नसों में सर्दी तरी पैदा नहीं होती है उस वक़्त में दर्द ख़त्म नहीं होता है, ये दोनों बीमारी में सर में दर्द आरज़ी होता है क्यों की नस ज़िंदा रहती है इस लिए बीमारी ख़त्म होने के साथ दर्द ख़त्म होजाता है, लेकिन जब सर में दर्द हमेशा रहने लगता है तो इस बीमारी का इलाज कर लेना बेहतर है, ये दर्द अगर अचानक कभी शुरू होजाता है और कुछ देर में ख़त्म होजाता है और दुबारा अचानक शुरू हो कर ख़त्म होजाता है इसका मतलब है बीमारी अभी शुरूआती दौर में है सर दर्द

की बीमारी अभी काएम नहीं हुई है, सर दर्द की बीमारी में जब नसों में ख़ुशकी पैदा हो जाए तो सर दर्द का मर्ज़ पहले आधा सर दर्द उसके बाद पूरा सर दर्द का मर्ज़ काएमी होजाता है, ये सिर्फ़ सर-दर्द नहीं है इसके पीछे दूसरी बड़ी बीमारीयों का ख़तरा मौजूद रहता है ये बीमारी हमेशा के लिए ठीक होजाती है, माजून कलबिया मोतदिल और उसके साथ में लुआब पैदा करने के लिए अगर मरीज़ औरत है तो माजून लबाब शबाब इस्तेमाल करें और अगर मरीज़ मर्द है तो कलबिया मोतदिल माजून के साथ माजून याक़ूत मुक़व्वी ख़ास को इस्तेमाल करें और अगर इस दोनों माजून के साथ में इतरीफ़ल सरसरा को इस्तेमाल करते हैं तो ज़्यादा बेहतर है क्यों की ये माजून इतरीफ़ल सरसरा पेट के अंदर की हर तरह की बीमारी ख़त्म करने में मदद करता है और पूरे जिस्म की सारी बीमारीयां पेट के रास्ता से हो कर दाख़िल होती है, ये तीन तरह की दवा को इस्तेमाल करते हो तो ये दवा काएमी सिरदर्द की बीमारी को हमेशा के लिए ख़त्म करने में मदद करती है।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून और अगर टैब्लेट है तो एक एक टैब्लेट सुबह ख़ाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को खाना खाने से एक दो घंटा पहले दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें,सिर्फ खट्टी चीज़ों से परहेज़ करें।

जुनून आधा या पूरा पागलपन की बीमारी के इलाज का तरीक़ा

पागलपन आधा हो या पूरा पागलपन है इस बीमारी का ईलाज इस दवा से करें

कलबिया मोतदिल माजून

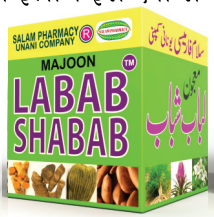

लबाब शबाब माजून

शबाबे कलबिया माजून

अगर चहरा, जिस्म पर सूजन है तो उसको दो डब्बा खिला दें सूजन खतम होजाएगी

बासीर टैब्लेट

पागल पन की कई वजूहात होती हैं एक असल पागलपन ये होता है कि दिमाग के अंदर गर्मी बढ़ जाती है, ख़ून में सफ़रा बढ़ जाता है दिमाग में फ़ासिद हरारत ग़ालिब आजाति है और नसों की लचक ख़त्म हो जाती है, दिमाग का अगला हिस्सा(अक़्ल) काम करना बंद कर देती है दिमाग का अगला हिस्सा जो हर तरह के अच्छे बुरे फ़ैसले का हाकिम होता है, किस बात का सही जवाब क्या होगा और किसी काम के करने या ना करने का फ़ायदा या नुक़्सान क्या होगा यानी हर काम हर बात का फ़ायदा क्या होगा नुक़्सान क्या होगा, हया और शरम पैदा करने वाला अगला हिस्सा हाकिम होता है जब

अक़्ल ख़राब हो जाये तो समझ लो कि दिमाग के अगले हिस्सा का खुलिया(सेल) ख़ुशक हो कर कमज़ोर हो रहा है और जब दिमाग की ऐसाबी झिल्ली और ऐसाबी नसों में ख़ुशकी पैदा हो कर लचक ख़त्म होजाती है और दिमाग के अंदर सुर्ख़ ख़ून वाली नसों में ख़ुशकी कमज़ोरी पैदा होजाती है तो उसकी नसों में ख़ून का दौड़ना कम या ख़त्म होता है तो पागलपन शबाब पर होता है और चीख़ना चिल्लाना बढ़ जाता है और जब अक़्ल याददाश्त से अलग हो जाती है तो दिमाग का अगला हिस्सा ख़ामोश हो जाता है तो दिमाग में अंधेरा पैदा होजाता है और दिमाग अपनी सारी हिस को मुतहर्रिक कर के इसे ठीक करने की कोशिश करता है कि अक़्ल मुतहर्रिक होजाए, कान की सुनी हुई बातों का सही जवाब नहीं मिलता सबसे ज़्यादा जिस बात पर दिमाग मुतहर्रिक रहता है वही हरकत लोगों के सामने होती है, क्योंकि दिमाग को इस की आदत होजाती है इस लिए बग़ैर सोचे इस पर मुतहर्रिक होता है इस का इलाज से पहले पूरे दिमाग की पूरी हिस को मुतहर्रिक करना है जब दिमाग की पूरी नसों में लचक और हरकत पैदा होगी तो धीरेधीरे दिमाग, अक़्ल और याददाश्त सब थोड़ा थोड़ा काम करना शुरू कर देंगे, दिमाग की गर्मी ऐतेदाल पर आने लगेगी और दिमाग पूरी तरह से मुतहर्रिक हो जाएगा, गहरी नींद आने लगेगी, सेहत की हालत कुछ बेहतर होने की अलामत ज़ाहिर होने लगेगी, कम-अज़-कम दो महीना तक एक छोटा सा चेक्प समझ कर इस दवा को शुरू करें, किसी भी गेज़ा को बदन का जुज़ बन जाने में चालीस दिन जाता है दो महीना पूरा होने पर आपको सही फ़ैसला लेने में आसानी होगी, **माजून कलबिया मोतदिल**, **माजून लबाब शबाब** और **बरगीन टैब्लेट** से इलाज करें जब डेढ़ महीना हो जाए तो **मगज़ीन टैब्लेट** का इज़ाफ़ा करलें ताकि नसों की दीवार ठोस होने लगे और लुआबी झिल्लियों में ताक़त बढ़कर खुलिया का रेशा मज़बूत हो जाये इसलिए **मगज़ीन टैब्लेट** चलाना बेहतर है, अगर मरीज़ के चेहरे पर हमारी दवा शुरू करने से पहले सूजन या ढीलापन मौजूद हो तो दवा शुरू करते वक़्त ऊपर की दवा के साथ सिर्फ **बासीर टैब्लेट** का इज़ाफ़ा करलें और उसके बाद सिर्फ नीचे की तीनों दवा चलाएँ, अगर बहुत ज़्यादा बेहतर करना हो तो साथ में **माजून शबाबे कलबिया** का इज़ाफ़ा कर सकते हैं इस से सेहत में ताक़त बढ़कर शिफा कामिल होगी, ऊपर बताई गई दवा का फ़ायदा एक महीना के अंदर ज़ाहिर होजाता है अगर आपको पहला महीना में फ़ायदा दिखाई देगा तो दूसरे महीना में फ़ायदा उतना ज़ाहिर होगा की आम आदमी को समझ में आजाएगा और आगे मुकम्मल इलाज करके मुकम्मल शिफा में मदद मिलेगी, ये दवा दिमाग को मुतहर्रिक करने में मदद करती है।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून और अगर टैब्लेट है तो एक एक टैब्लेट सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को खाना खाने से एक दो घंटा पहले दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें।

हाई ब्लड प्रैशर की बीमारी या लो ब्लड प्रैशर का मर्ज़ है उसके इलाज का तरीक़ा

ब्लड प्रैशर हाई(High BP) होने पर इस दवा को इस्तेमाल करें

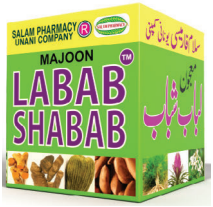

लबाब शबाब माजून

कलबिया मोतदिल माजून

बासीर टैब्लेट

ख़ून का दबाव घट जाना लो ब्लड प्रैशर(Low BP) केलिए इस दवा को इस्तेमाल करें

याकूत मुकव्वी खास माजून

कलबिया मोतदिल माजून

पैगामे शिफा टैब्लेट

हाई ब्लड प्रैशर में ख़ून का दबाव बढ़ जाता है जब नसों की लचक कम या ख़त्म हो जाती है और नसों में तंगी पैदा हो जाती है, ख़ून के चलने में दुशवारी पैदा होती है ख़ून के अंदर मौजूद फ़ासिद ज़र्रात ख़ून के चलने में रुकावट पैदा करते हैं, इस लिए दिल के ऊपर दबाव बढ़ जाता है, दिल की धड़कन तेज़ हो जाती है, जिस्म के हर आज़ा को मुसलसल ख़ून की रसद नहीं पहुँचती है ख़ून की रसद क़ुदरती निज़ाम से मुख़्तलिफ़ हो कर बेतरतीब हो जाती है, जिस्म के हर आज़ा को जिस रफ़्तार से ख़ून की रसद मिलनी चाहीए वो नहीं मिलती, दिमाग की नस बारीक होती है इसी लिए जिस्म की हर तरह की हरकत में लर्ज़ा पैदा हो जाता है, हाथ पैर में थरथराहट या भारी पन पैदा होजाता है, आँखों में धुंदलापन या अंधेरा छाजाता है, सर में भारीपन या चक्कर आने लगता है, सांस फूलने लगती है क्योंकि दिल की धड़कन तेज़ होने की वजह से हवा की ज़रूरत बढ़ जाती है और फेफड़ा जल्दी जल्दी दिल को हवा देने लगता है इसी लिए सांस फूलने लगती है और इसी लिए ब्लड प्रैशर हाई हो जाता है और नसों में मौजूद तंगी नसों में सिकुड़ने फैलने की ताक़त का कम होजाना या ख़त्म होजाना ये हाई ब्लड प्रेशर होने का ज़रीया है, इनमें से पूरे या किसी एक दो अस्बाब के पैदा होने से दिल को बहुत ज़्यादा ताक़त के साथ पम्प करना होता है और फेफड़ा को ख़ून में हवा मिलाने के लिए बहुत तेज़ी से ताक़त के साथ बहुत जल्दी जल्दी दिल को हवा भेजना होता है क्योंकि दिल को जल्दी जल्दी फूलने पचकने की वजह से हवा की कमी हो जाती है दिल हवा को ख़ून में मिलावट करके ख़ून के ज़रीया से ऑक्सीजन(हवा) को गोश्त के रेशा खुलिया तक पहूँचाता है इसी लिए दिल की धड़कन तेज़ होने पर सांस फूलती है, इसी तरह से दिल और फेफड़ों को बहुत ज़्यादा मेहनत करनी होती है ब्लड प्रैशर हाई इस लिए होता है जब दिमाग के अंदर सोंचने वाली बातों का हुजूम होता है और सोंचने वाली इस बात का बेहतर नतीजा समझ में नहीं आता है तो दिमाग के चलने की रफ़्तार बढ़ जाती है और

ऑक्सीजन(हवा) की कमी होजाती है और दिल ख़ून के ज़रीया से ऑक्सीजन(हवा) भेजता है इस लिए ख़ून की रफ़्तार बढ़ जाती है क्यों की दिमाग के अंदर ख़ून बहुत ज़्यादा तेज़ रफ़्तारी से आते-जाते रहता है इस लिए ख़ून के नसों की दीवार ढीली होजाती है और नसों की दीवार के अंदर लुआबी जौहर के ज़र्रात निकल जाते हैं और नसों की दीवार के ज़र्रात में खुला पैदा होजाता है और धीरे धीरे नसों की दीवार सिकुड़ती है और नसों में तंगी पैदा होजाती है और मुसलसल ब्लड प्रैशर हाई होते रहता है, इस बीमारी को जुगाड़ से चलाने से ज़िंदगी भाड़े की होजाती है और ख़ून पतला करने वाली दवा से सिर्फ आराम महसूस होता है और बीमारीयों में इज़ाफ़ा होते रहता है, बात ब्लड प्रैशर पर ख़त्म नहीं होती बल्कि बहुत सी बीमायों की यहां से शुरूआत होती है, ख़ून पतला करने से जिस्म के दूसरे आज़ा कमज़ोर होना शुरू होजाते हैं इन्सान अपनी उम्र से बीस साल आगे का होजाता है, नसों की बीमारी उस का मुक़द्दर हो जाती है, दिल और फेफड़ा ख़ासकर कमज़ोर हो जाते हैं, मरीज़ अगर औरत है तो उसकी निस्वानियत ख़त्म हो जाती है और अगर मरीज़ मर्द है तो इस मर्ज़ यानी ब्लडप्रेशर में सबसे पहले मर्दाना ताक़त ख़त्म या इंतिहाई कमज़ोर होजाती है और जुफ़्ती इसके लिए मौत का सबब बन सकती है या दिल के मर्ज़ का सबब बन जाती है क्योंकि जुफ़्ती के वक़्त जिस्म के हर आज़ा मुतहर्रिक हो जाते हैं और दिल के ऊपर बहुत ज़्यादा दबाव बढ़ जाता है जबकि ब्लड प्रैशर के मरीज़ का दिल पहले से हर वक्त जिस्म के हर आज़ा को घसीट रहा होता है एक साथ जिस्म के हर आज़ा की नसों को मुतहर्रिक करना दिल और फेफड़े के लिए मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है और जैसे जैसे वक़्त गुज़रता है कमज़ोरी और बड़ी बीमारीयों का ख़तरा बढ़ता रहता है लिहाज़ा इसका इलाज करना बेहतर होता है, जुगाड़ से ज़िंदगी को घसीटना सेहत के लिए ठीक नहीं है, इस बीमारी में **माजून कलबिया मोतदिल** और **माजून याक़ूत मुक़व्वी ख़ास** ये दोनों दवा एक साथ तीन चार महीने चलाएँ लेकिन पहले महीना में **बासीर टैब्लेट** का इज़ाफ़ा करलें ताकि अंदरूनी आज़ा की सूजन वग़ैरा ख़त्म हो जाये और साथ में **मगज़ीन टैब्लेट** का इज़ाफ़ा करलें, अगर ये चार दवा को एक साथ शुरू करते हो तो पहले पंद्रह दिन की दवा से आपको गहरी नींद आना शुरू होजाती है घबराहट बेचैनी धीरे धीरे मुकम्मल ख़त्म होजाती है, दो महीना पूरा होने के बाद या तीसरे महीना से ब्लड प्रैशर हर दूसरे दिन चेक करलें ताकि आपको इतमीनान होता रहे वैसे पहले महीना के बाद से आपकी तबीयत में बदलाव होना शुरू होजाता है, इस दवा से हार्ट ब्लड प्रैशर की बीमारी को ये दवा ख़त्म करने में मदद करती है।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को भी खाना खाने से एक या दो घंटा पहले एक एक टैब्लेट दस दस ग्राम माजून सादा पानी से इस्तेमाल करें।

सख़्ती से परहेज़ करें :जब आप ब्लड प्रैशर की दवा शुरू करेंगे तो जब नसों को, दिल को, फेफड़ा को ताक़त मिलेगी तो जिस्म के सारे आज़ा की नसों में हरकत पैदा होगी और ताक़त बढ़ेगी तो जुफ़्ती की ख्वाहिश पैदा होना शुरू हो जाएगीगी लेकिन जुफ़्ती से परहेज़ करें अगर औरत मरीज़ है तो मर्द से और अगर मर्द मरीज़ है तो औरत से परहेज़ करे और दूसरा परहेज़ हर तरह के मादा जानवर का गोश्त और ख़ासकर बड़े के गोश्त से परहेज़ करें और हर तरह की खट्टी चीज़ों का परहेज़ करें।

दिल की कमज़ोरी दिल का दौरा पड़ना और ख़ून की नाली में फ़ासिद बलग़म के ज़र्रात जमा होजाना और घबराहट बेचैनी के इलाज का तरीक़ा ये है।

बासीर टैब्लेट

ज्वाला खास टैब्लेट

आबे शबाब माजून

कलबिया मोतदिल माजून

दिल की बीमारी में घबराहट बेचैनी है या दिल की नालीयों में फटे हुए बलग़म के ज़र्रात जमा होजाने से दिल की नसों की नालीयों में ख़ून को रवानी के साथ चलने में रुकावट पैदा होती है या दिल की नसों की दीवार कमज़ोर भुरभुरी होजाती है तो दिल की नसों में सिकुड़ने का यक़ीन बढ़ जाता है और जब दिल की नसों में भुरभुरापन पैदा होता है तो उसका असर सिर्फ दिल के वाल दिल के नसों के इलावा पूरे जिस्म के आज़ाए रईसा(फेफड़ा, जिगर, गुर्दा) के इलावा पूरे जिस्म के लुआबी आज़ा और ऐसाब की नसों झिल्लियों के ऊपर कमज़ोरी का असर आचुका रहता है, दिल का दौरा उस वक़्त तक नहीं पड़ेगा जब तक ऐसाबी झिल्लियों और लुआबी आज़ा के ऊपर कमज़ोरी और ढीला कर देने वाली ख़ासीयत पैदा होजाती है तब जाकर दिल का दौरा पड़ता है, बेहोशी और बेजान होने का अमल दिल के रुक जाने बंद होजाने से होता है इस लिए लोगों का दिमाग सिर्फ दिल के ऊपर मर्कूज़ होता है, दिल का दौरा पड़ने में सबसे अहम रोल सबसे अहम काम फेफड़ा का होता है, जब तक फेफड़ा दिल को हवा भेजते रहता है तब तक दिल की धड़कन चलते रहती है और दिल हवा को ख़ून में मिलावट करके पूरे जिस्म को ख़ून और हवा भेजते रहता है और पूरे जिस्म के ऊपर ज़िंदगी का एहसास ज़ाहिर होता है और जब फेफड़ा के वाल और फेफड़ा की नसों में कमज़ोरी ढीलापन पैदा होता है तो सांस फूलने की बीमारी शुरू होती है और जब दिल की बीमारी का असर होता है तो सांस फूलने की शक्ल बदल जाती है, दिल की बीमारी शुरू होने की पहचान ये है की जब मेहनत करता हो या ऊपर की तरफ़ सीढ़ी पर या ऊंचाई पर चढ़ता है तो सांस खींचने की शक्ल ये होती है की सांस खींच खींच कर लेता है जैसे फेफड़ा सिकुड़ रहा है और दिल का मरीज़ सांस खींच कर फेफड़ा को फुलाने की कोशिश करता है और फेफड़ा रुक रुक कर चल रहा हो ये अलामत शुरूआती है जैसे जैसे फेफड़ा का वाल और दिल का वाल कमज़ोर और ढीला होते जाएगा दिल का दौरा पड़ने की अलामत क़रीब होती जाती है, आम आदमी को या दमा के मरीज़ को जब सांस फूलती है तो ये सांस जल्दी जल्दी खींचता है और फेफड़ा में किसी तरह की रुकावट का एहसास नहीं होता है और दोनों तरह

के लोगों में ये फ़र्क़ होता है की जब सेहत मंद या दमा के मरीज़ को ऑक्सीजन(हवा) की कमी महसूस होती है तो जल्दी जल्दी सांस लेकर बाहर का ऑक्सीजन(हवा) को खींच कर जल्दी जल्दी दिल के वाल में दाख़िल करता है और दिल इस ऑक्सीजन को ख़ून में शामिल करके पूरे जिस्म के रेशा खुलिया तक हवा(ऑक्सीजन) और ख़ून पहुँचा देता है और दिल का दौरा जब पड़ता है तो दिल की धड़कन रुक जाती है, दिल की धड़कन रुक जाने ठहर जाने की बुनियादी ख़राबी सिर्फ दिल के वाल में नहीं है हक़ीक़त और असलीयत ये है की दिल का वाल और फेफड़ा का वाल दोनों के अंदर कमज़ोरी और ढीलापन भुरभुरापन पैदा होजाता है तो जिस्म के अंदर ऑक्सीजन की ज़रूरत बढ़ जाने से फेफड़ा जल्दी जल्दी दिल की तरफ़ हवा भेजने से क़ासिर होता है, फेफड़ा के ज़ईफ़ होने से दिल का दौरा पड़ता है दिल की धड़कन इस तरह से रुक जाती है जब दिमाग बहुत तेज़ी से चलने लगता है तो पूरे जिस्म के अंदर ऑक्सीजन(हवा) की कमी होने लगती है क्यों की हवा पूरे जिस्म के रेशा खुलिया के रास्ता से बाहर की तरफ़ ख़ारिज होने लगती है, हवा बहुत तेज़ी से ख़ारिज होने की वजह से जिस्म के ऊपर नमी के साथ ठंडापन ज़ाहिर होता है और सांस इसलिए फूलने लगती है क्यों की फेफड़ा बाहर से हवा को खींच कर जल्दी जल्दी बड़े तेज़ी से दिल की तरफ़ हवा को भेजता है और दिल की धड़कन इस लिए तेज़ होजाती है क्यों की दिल ख़ून में ऑक्सीजन को मिलावट करके बड़े तेज़ी से पूरे जिस्म को ख़ून और ऑक्सीजन की सप्लाइ करता है, दिल का दौरा किस तरह से पड़ता है पहले इस हक़ीक़त को समझो, फेफड़ा बाहर से ऑक्सीजन(हवा) को खींचता है तो हवा भरने के लिए फेफड़ा फूलता है और जब हवा को दिल की तरफ़ भेजता है तो फेफड़ा पचकता है सिकुड़ता है और दिल जब ख़ून को पूरे जिस्म की नालीयों में भेजता है तो दिल पचकता है सिकुड़ता है और जब दिल फेफड़ा से ऑक्सीजन(हवा) लेता है खींचता है तो दिल के अंदर फूलने की कैफ़ीयत पैदा होती है और खिंचाव पैदा होता है और फेफड़ा दिल दोनों के अंदर ख़ून और हवा की नाली है यानी मोटी और पतली नस है, इसका दो तरह से काम है एक काम नाली का है और दूसरा काम है स्प्रिंग का फुलाने में मदद करती यानी दिल और फेफड़ा को फुलाने में फूलने में मदद करती है और जब दोनों के नालीयों की दीवार कमज़ोर और नरम होजाती है तो दिल का दौरा पड़ना यक़ीनी होजाता है, जब फेफड़ा हवा भेजने के बाद अभी पचकने वाली भेजने वाली पोज़ीशन में होता है और दिल हवा लेने के बाद दुबारा हवा खींचने की पोज़ीशन में होता है तो फेफड़ा दिल के खिंचाव से फूलने से क़ासिर होता है और फुलाव नहीं होता है इसलिए दोनों के बीच की नाली चिपक जाती है और दिल की धड़कन रुक जाती है इसको दिल का दौरा कहते हैं और अगर इसी दरमियान में दो चार दस मिनट में फेफड़ा बाहर से हवा को धीरे धीरे खींच लेता है और फेफड़ा फूल गया तो ये दुबारा दिल की तरफ़ हवा भेज देता है और दिल की धड़कन दुबारा शुरू होजाती है और मरीज़ होश में आने लगता है और दिल का दौरा पड़ने के बाद मरीज़ को होश में लाने के लिए दिल की धड़कन शुरू करने का ये तरीक़ा बेहतरीन है की दिल की धड़कन रुक जाने के बाद फ़ौरन मरीज़ के मुँह में मुँह लगाकर फूंक मारा जाये इस अमल से मरीज़ को फ़ौरन होश आजाएगा, दूसरा तरीक़ा है मरीज़ की नाक में लख़लख़ा सूँघाया जाये लख़लख़ा से दिमाग का रेशा खुलिया मुतहर्रिक होते ही छींक आ जाएगी और दिल फेफड़ा की नसों पर हलचल पैदा होगी और दिल की

धड़कन बहाल होने का यक़ीन बढ़ जाता है लेकिन अक्सर लोगों को देखा गया है दिल की धड़कन रुकने के बाद सीना पर ज़ोर ज़ोर से ताक़त से हुमचाते दबाते हैं ये ग़लत और नुक़्सान करने वाला अमल है मरीज़ के मुँह में फूंक मारना बेहतर है क्यों की फेफड़ा ही सब कुछ है और घबराहट बेचैनी होने की असल हक़ीक़त ये होती है की या तो दिल के नसों की दीवार कमज़ोर होने से नसों की गोलाई ख़त्म हो कर नसों में चिपटा होने की सिफ़त बैठ जाने की सिफ़त पैदा होजाती है तो जब दिमाग किसी बात पर तेज़ी से चलने लगता है और ख़ून के अंदर हवा की कमी होती है तो इस तरह की कमज़ोर नसें चिपकने लगती हैं और ख़ून के दबाव से चिपकी हुई नस पर दर्द महसूस होता है और घबराहट बेचैनी बढ़ जाती है और तीसरी ख़राबी आम तौर से पाई जाती है उसको बोलते हैं की ख़ून की नाली में चर्बी जम गई है या चर्बी की वजह से नसों की नाली बंद हो रही है इस लिए ख़ून को चलने में रुकावट पैदा होती है और दिल की धड़कन में ख़लल पैदा होती है इसलिए घबराहट बेचैनी पैदा होती है, ये हक़ीक़त है की ख़ून की नाली में सुद्दा पैदा होता है और ख़ून की नाली में जो माद्दा जमा हो कर मुंजमिद हो कर बैठ जाता है वो माद्दा चर्बी नहीं है क्यों की ख़ून की गर्मी से और ख़ून की धारा से और ख़ून के अंदर मौजूद सफ़रा से ख़ून की किसी भी नाली में चर्बी ना तो ठहर सकती है और ना ही चिपक सकती है, ख़ून की नाली में चिपकने वाला माद्दा क्या है पहले उसको समझो, लुआब के अंदर तेल पानी के साथ ठोस करने वाली गोंद का माद्दा होता है ये तेल और गोंद जगह बदलने से नाम और काम की शक्ल बदल जाती है, उसी तेल पानी गोंद के मुरक्कब से जिस्म के अंदर मुर्दा हो रहे खुलिया रेशा को दुबारा ज़िंदा करने में मदद मिलती है, हर रोज़ इन्सानी जिस्म के अंदर खुलिया रेशा मुर्दा होते रहता है और इसी लुआब के ठोस करने वाले तेल पानी गोंद के मुरक्कब से गोश्त का खुलिया रेशा दुबारा ज़िंदा होते रहता है, ख़ून की नालीयों में चिपक कर ठहर जाने वाला ये माद्दा लुआब का एक फ़ासिद ज़र्रात का मुर्दा जुज़ है, जब आपका लुआब पक जाता है और पीला होजाता है तो ये बलग़म मुर्दा बेजान होजाता है, अब इसके अंदर जरासीम वाइरस फफूंद पैदा होना यक़ीनी है ख़ून के अंदर नसों को रिपेर करने के लिए नसों को ताक़त देने के गोश्त का रेशा खुलिया को दुबारा ज़िंदा करने के लिए ख़ून में लुआब की बहुत मामूली मिक़दार मौजूद रहती है जब ख़ून के अंदर का ये लुआब फ़ासिद हो कर पीला मुर्दा हो कर फट जाता है तो इसी बलग़म के फटे हुए ज़र्रात ख़ून की नालीयों में जमा होते रहता है और कुछ पेशाब के रास्ता से ख़ारिज होते रहता है, इस फटे हुए फ़ासिद बलग़म के ज़र्रात में तेल पानी के साथ में गोंद भी होता है इस लिए ये बड़े आसानी से नसों की अंदरूनी दीवार पर चिपक जाता है, ये माद्दा ख़ून की नाली में रहता है इस लिए इसके अंदर जरासीम वाइरस पैदा नहीं होते हैं लेकिन दूसरी जगह ये पके हुए पीले बलग़म के ज़र्रात में बलग़मी वाइरस फफूंद पैदा होजाती है और फोड़ा फुंसी दाना गाँठ गिलटी को बनाने में मदद करती है, अब हम अपने तरीक़ा इलाज को वाज़ेह करता हूँ, अगर आपका लुआब पीला फ़ासिद बलग़म की शक्ल एख्तियार कर गया है तो उसको ख़ारिज करके साफ़ करोगे तो जिस्म के अंदर कमज़ोरी और दूसरी तक्लीफ शुरू हो जाएगी या जोड़ों की बीमारी या कमर पीठ दर्द की बीमारी शुरू हो जाएगी क्यों की जब तक लुआब के अंदर से ज़हरीले असरात ख़त्म नहीं होंगे पीला बलग़म ख़ारिज होता रहेगा और अगर ये पीला बलग़म फेफड़ा में ख़ुशक हो गया तो फेफड़ा

मैं तंगी पैदा हो जाएगी और सांस फूलने की बीमारी या मुस्तक़िल दमा की बीमारी होजाना यक़ीनी है इस लिए एक दवा का नाम याद करलो **कलबिया मोतदिल माजून** ये दवा पूरे जिस्म के लुआब को और लुआबी आज़ा के रेशा खुलिया के अंदर से हर तरह के ज़हरीले असरात ख़त्म करती है, जो लुआब को फ़ासिद करके पीला बलग़म की शक्ल में तबदील करके बड़ी बड़ी बीमारीयों को पैदा करने का अस्बाब बनाती है, इस दवा **कलबिया मोतदिल** की ख़ास सिफ़त ये है की लुआब के अंदर इस्लाह पैदा करके फ़ासिद हो रहे लुआब को क़ुदरती हालत पर लाने में मदद करती है अगर आपके फेफड़ा में या दिल के वाल या दिल की नसों में या पूरे जिस्म के नसों की नालीयों में पके हुए पीले बलग़म के फ़ासिद ज़र्रात मौजूद हैं तो ये **माजून कलबिया मोतदिल** इस फ़ासिद मुर्दा बलग़म के ज़र्रात को धीरे धीरे इस में इस्लाह पैदा करके इसको क़ुदरती हालत पर लाने में मदद करती है, इस दवा को कम से कम दो महीना तक इस्तेमाल करके जब आप अपना ख़ून चेक कराओगे या नसों के अंदर की कैफ़ीयत की मालूमात देने वाली रिपोर्ट निकालोगे तो आपको इसका फ़ायदा मालूम हो जाएगा और इस दवा की बेहतरीन सिफ़त ये है की ये दवा पहली ख़ुराक से अपना फ़ायदा ज़ाहिर करती है और हर रोज़ अपने इस्लाह पैदा करने वाले निज़ाम का असर ज़ाहिर करती रहेगी, अगर आपको दिल का दौरा पड़ चुका है या दिल की बीमारी का एहसास हो गया है या ख़ून की नालीयों में फ़ासिद बलग़म के ज़र्रात होने का यक़ीन है तो इस दवा को आपके इस्तेमाल करने से ये बीमारी हमेशा के लिए ख़त्म होजाती है और ये दवा ख़ून की नालीयों में मौजूद बलग़म के ज़र्रात को साफ़ करके ख़त्म करने में मदद करती है और दूसरी दवा का नाम है **माजून आबे शबाब** ये दवा लुआबी आज़ा को और ऐसाबी नसों झिल्लियों की ताक़त बढ़ाती है और उसको ठोस मज़बूत करने में मदद करती है **माजून आबे शबाब** का फ़ायदा और पूरी जानकारी **सलाम फार्मेसी यूनानी कंपनी** की दवाओं का फ़ायदा से जानकारी हासिल करें और तीसरी दवा का नाम है **ज्वाला ख़ास टैब्लेट** ये दवा लुआब के अंदर हरारते अज़ीज़िया को बड़े तेज़ी से बढ़ाती है और लुआब के अंदर का ठंडापन ख़त्म करके लुआब को लुआबी आज़ा में पेवस्त करके लुआबी आज़ा को ठोस और मज़बूत बनाकर लुआबी आज़ा की ताक़त को काएम करने में मदद करती है किसी तरह की दवा की सच्चाई जानने के लिए उस दवा को एक महीना या पंद्रह दिन तक इस्तेमाल करके दवा को बंद कर देने से दवा की सच्चाई समझ में आजाती है अगर दवा जड़ी बूटी है तो पंद्रह दिन या एक महीना की दवा से आया हुआ फ़ायदा दूसरे तीसरे दिन समझ में आजाता है, जड़ी बूटी के असरात कम हो सकते हैं लेकिन ख़त्म नहीं होता है, ये दवा दिल की बीमारी को ख़त्म करने में मदद करती है दिल की बीमारी में कम से कम चार से छे महीना का कोर्स करलें आराम हो जाएगा।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून और अगर टैब्लेट है तो साथ में एक टैब्लेट सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को खाना खाने से एक या दो घंटा पहले सादा पानी से पूरी दवा को एक साथ इस्तेमाल करें।

सख़्ती से परहेज़ करें : हर तरह की खट्टी चीज़ों का और सिर्फ सब्ज़ी टमाटर खा सकते हैं और बड़े के गोश्त में ख़ासकर मादा जानवर का गोश्त हरगिज़ ना खाएँ।

कैंसर की बीमारी गाँठ गिलटी के अस्बाब और उसके इलाज का तरीक़ा ये है

शुरुआती कैंसर है तो ये दवा चलाएँ

कलबिया मोतदिल माजून | **आबे शबाब माजून** | **ज्वाला खास टैब्लेट** | **बरगीन टैब्लेट** | **मगज़ीन टैब्लेट**

अगर गांठ गिल्टी है तो माजून ज्वाला खास का इज़ाफ़ा करें

ज्वाला खास माजून

अगर सूजन किसी आज़ा में है तो इस दवा का इज़ाफ़ा करलें

बासीर टैब्लेट

इसको साथ में चलाएं तो बेहतर है

शबाबे कलबिया माजून

इन्सानी जिस्म के अंदर दो तरह के गोश्त होते हैं एक तरह के गोश्त के रेशा खुलिया में सुर्ख़ ख़ून होता है और दूसरी शक्ल के गोश्त के रेशा खुलिया में सिर्फ लुआब होता है, सुर्ख़ ख़ून के अंदर या तो ज़हरीले असरात या किसी तरह की ग़लाज़त की वजह से कुछ बीमारीयों की शक्ल ज़ाहिर होती है या ख़ून के अंदर बहुत मामूली नहीं के बराबर लुआब के असरात होते हैं तो इस लुआब के ऊपर कुछ बैक्टीरिया वाइरस के असरात से बीमारी की कुछ शक्ल ज़ाहिर होती है लेकिन ख़ून के अंदर ख़तरनाक किस्म के कीड़े वाइरस जरासीम पैदा नहीं हो सकते हैं इस लिए ख़ून में तीन हिस्सा पानी होता है और ये पानी ख़ून की ग़लाज़त को लेकर किडनी गुर्दा के रास्ता से हो कर पेशाब की थैली में चला जाता है और यहां से बाहर की तरफ़ ख़ारिज होते रहता है, इस तरह चौबीस घंटा ख़ून की धुलाई होते रहती है और जो दूसरी शक्ल का गोश्त होता है उस गोश्त के रेशा खुलिया में सिर्फ लुआब होता है और ये लुआब तेल पानी गोंद का मुरक्कब होता है गोंद को ठोस होने से बचाने के लिए और गोंद में बारीक ज़र्रात पैदा करने के लिए उसके अंदर तेल होता है और गोंद के बारीक ज़र्रात में पानी होता है लुआब की गोंद में पानी इस लिए होता है ताकि दिमाग के इशारे को और हर तरह की हिस्स को महसूस करने के लिए और उसको ठोस होने से मुर्दा होने से बचाने के लिए, और पानी के अंदर हवा होती है ख़ून के अंदर का पानी बदलते रहता है लेकिन लुआब

के अंदर का पानी बदलता नहीं है इसलिए लुआब के अंदर हर तरह की जरासीम वाइरस फफूंद बैक्टीरिया कीड़ी पैदा होजाने की सिफ़त मौजूद रहती है, इन्सान के पूरे जिस्म का और इन्सानी ज़िंदगी के सेहत और बीमारी मौत और हयात का पूरा निज़ाम इस लुआबी ख़मीर की मिट्टी में मौजूद रहता है इसी लिए इस लुआबी ख़मीर को किताबी ज़बान में माद्दए मन्वियह कहा जाता है क्यों की इसी लुआबी ख़मीर से इन्सानी ज़िंदगी वजूद में आती है, लुआब के अंदर हयाते ज़िंदगी यानी रूह पैदा करने की सिफ़त मौजूद है अगर लुआब के अंदर आग(सुफ़रा)-हवा-पानी और मिट्टी सेहत की हालत में मौजूद है तो इन्सान लुआबी बीमारी यानी हर तरह की बड़ी बीमारी हार्ट, ब्लड प्रैशर, फ़ालिज, लक़वा, शूगर, थायराइड और कैंसर जैसी बीमारीयों से आज़ाद होजाता है और अगर लुआब के ऊपर फ़साद पैदा हो गया यानी लुआब पक गया और बलग़म की शक्ल एख्तियार कर गया और बलग़म पीला हो गया या मुँह के अंदर बलग़म का ज़ायक़ा खट्टा हो गया या बदबूदार हो गया या बहुत ज़्यादा नमकीन हो गया तो ये अलामत है की आप बड़ी बीमारीयों में मुबतला होने वाले हो, लुआब का ज़ायक़ा फीका होना चाहीए साफ़-शफ़्फ़ाफ़ पानी की तरह से, ये सेहत की अलामत में शुमार होगा, ये सब बताने का मक़सद ज़रूरी इस लिए था क्यों की कैंसर की बीमारी लुआब के अंदर ख़राबी पैदा होने से शुरू होती है जिस्म के जिस आज़ा पर सुर्ख़ ख़ून का गोश्त जिस जगह होता है उस गोश्त को पकड़ कर बांध कर सँभालने के लिए लुआबी झिल्ली होती है, दिल, जिगर, गुर्दा, तिल्ली मुंजमिद ख़ून का लोथड़ा है, इस ख़ून के लोथड़ा को लंबी ज़िंदगी देने के लिए और उसको काएम रखने के लिए तिल्ली, जिगर, गुर्दा, दिल के ऊपर लुआब की ठोस झिल्ली होती है यही झिल्ली इस आज़ा की सेहत और बीमारी का ज़रीया होती है, अब अगर लुआबी आज़ा में ख़राबी पैदा होने से जरासीम वाइरस फफूंद या कीड़ी पैदा हो जाए तो उसको किसी ज़हर से मारा नहीं जा सकता है क्यों की जिस ज़हर से इन्सान की मौत होती है उसी ज़हर से ये कीड़ी की मौत होगी क्यों की जिस आज़ा में हयाते ज़िंदगी है उसी के अंदर कीड़ी या जरासीम मौजूद है और अगर इस आज़ा को जलाकर उसके अंदर की जरासीम और कीड़ी को ख़त्म करना चाहते हो तो सेहत का निज़ाम बिगड़ जाता है और हयाते ज़िंदगी कम होजाती है और सेहत का निज़ाम बिगड़ जाने से मौत नज़दीक होजाती है, अब सवाल पैदा होता है की कैंसर होता किस तरह से है ? ये एक बहुत लंबी बेहस है इसका मुख़्तसर जवाब ये है की किसी बीमारी के इलाज के दरमियान आपका लुआब फ़ासिद हो कर पक गया और पीला बलग़म की शक्ल एख्तियार कर गया और इसके बाद इस बलग़म के असरात जिस्म के अंदरूनी आज़ा के अंदर दाख़िल हो गये और इसके बाद ज़ाहिर में ये बलग़म ठीक हो गया लेकिन जिस्म के किसी आज़ा के अंदर उसके ज़र्रात बाक़ी रह गए तो ये बलग़म के ज़र्रात फोड़ा फुंसी दाना की शक्ल में धीरे धीरे ख़ारिज होजाते हैं लेकिन अगर जिस्म के किसी अंदरूनी हिस्सा के बहुत ज़्यादा कमज़ोर और

नाज़ुक बीमार खुलिया रेशा के बीच में ठहर गया और इस जगह से इधर उधर होने का मौक़ा नहीं मिला और अपनी जगह पर काएम रहा तो ये फ़ासिद बलग़म के ज़र्रात में पहले फफूंद पैदा होगी, इसके ताफ़्फ़ुन से जरासीम वाइरस वजूद में आते हैं और ये अपने इर्दगिर्द के खुलिया रेशा को फ़ासिद मुर्दा बेजान करना शुरू करते हैं या तो ये गाँठ गिलटी की शक्ल एख्तियार कर लेता है या ये अपने इर्दगिर्द के आज़ा को ख़राब करने की शुरूआत होजाती है, जिस तरह से किसी लकड़ी में या किसी दूसरी चीज़ में भुकुड़ी या फफूंद लग जाये तो जिस्म तो मौजूद रहता है लेकिन उसमें जान नहीं रहती है उसकी ताक़त ठोसपन लस्सी ख़त्म होजाती है और जिस तरह फोड़ा फुंसी का ज़ख़म रहता है उसी तरह से फैला हुआ कैंसर होता है और गाँठ गिलटी जिस्म के अंदरूनी आज़ा का अंदरूनी फोड़ा है अब अगर उसको फोड़ा समझ कर फोड़ने वाली दवा से पक्का कर फोड़ते हो तो ये ख़तरनाक अमल होगा हमने इस बीमारी का इस तरह से इलाज किया है सबसे पहले कलबिया मोतदिल माजून, ये पहली दवा लुआब के अंदर और पूरे जिस्म के लुआबी आज़ा के गोश्त के रेशा खुलिया के अंदर पके हुए बलग़म और उसके ज़र्रात के ऊपर इस्लाह पैदा करने और हर तरह के ज़हरीले और फ़ासिद असरात को ख़त्म करके लुआब को क़ुदरती सेहत की हालत पर लाने के लिए मदद करते हैं और पूरे जिस्म और दिमाग के रेशा खुलिया और ऐसाब की नसों झिल्लियों को और सुर्ख़ ख़ून की नसों को और उसकी नालीयों को साफ़-शफ़्फ़ाफ़ करके ये सभी आज़ा को मुतहर्रिक करने में मदद करता है, और ये सारे आज़ा में ताक़त पैदा करने की सिफ़त को मुतहर्रिक करने में मदद करता है, और दूसरी दवा का नाम है ज्वाला ख़ास टैब्लेट ये दवा बलग़म और लुआब के ज़ायक़ा को बदलने में और लुआब के अंदर से ताफ़्फ़ुन बदबू को ख़त्म करने में मदद करता है और पूरे जिस्म के लुआब को धीरे धीरे बग़ैर ज़ायक़ा और सेहत की हालत पर लाने में मदद करता है, और तीसरी दवा का नाम है माजून आबे शबाब ये माजून पूरे जिस्म के अंदर के हर तरह के लुआबी आज़ा की ताक़त को बढ़ाने में मदद करता है और लुआब की पैदाइश को बढ़ाता है और लुआबी आज़ा को ठोस मज़बूत ताक़तवर बनाने में मदद करता है जैसे पूरे जिस्म की ऐसाबी नसों झिल्लियों को सुर्ख़ ख़ून वाली नसों की ताक़त को और लुआबी आज़ा के खुलिया रेशा की ताक़त बढ़ाने में मदद करता है, और चौथी पाँचवीं दवा का नाम है बरगीन टैब्लेट और मगज़ीन टैब्लेट ये दोनों टैब्लेट पूरे जिस्म के अंदरूनी बैरूनी हर जगह के हर तरह के आज़ा की हर तरह की जरासीम वाइरस फफूंद और कीड़ी को ख़त्म करने में मदद करता है, ये पाँच दवा हर तरह के कैंसर को ख़त्म करने में मदद करती है और अगर कैंसर के साथ में गाँठ गिलटी है तो ये पाँच दवा के साथ में माजून ज्वाला ख़ास का इज़ाफ़ा कर दें ये माजून ज्वाला ख़ास हर जगह के और हर तरह की गाँठ गिलटी को गलाकर ख़त्म करने में मदद करता है, इस दवा को दो महीना तक इस्तेमाल करने के बाद अपने इतमेनान के लिए रिपोर्ट निकालकर देखें अगर गाँठ

गिलटी वाला कैंसर है तो गाँठ गिलटी के बदलाव और कुछ हिस्सा छोटा होजाने से आपको इतमीनान होगा और तबीयत में काफ़ी से ज़्यादा बदलाव महसूस होगा और शुरूआती दौर का कैंसर है तो बहुत जल्द बड़े आसानी से ख़त्म होजाता है और एक ख़ास बात ये भी याद रखलो की अगर गाँठ गिलटी है तो इस में इंजेक्शन से या किसी दूसरे तरीक़ा से गोश्त को काटना नहीं चाहीए क्यों की लुआबी आज़ा पर अगर ज़ख़म होजाता है तो ये ज़ख़म किसी सूरत में ख़ुशक नहीं होता है और इस जगह जरासीम वाइरस कीड़ी फफूंद का पैदा होना यक़ीनी है क्यों की क़ुदरती निज़ाम के तहत लुआब के अंदर कीड़ी कीटाणु पैदा होना इसकी ख़ास सिफ़त है, अगर मरीज़ मर्द है तो कीड़ी बड़े आसानी से पैदा होगी और अगर मरीज़ औरत है तो पहले फफूंद और सड़ान्द ताफ़्फ़ुन पैदा होगा इसके बहुत बाद में आख़िरी दर्जा में कीड़ी पैदा होगी, इसकी असल हक़ीक़त ये है की मर्द के लुआब में कीटाणु पैदा करने की ख़ासीयत होती है और औरत के लुआब में अण्डा पैदा करने की ख़ासीयत होती है और अगर ये दोनों सिफ़त मर्द और औरत में नहीं है तो ये इन्सानी सिफ़त और क़ुदरती निज़ाम से बाहर की सिफ़त मौजूद है, लुआबी आज़ा में ज़ख़म किसी भी तरीक़ा को इस्तेमाल करके किया जाये और जब लुआबी आज़ा में कोई बीमारी नहीं होती है तो लुआबी आज़ा के अंदर क़ुव्वते मुदाफीअत होती है इस लिए जब किसी तरह का मर्ज़ बीमारी नहीं है तो ये ज़ख़म बड़े आसानी से ख़ुशक हो जाता है, अब अगर मरीज़ को किसी वजह से ज़ख़म हो गया है तो जखमीनो टैब्लेट का इज़ाफ़ा कर दें लेकिन इस तरह का ज़ख़म बड़ी मुश्किल से ठीक होता है और काफ़ी वक़्त लगता है और अगर मरीज़ के अंदर काफ़ी कमज़ोरी है तो याकूत मुक़व्वी ख़ास माजून का इज़ाफ़ा कर दें या माजून सलाम का इज़ाफ़ा कर दें और अगर मुँह के अंदर कैंसर है तो उसकी मालूमात अलग सफ़ा पर मुँह के कैंसर के उनवान में मौजूद है।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट सुबह ख़ाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें इसी तरह शाम को खाना खाने से एक या दो घंटा पहले दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें।

परहेज़ जो बहुत अहम और ज़रूरी है : हर तरह की खट्टी चीज़ों का परहेज़ करें और खाने पीने की हर वो गेज़ा जो एक दिन से ज़्यादा की बनी हो परहेज़ करें, ताज़ा खाना ताज़ी गेज़ा हर तरह का ताज़ा जूस इस्तेमाल करें जो ताज़ा फल का हो, हर तरह का बासी खाना कैंसर की जरासीम बढ़ाने का सबब है और हर तरह की ताज़ी चीज़ों में ठोस करने का माद्दा और क़ुव्वते मुदाफीअत बहुत ज़्यादा होती है, हम जो माजून बनाते हैं इस में ख़ुशक जड़ी बोटियों का पाउडर होता है और शहद दोनों को मिलाने चीज़ों को मिलाने से क़ुदरती हालत पैदा होजाती है, आप भी आज़मा लें माजून जितना पुराना होगा उतना ही बेहतर होगा लेकिन किसी तरह की बदबू नहीं होती और ख़राब नहीं होता अगर पानी लग जाये तो ख़राब होजाता है।

मुँह या नाक से ख़ून जारी हो गया है तो इस बीमारी को ख़त्म करने का तरीक़ा इलाज

इस दवा से हर जगह का ज़ख़म ख़ुश्क होजाता है और ख़ून का जारी होना बंद करदेता है

जखमीनों टैब्लेट

बासीर टैब्लेट

बरगीन टैब्लेट

ख़ून किसी भी आज़ा से आरहा हो तो उसका मतलब है अंदरूनी आज़ा में ज़ख़म का मौजूद होना और इस ज़ख़म के होजाने की बहुत सी वजूहात होती हैं जैसे अगर मुँह से ख़ून आ रहा है और उसका रंग काला सुर्ख़ है तो ये पेट के किसी हिस्सा से आरहा है जैसे मेदा या छोटी बड़ी आंत या लीवर में कहीं फोड़ा दाना ज़ख़म की शक्ल एख़्तियार कर गया है, या मेदा में ख़राश पैदा हो कर ज़ख़म की शक्ल बन चुका हो या कीड़ों की वजह से ख़राश पैदा हो कर ज़ख़म हो गया हो या सूजन हो गई हो या ये आज़ा इतने कमज़ोर हालत में मौजूद हों कि इस जगह के रेशे से ख़ून जारी हो जाता है, फेफड़े के अंदर से ख़ून जारी होता है लेकिन इस में घबराने की ज़रूरत नहीं है अगर फेफड़े से ख़ून की उल्टी हो रही है या मामूली ख़ून आता हो तो इस ख़ून का रंग सुर्ख़ गुलाबी होगा, ख़ून के रंग से जगह का अंदाज़ा होजाता है, फेफड़े का ख़ून सुर्ख़ गुलाबी होता है क्योंकि जो ख़ून फेफड़े में बनता है वो ख़ून सबसे बेहतरीन ख़ून होता है इस ख़ून की लंबी कहानी है ख़ून की उल्टी हो रही हो या हल्का ख़ून आरहा हो ये सभी तरह के ख़ून को आने से रोकता है **जखमीनो टैब्लेट, बासीर टैब्लेट** और **बरगीन टैब्लेट**, इन तीन दवाओं से ख़ून जिस्म के किसी भी आज़ा से जारी हो रहा है उसको बंद कर देता है और दवा शुरू करने के बाद तीन से पंद्रह दिन के अंदर रोक देता है लेकिन ज़ख़म को हमेशा के लिए ठीक करना है तो दो महीना से ज़्यादा जितना इस्तेमाल करें उतना ही आप के लिए बेहतर होगा और इसी दवा से दूसरी कई तरह की बीमारीयां होने से पहले ही ख़त्म होजाती हैं क्योंकि ये दवा दूसरे आज़ा की जरासीम और ज़ख़म दोनों को ख़त्म कर देते हैं, अगर ख़ून नाक से आरहा है तो इस की कई वजूहात हैं यातो दिमाग की किसी झिल्ली में वरम या ख़राश पैदा हो कर ज़ख़म बन कर ख़ून आरहा है या नाक के किसी हिस्सा में ख़राश पैदा हो कर ख़ून जारी होता है या किसी बहुत कमज़ोर और बारीक नस के फट जाने से ख़ून जारी होता है, लेकिन अगर ख़ून किसी कमज़ोर नस से जारी होगा तो ये ख़ून रुक रुक कर जारी होता रहेगा यानी अगर उस का सही इलाज हो तो हमेशा के लिए बंद हो जाएगा वर्ना थोड़े दिन तक बंद रहेगा फिर जारी हो जाएगा क्योंकि बाज़ ज़ख़म में कीड़े पड़ जाते हैं, इस दवा से किसी भी तरह का ज़ख़म हो ये दवा नसों के ज़ख़म को भी सुखा देती है और **बरगीन टैब्लेट** से जरासीम कीड़ी वग़ैरा भी ख़त्म हो जाती है और ख़ून जारी होने वाली बीमारी को ख़त्म करने में मदद करता है।

तरीक़ा इस्तेमाल

टीनों दवाओं में से एक गोली सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और आधा घंटा तक कुछ ना खाएँ और इसी तरह शाम को ख़ाली पेट एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और अगर ख़ून ज़्यादा आरहा है तो जब तक ख़ून रुक ना जाये तब तक तीनों दवाओं में से दो-दो टैब्लेट इस्तेमाल करें।

मुँह ज़बान मसूड़ा में छाला या ज़ख़म हो गया है या कैंसर हो गया है इसके इलाज का तरीक़ा

इस मरज़ में खाने केलिए इस दवा का इस्तेमाल करें

जखमीनों टैब्लेट | बासीर टैब्लेट | बरगीन टैब्लेट | ज्वाला खास टैब्लेट | मगजीन टैब्लेट

अगर बहोत ज़्यादा कमज़ोरी है तो आबे शबाब माजून का इज़ाफा करलें

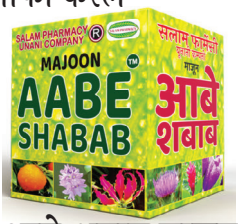

आबे शबाब माजून

पेट के अंदर की खराबी खतम करने केलिए इतरिफल सरसरा को इस्तेमाल करें

इतरिफल सरसरा

मुंह में रखने केलिए रोगन पाइरिया इस्तेमाल करें

फानूस तेल

या

रोगन पाइरिया

मुँह में गले के अंदर ज़बान और मसूड़ों के गोश्त में लुआब रहता है और ये सभी आज़ा के गोश्त का रेशा खुलिया लुआबी गोश्त है और उसके अंदर अगर कोई बीमारी नहीं है तो उस जगह के गोश्त का ज़ख़म बड़े आसानी से ख़ुशक होजाता है और अगर उस गोश्त के रेशा खुलिया में ताफ़्फ़ुन फफूंद पैदा हो गया तो इस जगह के गोश्त का ज़ख़म ख़ुशक करना बहुत मुश्किल होजाता है इस लिए ऐसी जगह जरासीम वाइरस फफूंद पैदा हो कर कीड़ी पैदा तैयार होना आसान होता है क्यों की मर्द के लुआब में कीटाणु पैदा होने की सिफ़त क़ुदरती हालत में मौजूद है और औरत के लुआब में अण्डा पैदा होने की सिफ़त पहले से मौजूद रहती है इस लिए अगर औरत के लुआबी गोश्त के रेशा खुलिया में ख़राबी पैदा हो जाए ताफ़्फ़ुन पैदा हो जाए तो गाँठ गिलटी का पैदा होना आसान होता है और अगर मर्द के लुआब में ख़राबी पैदा हो जाए तो जरासीम वाइरस किटाणु का पैदा होना बहुत आसान होता है इस लिए अगर मुँह के अंदर मसूड़ा में या ज़बान के इर्दगिर्द या अंदरूनी गाल के किसी हिस्सा में सूजन पैदा हो जाए या छाला पड़ जाये या फोड़ा फुंसी दाना की शक्ल में कुछ ज़ाहिर होता है तो उसको काटने और चैक करने के चक्कर में नहीं

पड़ना चाहीए इसको जिस हालत में है उसी हालत में ठीक करने की कोशिश करना चाहीए इसका तरीक़ा ये है या तो अमरूद(पेरू) की पत्ती चबाकर दस पंद्रह मिनट मुँह को बंद रखो, इसी तरह से दो-चार बार कर लेने से मुकम्मल आराम होजाता है या मटर के बराबर सुहागा मुंह में रख लेने से मुकम्मल आराम होजाता है, या **फानूस तेल** या **रोग़न पायेरिया** तेल एक ढक्कन मुँह में रखकर पाँच दस मिनट तक मुँह को बंद रखने से हर तरह का सूजन ज़ख़म छाला ख़त्म होजाता है, ये तेल मुँह में रखने के दस पंद्रह मिनट के बाद थूकना तो कुल्ली नहीं करना और कम से कम आधा घंटा कुछ खाने पीने से परहेज़ करना है और अगर आपने मुँह के अंदर का कोई भी हिस्सा काट कर चैक करने के लिए भेज दिया है तो अगर पहले राउंड में कैंसर फाईनल नहीं हुआ है तो इंतेज़ार करो दूसरे राउंड में कैंसर फाईनल हो जाएगा क्यों की जब तक लुआबी गोश्त के रेशा खुलिया में क़ुव्वते मुदाफीअत और लुआब के गोश्त को ठोस करने वाला गोंद मौजूद है उस वक़्त तक लुआबी आज़ा के गोश्त में और मुँह के किसी आज़ा में किसी तरह का सूजन छाला दाना निकलने का यक़ीन नहीं होता है, बीमारी का असर उस वक़्त होता है जब ठोस करने वाला गोंद क़ुव्वते मुदाफीअत ख़त्म होजाती है इस लिए ऐसी सूरत में बग़ैर चीर फाड़ के बिना काटे इलाज करना चाहीए क्यों की मुँह के अंदर किसी हिस्सा में सेहत की हालत में चीर फाड़ होता है तो ये आसानी से ज़ख़म भर जाता है लेकिन अगर मुँह के अंदर किसी हिस्सा में सूजन पैदा हो जाए या ज़ख़म हो जाए अगर ये ज़ख़म हफ़्ता दस दिन में ठीक हो गया तो ठीक है अगर ज़ख़म दस दिन के अंदर ख़ुशक हो कर अच्छा नहीं हुआ क़ुदरती हालत में नहीं आया तो आप इस बात का यक़ीन कर लो की अब आपके मुँह के अंदर कुछ बुरा होने वाला है, अगर आपने मुँह के अंदर से गोश्त का टुकड़ा चेक करने के लिए भेज दिया है और ख़राबी पैदा हो गई है महीना दो महीना बीत गया है तो अब उसके इलाज का तरीक़ा बता रहा हूँ **जखमीनो टैब्लेट** ये आपका ज़ख़म सुखाने के लिए और दूसरा है **बासीर टैब्लेट** ये आपका सूजन ज़ख़म दोनों ख़त्म करेगा और ये **बरगीन टैब्लेट** और **मगज़ीन टैब्लेट** ये दोनों टैब्लेट जरासीम वाइरस फफूंद और कीडियों को ख़त्म करने में मदद करता है, ये चार दवा को एक साथ खाने से आपको फ़ायदा ज़ाहिर हो जाएगा और **फानूस तेल** मुँह में रखने के लिए दिन में कम से कम तीन बार मुँह में रख लिया करें ये पाँच दवा से अगर पंद्रह दिन एक महीना में कुछ बहुत अच्छा फ़ायदा ज़ाहिर होता है तो आपको इलाज मुकम्मल ख़त्म करने के लिए बहुत ज़्यादा सोंचने की ज़रूरत नहीं होगी क्यों की आप अपने लिए बेहतर सोंच सकते हो, असल दवा ऊपर बताया गया पाँच दवा है अब पेट के अंदर की ख़राबी ख़त्म करने के लिए **इतरीफ़ल सरसरा** को इस्तेमाल करें और अगर बहुत ज़्यादा कमज़ोरी है तो **माजून आबे शबाब** का इज़ाफ़ा करलें, इस दवा का असर तेज़ करना है तो दवा को तीन टाइम इस्तेमाल करें, अगर ख़राबी बहुत ज़्यादा हो गई है पंद्रह दिन एक महीना तीन टाइम दवा को इस्तेमाल करें जब तक्लीफ कम हो जाए तो दवा को दो टाइम इस्तेमाल करें।

तरीक़ा इस्तेमाल

एक एक टैब्लेट और अगर साथ में माजून है तो दस दस ग्राम माजून सुबह शाम खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें, और **फानूस तेल** या **रोग़न पायेरिया** को कम से कम दिन में तीन[3] बार मुँह में रख लिया करें।

मुँह में छाला, ज़बान पर दाना निकलना और सीने में जलन रहना उसके इलाज का तरीक़ा।

अगर मुंह ज़बान पर छाला निकलता हो तो उसका ईलाज इस दवा से करें

रोगन पाइरिया

बासीर टैब्लेट

मेदा जिगर ही सब कुछ है अगर इसमें ज़्यादा से ज़्यादा क़ुदरती चीज़ों को डालते हो तो जिस्म क़ुदरती ताक़त और सेहत का ख़ज़ाना होगा और अगर ज़्यादा से ज़्यादा मसनवी चीज़ों का इस्तेमाल करते हो तो जिस्म के तमाम आज़ा मसनवी चीज़ों के सहारे चलने के आदी हो जाते हैं और जिस्म में कोई ना कोई बीमारी की शक्ल हर वक्त मौजूद होती है, ऐसे जिस्म को हर वक्त नाप तौल के सहारे चलना होता है और बेहतरीन गाइड की ज़रूरत होती है क्योंकि ये इन्सान अब क़ुदरती दायरा इन्सानियत से निकल कर मसनवी में दाख़िल हो चुका है और उसे वापस क़ुदरती हालत में लाने के लिए क़ुदरती दवाओं का सहारा लेकर क़ुदरती दवा और गेज़ा दोनों को इस्तेमाल करना पड़ता है, अगर मुँह में छाला पड़ गया है या ज़बान पर दाना वग़ैरा निकल रहा है तो ये किसी बड़े मर्ज़ की अलामत है अगर इसको रोका नहीं गया तो पहले मेदा और जिगर कमज़ोर होगा उसके बाद छोटी बड़ी आंत उसके बाद यहां से पूरा जिस्म किसी मर्ज़ में मुब्तला होगा, अगर आप के मेदा जिगर में तक्लीफ है तो आप **बासीर टैब्लेट** इस्तेमाल करें इस से मेदा जिगर और अंतड़ियों की सारी ख़राबी ख़त्म होजाती है मुँह, ज़बान या गले में दाना वग़ैरा निकलना ख़त्म हो जाता है अगर पेट सीने या गले में जलन और दर्द भी हो तो **बासीर टैब्लेट** के साथ **मगज़ीन टैब्लेट** भी इस्तेमाल करें इस से फ़ौरी आराम मिलेगा और अगर मुँह में दाना या छाला पड़ गया है या मसूड़ों में सूजन ज़ख़्म है तो **रोग़न पायेरिया** तेल या **फानूस तेल** को एक ढक्कन मुँह में रख लें दस से पंद्रह मिनट के बाद थूक दें इसके बाद कुल्ली ना करें मुँह के अंदर का हर तरह का ज़ख़्म बहुत जल्द ठीक होजाता है।

तरीक़ा इस्तेमाल

एक एक टैब्लेट सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और इसी तरह शाम को खाना खाने से एक दो घंटा पहले एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और **रोग़न पायेरिया** को कापुस में भिगाके मुँह के छाले या दाने वाले हिस्सा में सुरती की तरह रख लें दस से बीस मिनट के लिए, इस से छाला और दाना भी ख़त्म हो जाएगा और मुँह की जरासीम और कीड़ी भी मर जाएगी, **रोग़न पायेरिया** की ज़्यादा मालूमात के लिए **रोग़न पायेरिया** का फ़ायदा पढ़ें।

अपेंडिस की बीमारी के इलाज का तरीक़ा

अपेंडिस की बीमारी का ईलाज इस दवा से करें

मगज़ीन टैब्लेट

बासीर टैब्लेट

जखमीनों टैब्लेट

अपेंडिस का मर्ज़ ऐसे हिस्सा की बीमारी है जो अंतड़ियों का एक हिस्सा होता है और ये अंग अंतड़ी का ये हिस्सा जो मख़रूती शक्ल में होता है हर इन्सान की अंतड़ी में मौजूद होता है इस का काम बहुत अहम होता है जैसे छोटी बड़ी आंत की मख़रूती शक्ल की थैली में ऐसा गोंद होता है जो अंतड़ियों को ठोस करने में मदद करता है अंतड़ी के अंदर क़ुव्वते मुदाफीअत की ताक़त को बढ़ाने में मदद करता है जब इस मख़रूती थैली में हरारत बढ़ जाती है तो ये क़ीमती गोंद फ़ासिद हो कर सुद्दा पैदा कर देता है या गाँठ गिलटी की शक्ल एख्तियार कर लेता है या छोटे छोटे दाने की शक्ल एख्तियार कर लेता है, ये थैली इतनी सख़्त होती है कि इस के फटने का यक़ीन नहीं होता है हाँ इस मख़रूती थैली में बढ़ने की ख़ासीयत होती है मगर उस को रहने की जगह भी होती है इस में दर्द तक्लीफ इस लिए होती है कि जब इस में गोंद के जाने या वहां से गोंद निकलने का निज़ाम मुतहर्रिक होता है तो इसमें जो हरकत हलचल पैदा होती है इस की वजह से शदीद दर्द होता है इस दर्द शदीद का बेहतरीन इलाज है फ़ौरन पाव किलो पानी को गर्म करें जब पानी खोलने लगे तो इस को गिलास में निकाल कर इसमें दो काग़ज़ी नीमो निचोड़ कर मरीज़ को पिलाऐं जैसे गर्मा गर्म चाय पीते हैं इस पानी के पेट में जाते ही पाँच से पंद्रह मिनट के अंदर दर्द से नजात मिलेगी और इस बीमारी का काएमी इलाज है **बासीर टैब्लेट**, **मगज़ीन टैब्लेट** और **जखमीनो टैब्लेट,** इस तीन दवाओं को दो से चार महीना तक इस्तेमाल करें तो अपेंडिस की बीमारी को हमेशा के लिए ख़त्म करने में ये दवा मदद करती है।

तरीक़ा इस्तेमाल

एक एक टैब्लेट सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें इसी तरह शाम को खाना खाने से एक या दो घंटा पहले सादा पानी से इस्तेमाल करें।

निस्वानी आज़ाए तनासुल का बाहर आना या ख़ारिश जलन रहती हो उसके इलाज का तरीक़ा

निसवानी आज़ाए तनासिल बाहर आगया हो या खारिश जलन रहती हो या बदबूदार मनी होगई हो तो ये दवाएं इस्तेमाल करें

लिकोरा टैब्लेट

बासीर टैब्लेट

फानूस तेल

अगर साथ में ये माजून भी इस्तेमाल करें तो कमज़ोरी खतम होकर जिस्म में ताक़त और कुव्वत का इज़ाफ़ा होगा ये ज़्यादा बेहतर है

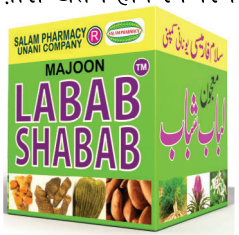

लबाब शबाब माजून

निस्वानी आज़ाए तनासुल के अंदरूनी रेशों में सूजन और ढीलापन हो जाता है रेशों में लुआब की कमी पैदा होजाती है निस्वानियत कमज़ोर या ख़त्म हो जाती है, सफ़ेद नसों में कमज़ोरी ढीलापन आ जाता है, ऐसी औरतों में जुफ़्ती की ताक़त नहीं होती क्योंकि आज़ाए मख़सूस में ख़ुशकी आ जाती है बाज़ औरतों में फ़ासिद हरारत बढ़ जाने से मनी सफ़ेद दही की तरह हो जाती है शर्मगाह में हरारत फ़ासिद होने की वजह से ताफ़्फ़ुन पैदा हो कर जरासीम पैदा हो जाती है इस लिए सड़न पैदा हो कर बदबूदार हो जाती है इसमें जलन खुजली भी बाज़ औरतों में पैदा हो जाती है, पहले एक महीना तक इलाज शुरू करें या तो मुकम्मल ठीक हो चुका होगा या कुछ बाक़ी होगा अगर बाक़ी है तो इसी से अंदाज़ा कर के बीमारी ख़त्म होने तक इलाज कर के कामिल सेहत का फ़ायदा उठाएं, बीमारी का वक़्त मुकर्रर नहीं किया जा सकता क्योंकि बीमारी की कमज़ोरी और सेहत हर शख़्स की अलग अलग कैफ़ीयत होती है, कुछ दिनों तक दवा लगाने और खाने से दवा का फ़ायदा समझ में आ जाएगा और शर्मगाह को क़ुदरती हालत पर लाने में मदद मिलती है ये दवा दो से तीन महीना में शर्मगाह का बाहर निकला हुआ हिस्सा क़ुदरती हालत पर लाने में मदद करती है।

तरीक़ा इस्तेमाल

दो टैब्लेट लिकोरा एक टैब्लेट बासीर और दस ग्राम माजून सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को **लिकोरा** दो टैब्लेट **बासीर** एक टैब्लेट माजून दस ग्राम सादा पानी से इस्तेमाल करें, **फानूस तेल** को लग भग दस इंच के साफ़ कॉटन के कपड़े में भिगा कर रात को शर्मगाह के अंदर रख लें और सुबह निकाल दें और दूसरे दिन फिर नया कपड़ा इस्तेमाल करें इस से रहेम की दीवार फ़ासिद लुआब से साफ़ हो जाएगी और अगर शर्मगाह बाहर आजाती है तो वापस अन्दर चली जाती है।

भगंदर की बीमारी के इलाज का तरीक़ा

इस दवा से भगनदर का ईलाज करें

फानूस तेल

बरगीन टैब्लेट

बासीर टैब्लेट

जखमीनों टैब्लेट

भगंदर एक ऐसा ज़ख़्म है जिसमें कच्चा पक्का मवाद बहता रहता है संडास के रास्ता के इर्द-गिर्द होने की वजह से ये ज़ख़्म जल्दी ख़ुशक नहीं होता क्योंकि गंदी जगह का ज़ख़्म है या नासूर की एक किस्म है यहां मवाद का बहना कम ज़्यादा होते रहता है इस का बहना ख़त्म नहीं होता अगर इसका इलाज किया जाये तो ख़त्म होजाता है मगर काफ़ी वक़्त लगता है, भगंदर वाले मरीज़ को कई तरह की कमज़ोरी और बहुत सी बीमारियों का ख़तरा रहता है अंतड़ियों में कमज़ोरी पैदा होने की वजह से संडास रोकने की ताक़त ख़त्म हो जाती है क्योंकि अंतड़ियों को ताक़त देने वाला लुआब फ़ासिद हो कर बहता रहता है, बहुत पुराना होजाने पर जरासीम पैदा होना यक़ीनी होता है लेकिन बाज़ लोगों को शुरू में ही जरासीम पैदा होजाती है, इस बीमारी में अंतड़ी का कैंसर होना कुछ अजीब नहीं क्योंकि हड्डीयों में कमज़ोरी पैदा होजाती है लुआब में फ़ासिद होने की सिफ़त मौजूद होती है, भगंदर का इलाज ना करना बहुत बड़ी ग़लती है इसका इलाज कर लेना बेहतर है, भगंदर के इलाज में कम अज़ कम छे[6] महीना लगता है और पहले महीने से फ़ायदा ज़ाहिर होना शुरू हो जाता है **जखमीनो टैब्लेट**, **बासीर टैब्लेट**, **बरगीन टैब्लेट** और **फानूस तेल** इसी चार दवा से इलाज शुरू करें अगर एक महीना में बदलाव ज़ाहिर हो जाता है तो आपको आगे का इलाज करने का फ़ैसला लेने में आसानी होगी।

तरीक़ा इस्तेमाल

एक एक टैब्लेट सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम-अज़-कम आधा घंटा बाद नाशता करें इसी तरह शाम को खाना खाने से एक या दो घंटा पहले एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और तेल सोते वक़्त कॉटन के कपड़े में भिगाकर संडास की जगह पर रख लें और लुंगी पहन कर सो जाएं।

अमराज़े खबीयह यानी सफ़ेद दाग़ का इलाज

सफ़ेद दाग की बीमारी में इस दवा को इस्तेमाल करें

रोगन पाइरिया | मगज़ीन टैब्लेट | बरगीन टैब्लेट | बासीर टैब्लेट | ज्वाला खास टैब्लेट

इसको साथ में चलाएं तो बेहतर है

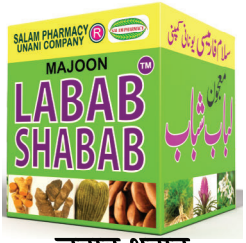

लबाब शबाब माजून

अगर सफ़ेद दाग़ पर सोई चुभाने से ख़ून निकलता है तो बहुत जल्द ये मर्ज़ ठीक हो जाता है और अगर सूई चुभाने से रतूबत निकलती है तो इस मर्ज़ को ठीक होने में काफ़ी वक़्त लगता है, रतूबत वाला सफ़ेद दाग़ अपने अंदर लुआबी ग़लाज़त के साथ जरासीम का मर्ज़ है इसी लिए ये मर्ज़ कोढ़ के मर्ज़ की एक किस्म में शुमार होता है फ़र्क़ दोनों में ये होता है की कोढ़ के मर्ज़ में लुआब के अंदर तुरशी पैदा होजाती है इस लिए लुआब फ़ासिद और ग़लीज़ हो जाता है लुआब में तेज़ाबीयत और ग़लाज़त नरम हड्डीयों को गला देती है, नरम हड्डीयों में सड़ान्द फफूंद पैदा हो कर आज़ा की शक्ल बिगड़ जाती है और सफ़ेद दाग़ के मर्ज़ में लुआब के अंदर जरासीम पैदा हो जाती है, चमड़े में चार परत होती है पहली में तेल, दूसरी में तेल पानी का मुरक्कब होता है और तीसरी चौथी में ख़ून पानी का मुरक्कब होता है और तीसरी परत में बारीक नस चमड़े के खुलियों के साथ मौजूद रहती है और चौथी परत के नीचे जो लुआबी पानी होता है उस के अंदर जरासीम होती है, ये जरासीम लुआब के अंदर से चमड़े की हिफ़ाज़त करने वाला गोंद और तेल जिससे ऊपर की परत में जो ताक़त और ठोस रखने वाला गोंद होता है उस को खाती रहती है, सफ़ेद दाग़ अगर कमर के ऊपर किसी भी हिस्सा में मौजूद है एक दो या चार पाँच इंच तक सफ़ेद है तो आप समझ लो कि जरासीम का शहर या गांव आबाद नहीं हुआ है और ये आसानी से ख़त्म हो सकता है लेकिन अगर कमर के नीचे पैर के पंजा तक थोड़ा या ज़्यादा हो गया तो अब समझ लो जरासीम का गांव या शहर आबाद हो गया है क्योंकि कमर के नीचे सबसे मोटी और बड़ी हड्डी होती है इस लिए जरासीम को बड़ी मिक़दार में ख़ुराक की ज़रूरत होती है और इस जगह सबसे ज़्यादा लुआबी हिस्सा होता है, अगर सफ़ेद दाग़ का इलाज करना है तो **बरगीन टैब्लेट, मगज़ीन टैब्लेट, जखमीनो टैब्लेट, बासीर टैब्लेट** इन्हीं चार दवाओं से हर तरह की जरासीम ख़त्म हो जाती है और चमड़े को ज़िंदा करने के लिए **रोग़न पायेरिया** का इस्तेमाल करें आराम होगा, अगर साथ में **लबाब शबाब**

माजून इस्तेमाल करते हैं तो बेहतर है, ये इलाज कमर के ऊपर का है जो कुछ दिनों में ठीक हो सकता है और अगर पूरे जिस्म या कमर के नीचे सफ़ेद दाग है तो इस के लिए शहर या गांव को ख़त्म करने में काफ़ी से ज़्यादा वक़्त लग सकता है इतमिनान होने पर इस्तेमाल करें।

तरीक़ा इस्तेमाल

एक एक टैब्लेट और माजून है तो इस में से दस ग्राम माजून सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें इसी तरह शाम को खाना खाने से एक या दो घंटा पहले एक एक टैब्लेट और अगर माजून है तो इस में से दस ग्राम माजून खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और तेल को सफ़ेद दाग़ वाली जगह पर लगाऐं।

दाँतों में दर्द या पायेरिया के इलाज का तरीक़ा

दांतों में जरासीम या पाइरिया के लिए इस्तेमाल करें

बासीर टैब्लेट **रोगन पाइरिया**

अगर साथ में इस दवा का भी इज़ाफ़ा करें तो बेहतर है

मगजीन टैब्लेट

दाँत में दर्द की असल वजह कीड़ी यानी पायेरिया है, पायेरिया की कीड़ी मसूड़ों को खाती रहती है, पायेरिया की वजह से मसूड़ों में ढीलापन पैदा हो जाता है जब मसूड़े सिकुड़ते हैं तो दाँत के निचले हिस्सा में पानी पहोंचता है इसी लिए खाने पीने की चीज़ों से दर्द, जलन और चुभने का एहसास होता रहता है, इस तक्लीफ से बचने के लिए **रोग़न पायेरिया** रोई में भीगा कर दाँत के नीचे रखने से दाँत का दर्द ख़त्म होजाता है अगर सूजन वग़ैरा है तो **बासीर टैब्लेट** सूजन ज़ख़म के लिए और कीड़ी पायेरिया के लिए **मगज़ीन टैब्लेट** इन दो टैब्लेट से दाँतों और मसूड़ों के इलावा भी पूरे जिस्म के अंदर से सूजन ज़ख़म के इलावा जरासीम वाइरस वग़ैरा भी ख़त्म हो जाते हैं।

तरीक़ा इस्तेमाल

सुबह खाली पेट एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें आधा घंटा तक कुछ ना खाएँ और इसी तरह शाम को खाना खाने से एक दो घंटा पहले एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और तेल कापूस में भिगाकर दर्द या पायेरिया की जगह पर रख लें कम अज़ कम आधा या एक घंटा के लिए।

फ़ालिज लक़वा या हाथ पैर उंगलीयों में टेढ़ापन या थरथराहट होती है उसके इलाज का तरीक़ा

फालिज, लकवा, हाथ पैर सुन होजाने या उँगलियों के टेढ़ा होने का ईलाज इस दवा से करें

लकवानी तेल

इतरीफल सरसरा

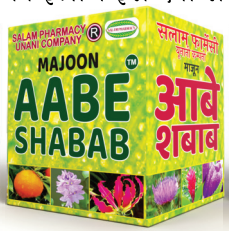

आबे शबाब माजून

कलबिया मोतदिल माजून

इस दवा को भी साथ में चलाते हो तो बेहतर है

ज्वाला खास टैब्लेट

फ़ालिज लक़वा का झटका आने का असल सबब और हक़ीक़ी फ़ालिज ये होता है की जब ख़ून के अंदर का लुआब पीला हो कर फट जाता है और फटे हुए बलग़म के मुर्दा ज़र्रात ख़ून की नालीयों में चलते रहते हैं और फेफड़ा के अंदर के पके हुए पीले बलग़म का असर दिमाग के रेशा खुलिया(सेल) के लुआब के ऊपर फ़ासिद बलग़म के असरात ज़ाहिर होते हैं तो हर वक्त पूरे जिस्म के लुआबी आज़ा और ऐसाब को ऐसाबी झिल्ली को और सुर्ख़ ख़ून की नसों को और पूरे जिस्म की हर तरह की हरकत को मुतहर्रिक रखने वाले दिमाग के रेशा खुलिया(सेल) के अंदर सुस्ती पैदा होने लगती है और ख़ून की नालीयों में मौजूद फ़ासिद बलग़म के ज़र्रात और दिमाग के अंदर के लुआब को फ़ासिद होते ही पूरे ऐसाब और ऐसाबी आज़ा में एक झटका के साथ सब कुछ ठहर जाता है लेकिन ये सब कुछ सिर्फ़ बारीक नसों पर उसका असर होता है मोटी मोटी नसों में ख़ून दौड़ते रहता है इस लिए आधा जिस्म का हिस्सा मफ़लूज होता है ये हक़ीक़ी फ़ालिज है दूसरा फ़ालिज भी बलग़म के असरात से होता है लेकिन कुछ मुख़्तलिफ़ होता है।

पूरे जिस्म के हर आज़ा में जितना हरकत होती है उसका मर्कज़ दिमाग है दिमाग के अंदर बहोत बारीक बारीक नस मौजूद है दिमाग के अंदर की नसों को देखना है तो आँखों की सफ़ेदी में देखो ये नस साफ़ ज़ाहिर होती है और पूरे जिस्म के हर आज़ा को हरकत देने के लिए आपके दिमाग के अंदर सेल मौजूद है इस सेल को हिक्मत की ज़बान में रेशा खुलिया कहते हैं दिमाग के अंदर के रेशा खुलिया का शुमार नहीं हो सकता है क्यों की दिमाग के रेशा खुलिया के अंदर पूरी कायनात का क़ुदरती निज़ाम मौजूद है जब किसी इन्सान को फ़ालिज का झटका लगता है तो इस बीमारी में सर से लेकर पैर तक हर अंग मफ़लूज होजाता है आधा मुँह आधी ज़बान एक हाथ एक पैर काम करना बंद कर देता है, ऐसा इस लिए होता है की जब दिमाग के अंदर सोंचने वाली रौ(लहर) चलती है और किसी एक बात पर जाकर रुक जाती है और बार-बार एक ही बात चलते रहती

है ये बात इस हद पर जाकर पहूंच जाती है की दिल और ऐसाब के ऊपर शदीद किस्म का ख़ौफ़ पैदा होजाता है की दिमाग के खुलिया रेशा(सेल) और दिमाग की नसों में इस तरह का तुशुंज(सिकुड़न) पैदा होती है की दिमाग की नसों में दौरान ख़ून रुक जाता है ठहर जाता है और दिल के अंदर की ऐसाबी झिल्ली में शदीद किस्म की सिकुड़न पैदा होती है और दिल की ऐसाबी झिल्ली में ख़ौफ़ का असर इतना ख़तरनाक होता है की पूरे जिस्म की ऐसाबी नसों और झिल्लियों में सिकुड़न(तुशुंज) के साथ इस तरह जकड़न पैदा होती है की सुर्ख़ ख़ून वाली नसों में दौरान ख़ून रुक जाता है ठहर जाता है गोश्त के अंदर की ऐसाबी झिल्ली इस तरह से सिकुड़ती है की गोश्त को सिकोड़ देती है और गोश्त के अंदर की नसों में ख़ून का दौड़ना रुक जाता है और गोश्त के अंदर की नस चिपक जाती है और पूरे जिस्म की सर से पैर तक की बारीक बारीक नसों में ख़ून का चलना रुक जाता है और मोटी मोटी नसों में ख़ून का चलना चारी रहता है ये सब कुछ एक झटके में होजाता है फ़ालिज का झटका तक नहीं आता है जब तक ऐसाबी नसों झिल्लियों में यानी लुआबी नस और लुआबी झिल्लियों में और सुर्ख़ ख़ून वाली नसों की दीवार कमज़ोर और ढीली नहीं होजाती है यानी क़ुव्वते मुदाफीअत यानी हर तरह की बीमारीयों का झटका और हर तरह के नुक़्सान पहूँचाने वाली चीज़ को हर तरह के झटका को और हर तरह की चोट का झटका खाने के बाद वापस क़ुदरती हालत में आजाने वाली सिफ़त को क़ुव्वते मुदाफीअत कहते हैं ये क़ुव्वते मुदाफीअत वाली सिफ़त ख़त्म होजाती है तो फ़ालिज की बीमारी का झटका आता है, इसी तरह का झटका शूगर के मरीज़ को होता है लेकिन शूगर वाले मरीज़ का सिर्फ हाथ और पैर काम करना बंद हो जाता है ये फ़ालिज की बीमारी में शुमार नहीं होता है क्यों की शूगर वाले मरीज़ के अंदर लुआब की कमी होजाती है इस लिए ऐसे मरीज़ों के हाथ पैर की नसों में कमज़ोरी पैदा होजाती है इस लिए हाथ पैर में फ़ालिज वाली कैफ़ीयत पैदा होजाती है लेकिन शूगर वालों के दिमाग और चेहरा पर कोई बुरा असर नहीं होता है इसलिए ये फ़ालिज में शुमार नहीं होता है और लक़वा उस बीमारी को कहते हैं की इस में सिर्फ मुँह होंठ ज़बान के ऊपर झटका लगता है इस बीमारी में दिमाग के अंदर बोलने वाले खुलिया रेशा(सेल) के अंदर सिकुड़न पैदा होती है और खुलिया का लुआब मुंजमिद होजाता है और खुलिया का रेशा बेहिस बेजान होजाता है और जब हाथ या पैर की उंगलीयों में टेढ़ापन पैदा होता है तो इस बीमारी में सबसे पहले ऐसाबी लुआबी सफ़ेद नस में सर्दी ख़ुशकी के साथ तुशुंज के साथ सिकुड़न पैदा होती है और इस कैफ़ीयत में ठहराव पैदा होने से सुर्ख़ ख़ून वाली नसें बेतरतीब होजाती हैं और इसके बाद सुर्ख़ ख़ून वाली नसों में कमज़ोरी पैदा हो कर हाथ की उंगलीयों में या पैर की उंगलीयों में या सिर्फ एक हाथ में या सिर्फ एक पैर में अकड़ने टेढ़ा होने की बीमारी काएम होजाती है, ये सभी तरह के बीमारीयों की बुनियाद जड़ क्या है ? लुआबी या बलग़मी बीमारीयों का बीज उस वक़्त तैयार होता है जब किसी दवा के ज़रीया या किसी दूसरी वजह से आपका बलग़म पक जाता है यानी आपके मुँह से निकलने वाला

बलग़म पीला हो गया हो और ये पीला बलग़म की बीमारी कुछ दिन तक आपके साथ रह जाये तो पूरे जिस्म के अंदर के लुआबी ख़मीर की मिट्टी में लुआब को फ़ासिद करने वाला माद्दा दाख़िल होने लगता है जिस तरह से दही की मामूली मिक़दार पूरे दूध को या तो दही बना देती है या ख़राबी पैदा कर देती है जब आपके लुआबी ख़मीर की मिट्टी में ख़राबी पैदा होती है तो बड़ी बड़ी बीमारीयों का बीज पड़ चुका है, अब सिर्फ जड़ तैयार होना बाक़ी रहता है अगर कभी आपका बलग़म पीला हो जाए तो एक दवा का नाम याद करलो ये दवा पेट में जाते ही इस्लाह पैदा कर देती है और फ़ासिद हो कर ख़राबी पैदा करने वाले लुआब को क़ुदरती हालत पर लाने में मदद करती है और दिमाग के खुलिया रेशा(सेल) को मुतहर्रिक करती है और ऐसाब की नसों को ऐसाबी झिल्लियों की ताक़त को बढ़ाती है और मुतहर्रिक करती है, इस दवा का नाम है **कलबिया मोतदिल** ये दवा फ़ालिज लक़वा हाथ पैर की उंगलीयों में टेढ़ापन या थरथराहट को ख़त्म करने में मदद करती है फ़ालिज लक़वा की बीमारी में दूसरी दवा का नाम है **माजून आबे शबाब** और तीसरी दवा **ज्वाला ख़ास टैब्लेट** और चौथी दवा है पेट के अंदर की हर तरह की ख़राबी को ख़त्म करने के लिए **इतरीफ़ल सरसरा**, ये दवा या सिर्फ **माजून कलबिया मोतदिल** अगर फ़ालिज मारने के फ़ौरन बाद खिला देते हो तो आपको हफ़्ता महीना नहीं फ़ौरन मुँह और ज़बान पर उसका असर ज़ाहिर हो जाएगा और फ़ालिज का असर कमज़ोर होता हुआ ज़ाहिर होगा, फ़ालिज मारने के बाद ज़बान मुँह टेढ़ा होजाता है इस लिए सबसे पहले **कलबिया मोतदिल** एक चम्मच फ़ुल कटोरी में रखकर इसमें थोड़ा सा पानी या दूध डालकर माजून को पतला करलो इसके बाद चम्मच से धीरे धीरे मुँह में डालते जाओ ये दवा पेट में पहूँचते ही अपना असर ज़ाहिर कर देगी और मुँह ज़बान की अकड़न ख़त्म होना शुरू होगी **कलबिया मोतदिल माजून** खिलाने से दस पंद्रह मिनट के बाद बाक़ी दवा को धीरे धीरे खिलाएँ जब तक पूरा मुह खुल कर ज़बान साफ़ ना हो जाएगी तब तक माजून को पतला करके खिलाएँ और जब तक पच्चास फ़ीसद तक मरीज़ ठीक ना हो जाए दवा को तीन टाईम खिलाएँ और अगर ठीक होने तक दवा को तीन टाइम खिलाते हो तो ये बेहतरीन फ़ैसला है और खाने वाली दवा के साथ **लकवानी तेल** से मालिश ज़रूर करते रहें इस दवा का असर फ़ौरन एक दो दिन में ज़ाहिर होजाता है और अगर फ़ालिज लक़वा का ऐसा मरीज़ है जो फ़ालिज लक़वा का झटका लगने के बाद कहीं दूसरी जगह इलाज करवा रहा था और पच्चास से सत्तर फ़ीसद तक ठीक हो गया है और तीस से चालीस फ़ीसद फ़ालिज का असर अभी बाक़ी रह गया है उसी पर अटक गया है और इस मरीज़ को दो महीना से ज़्यादा हो गया है फ़ालिज लक़वा का झटका लगे तो ऐसे मरीज़ का तीस से चालीस फ़ीसद ठीक होने में कम से कम छा महीना तक मुसलसल इलाज करना है तो दवा शुरू करें वर्ना ऐसे मरीज़ का इलाज ना करना ज़्यादा बेहतर है उसकी ख़ास बात ये है की फ़ालिज के मरीज़ के ख़ून में पीले बलग़म के फटे हुए ज़र्रात मौजूद होते हैं इस लिए जब ग्लूकोज़ की बोटल चढ़ाई जाती है तो ख़ून में पानी की मिक़दार बढ़ जाती है और

ख़ून पतला होजाता है और ख़ून की नालीयों में मौजूद फटे हुए बलग़म के ज़र्रात साफ़ हो कर कुछ मामूली हिस्सा पेशाब के रास्ते ख़ारिज होजाता है और बड़ी मिक़दार ख़ून की नालीयों के आख़िरी किनारे पर जाकर बैठ जाती है और इसी जगह ख़ुशक होजाती है और मरीज़ की पच्चास से साठ फ़ीसद ख़ून की नाली साफ़ होजाती है इस लिए मरीज़ आधा ठीक हो गया दिखाई देता है और बाक़ी तीस से चालीस फ़ीसद बीमारी का ठीक होना बहुत मुश्किल काम होता है ऐसा उस वक़्त होता है जब मरीज़ को फ़ालिज का झटका लगने के बाद दो महीना से ज़्यादा बीत गया हो और अगर मरीज़ दो महीना के पहले इलाज के लिए आया है तो अभी ना तो बलग़म ख़ुशक हुआ है और ना तो बारीक नसों में ख़ुशकी पैदा हुई रहती है इस लिए मरीज़ को सौ फ़ीसद ठीक होने का चांस रहता है क्यों की हमारी दवा **कलबिया मोतदिल** फटे हुए बलग़म के मुर्दा ज़र्रात को क़ुदरती हालत में लाती है और ऐसाब की नसों झिल्लियों को और दिमाग के खुलिया रेशा को और सुर्ख़ ख़ून की नसों को मुतहर्रिक करती है और **माजून आबे शबाब** ऐसाब की नसों झिल्लियों को और लुआबी आज़ा को और सुर्ख़ ख़ून की नसों को ताक़त देती है और ठोस करने में मदद करती है और **ज्वाला ख़ास टैब्लेट** ये टैब्लेट लुआब के अंदर की सर्दी ख़ुशकी को ख़त्म करके लुआब के अंदर से और लुआबी आज़ा के अंदर का ठंडापन ख़त्म करता है और लुआबी आज़ा के अंदर लुआब को और लुआबी जौहर को पेवस्त करने में मदद करता है और लुआब को फ़ासिद होने से बचाता है, ये सर्दी खांसी की दवा नहीं है लेकिन सर्दी खांसी की जड़ को ख़त्म करता है और बलग़म को ख़ुशक होने बलग़म को पकने से बचाता है और लुआब को उसके असल मक़ाम में पेवस्त करके लुआबी आज़ा की ताक़त को बढ़ाने में मदद करता है. ये तीन दवा खाने के लिए और मालिश के लिए **लकवानी तेल** को इस्तेमाल करने से पुराने फ़ालिज लक़वा के मरीज़ को दो महीना तक मुसलसल इस्तेमाल करने से कुछ फ़ायदा ज़ाहिर होगा तो आगे तक इलाज करने का रास्ता मिल जाएगा मुकम्मल ठीक होने का क्यों की दो महीना से ज़्यादा पुराने मरीज़ों की नसों में ख़ुशकी पैदा होजाती है इस लिए इलाज आसान नहीं होता है, अगर फ़ालिज का झटका आने के बाद फ़ौरन इस दवा से इलाज करते होतो एक हफ़्ता में या दो से चार दिन के अंदर जो फ़ायदा ज़ाहिर होगा इस से आपको मुकम्मल शिफा का रास्ता ज़ाहिर हो जाएगा और आप मुकम्मल इलाज करने के लिए फ़ैसला कर सकते हो।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून और एक टैब्लेट सुबह खाली पेट एक साथ सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम एक या दो घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को खाना खाने से एक या दो घंटा पहले तीनों दवाओं को एक साथ सादा पानी से इस्तेमाल करें, और **लकवानी तेल** को फ़ालिज, लक़वा, सुन जगह या टेढ़ी हुई उंगलीयों की जगह पर लगाऐं और तेल लगाने के बाद तेल लगी हुई जगह को एक या दो घंटा तक खुला छोड़ दें ताकि तेल जज़ब हो जाए और कपड़े में ना लगे।

थाइरॉयड बादी या ख़ुशक हो उस का इलाज

बादी थाइराइड में इस दवा को
इस्तेमाल करने से आराम होगा

बासीर टैब्लेट | **मगज़ीन टैब्लेट** | **लबाब शबाब माजून** | **कलबिया मोतदिल माजून**

ख़ुश्क थाइराइड में इस दवा का
इस्तेमाल करें आराम होगा

याकूत मुकव्वी खास माजून | **कलबिया मोतदिल माजून**

थाइरॉयड बादी उसकी अलामतें हैं गले की सूजन यानी लुआबी आज़ा का ढीला और पिलपिला होना हड्डीयों में बुढ़ापा पैदा होना खाल पर रूखा ख़ुरदरा पन पैदा होना नसों में कमज़ोरी पैदा होना, असल में थाइरॉयड ऐसी बीमारी का नाम है जिसमें हड्डीयों, नसों और लुआबी रेशों को ठोस करने वाली गोंद कम हो जाती है बाज़ लोगों के बदन से ये ठोस करने वाला माद्दा ख़त्म हो जाता है ऐसे लोग कैंसर से बहुत क़रीब होते हैं या इस मर्ज़ को बग़ैर जरासीम का कैंसर भी कह सकते हैं और ये हर बड़ी बीमारी की ज़मीन भी है क्योंकि हड्डियों और नसों में भुरभुरा पन पैदा हो जाता है, क़ुदरती ताक़त और क़ुव्वते मुदाफीअत ख़त्म हो जाती है, ठोस करने वाले माद्दा की जगह फ़ासिद हवा लेलेती है, बदन बादी हो जाता है चक्कर आना, थरथराहट, बेचैनी, घबराहट, नींद का कम होना ये सभी अलामतें फ़ौरन या देर से ज़ाहिर होना यक़ीनी हो जाता है अगर इलाज किया जाये तो कम-अज़-कम छे महीना लग सकता है बीमारी ख़त्म होने बदन ठोस होने और सेहत तबदील होने में। इस बीमारी की असल वजह नसों का कमज़ोर होना है इस लिए **माजून कलबिया मोतदिल** और नसों की गोंद बढ़ाने के लिए **माजून लबाब शबाब** सूजन को ख़त्म करने के लिए **बासीर टैब्लेट** और लुआबी रेशा की झिल्लियों और लुआबी आज़ा को ठोस करने और हर तरह की जरासीम और वाइरस को मारने के लिए और लुआबी आज़ा को ठोस करने के लिए और लुआबी गोंद को गाढ़ा करने के लिए **मगज़ीन टैब्लेट** इन्हीं दवाओं को शुरू करें और जब एक महीना में आपकी तबीयत में बेहतरी महसूस हो और जिस्म पर चमक आजाए तो आपको आगे का रास्ता समझ आजाएगा फिर दो से तीन महीना इस्तेमाल करके रिपोर्ट निकालें और इतमिनान करें। ख़ुशक थाइरॉयड कम होता है और इस की पहचान है कि जिस्म बहुत ज़्यादा कमज़ोर हो जाता है सिर्फ हड्डी और चमड़ा दिखाई देता है जिस्म के हर आज़ा में ख़ुशकी बढ़ जाती है, सफ़रा का निज़ाम बिगड़ जाता है जिस्म में हरारत बढ़ जाती है ऐसे मरीज़ को सिर्फ **माजून कलबिया मोतदिल** और **माजून लबाब शबाब** बस ये दो माजून इस्तेमाल कराएँ उसी को काफ़ी दिन तक चलाएँ अगर साथ में **माजून सलाम** का इज़ाफ़ा कर लें तो बेहतर होगा।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट सुबह ख़ाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को खाना खाने से एक या दो घंटा पहले दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट ख़ाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें। हर तरह के मादा जानवर और बड़े का गोश्त और हर तरह की खट्टी चीज़ों का परहेज़ करें।

कान का दर्द या कान का बहना उसके इलाज का तरीक़ा

कान का दर्द हो या कान बहता हो या कान में दाना वग़ैरा हो गया हो उस का इलाज करें क्योंकि कान नरम हड्डी है जिस्म के एलावा ख़ास तौर से गर्दन के ऊपर का हिस्सा लुआबी जुज़ से बना हुआ होता है, इस हिस्सा की तक्लीफ को सिर्फ कान का मर्ज़ ना समझें ये एक अलामत है की लुआबी आज़ा में और नरम हड्डीयों में और नसों में किसी फ़ासिद माद्दा के शामिल होने से उन हिस्सों को नुक़्सान का डर लगा रहता है, **बासीर टैब्लेट** और फानूस तेल से आराम हो जाएगा अगर **मगज़ीन टैब्लेट** का इज़ाफ़ा कर लें तो ज़्यादा बेहतर होगा।

फानूस तेल को कान में डालें और सुबह और शाम बासीर टैब्लेट इस्तेमाल करें

बासीर टैब्लेट फानूस तेल

मगज़ीन टैब्लेट का इज़ाफ़ा करें तो ज़्यादा बेहतर है

मगज़ीन टैब्लेट

तरीक़ा इस्तेमाल

रोग़न फानूस को कान में डालें और सुबह खाली पेट एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम-अज़-कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को खाना खाने से एक या दो घंटा पहले एक एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और तेल लेट के कान में डाल लें और कम अज़ कम आधा घंटा वैसे ही रहने दें।

बच्चा पैदा होने के बाद सूजन बुख़ार और दर्द को ख़त्म करने का इलाज

बच्चा पैदा होने के बाद पेट और कमर दर्द, जाँघ में दर्द और सूजन पैदा होजाती है तो **रोग़न फानूस** की एक दो बोटल से मालिश कर दें और खाने के लिए **बासीर टैब्लेट** इस्तेमाल करें इस से ख़ासकर अंदरूनी और बैरूनी सूजन और ज़ख़्म इन्फ़ैक्शन ख़त्म होजाएंगे।

बच्चा पैदा होने के बाद इसे लगाने और खाने से सूजन ज़ख़्म खतम होजाता है

बासीर टैब्लेट फानूस तेल

तरीक़ा इस्तेमाल

एक एक टैब्लेट **बासीर** सुबह शाम खाली पेट सादा पानी से खाएँ और **रोग़न फानूस** पेट से लेकर पैर तक मालिश करें कम अज़ कम एक हफ़्ता तक।

टेटनस क्यों और कैसे होती है अर्कुन्निसा का इस बीमारी से रिश्ता क्या है उसकी मुख़्तसर मालूमात और इलाज का तरीक़ा

ये दवा टेटनस की बीमारी को खतम करने में मदद करती है और अगर साइटिका(अर्कुन्निसा) में इस्तेमाल करते हैं तो बड़े तेज़ी से फायेदा ज़ाहिर होजाता है

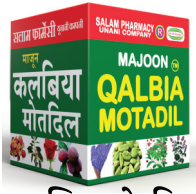

कलबिया मोतदिल माजून

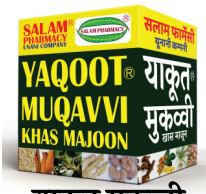

याकूत मुकव्वी ख़ास माजून

आबे शबाब माजून

पेट का निज़ाम ठीक रखने केलिए साथ में इस दवा का इज़ाफ़ा करें

इतरिफल सरसरा

टेटनस की बीमारी पूरे जिस्म के लुआबी आज़ा के ऊपर अपना असर डालती है जब पैर के नीचले हिस्सा में लोहा का कोई ज़ंग आलूद टुकड़ा घुस जाता है तो टेटनस होने का यक़ीन रहता है और अगर बारिश या ठंडी का मौसम है तो टेटनस होने का ख़तरा बढ़ जाता है की टेटनस का असर होगा चाहे बहुत मामूली नहीं के बराबर हो जाए लेकिन होना ज़रूर है और इस बीमारी की दूसरी जगह हाथ का पंजा उस जगह लोहे का ज़ंग आलूद टुकड़ा धँस जाने से तो टेटनस हो सकता है लेकिन टेटनस का ख़तरा इतना मामूली होता है की ना होने के बराबर रहता है अगर टेटनस का असर दस से बीस फ़ीसद का असर होता है तो ये अर्कुन्निसा यानी साटीका की शक्ल में ज़ाहिर होता है, टेटनस की बीमारी ऐसाबी नसों झिल्लियों पर सूजन पैदा करती है और साटीका(अर्कुन्निसा) का भी ऐसाबी नसों और पुट्ठा पर असर होता है इस दोनों बीमारी में सफ़ेद लुआबी नस के ऊपर सूजन पैदा होजाती है और नस में खिंचाव पैदा होने से दर्द की तक्लीफ शुरू होजाती है, सफ़ेद नस बग़ैर ख़ून वाली नस को कहते हैं इस की नसों में लुआब का जौहर होता है सुर्ख़ ख़ून नहीं होता है यही सफ़ेद नस के अंदर क़ुव्वते मुदाफीअत होती है और यही सफ़ेद नस पूरे जिस्म की सारी हड्डीयों के जोड़ों को पकड़ कर रखती है और सफ़ेद लुआबी झिल्ली और सफ़ेद नस ये दोनों आज़ा पूरे जिस्म को बांध कर पकड़ कर रखते हैं इसी आज़ा की ताक़त से नौजवानी का असर होता है इसी आज़ा के ढीला होने से बुढ़ापा की शुरूआत होती है और इसी के अंदर ख़मीर पैदा हो कर फूल जाने से टेटनस यानी सर से पैर तक असर पहूंचने से टेटनस होता है ये सौ फ़ीसद टेटनस है और अगर दस से बीस फ़ीसद असर हुआ तो ये कमर पुठा से पैर तक असर होता है तो ये अर्कुन्निसा या साटीका या लंगड़ी का दर्द बोलते हैं दोनों बीमारी की शक्ल और जगह एक है और दोनों बीमारी में खिंचाव की शक्ल और तरीक़ा एक ही जैसा एक ही

ये तेल टेटनस की बीमारी में इस्तेमाल करें और अगर साटिका में इस्तेमाल करना है तो सिर्फ दर्द वाली जगह पर इस्तेमाल करें जिस जगह दर्द और खींचाव होरहा है उस जगह मालिश करें

लकवानी तेल

मुर्गाबी तेल

आज़ा के ऊपर होता है इस लिए हमने टेटनस को बड़ा भाई और साटीका अर्क़ुन्निसा को बहुत छोटी बहन मान कर एक ही दवा से इलाज करके ठीक किया है इस बीमारी को हमने इलाज करके ठीक करने के बाद अपना तजुर्बा ज़ाहिर कर दिया हूँ इसकी और ज़्यादा मालूमात आने वाली किताब में इनशाअल्लाह ज़रूर दूंगा इस को मुख़्तसर करके बयान करता हूँ और तीसरी जगह है पूरे जिस्म के लुआबी आज़ा का कोई भी हिस्सा हो अगर इस लुआबी आज़ा को ज़ंग आलूद औज़ार से काटा जाये या ज़ंग आलूद औज़ार से कट जाये या धँस जाये तो टेटनस होने का ख़तरा बढ़ जाता है अगर ज़ंग आलूद औज़ार या टुकड़ा से ज़ख़म हो जाए और ज़ख़म इतना गहिरा हो जाएगी खाल से आगे बढ़ जाये और लुआबी गोश्त के अंदर गहरा ज़ख़म पैदा हो जाए और ऊपर से खाल का ज़ख़म ख़ुशक हो जाए और अंदर के लुआबी गोश्त का ज़ख़म बाक़ी हो और ज़ख़म अपने अंदर मवाद पैदा करले और ज़ख़म वाली जगह का मुंहना गोल हो जाए सूजन पैदा हो जाए या मामूली गाँठ की शक्ल एख्तियार करले या ज़ख़म वाली जगह मवाद पैदा हो जाए या लस्सीदार पंछा निकलने लगे या ज़ख़म को भरने में आम हालत के ज़ख़म से ज़्यादा वक़्त लगे सूखने में तो ऐसे ज़ख़म को मामूली ज़ख़म समझ लेना बहुत बड़ी ग़लती होती है अगर इस तरह का ज़ख़म हो गया और तेज़ी से ख़ुशक हो कर ज़ख़म भर गया है और किसी तरह का कोई निशान बाक़ी नहीं रहता है तो ये बात यक़ीनी है की ऐसे लोगों को ज़ंग आलूद लोहे के किसी टुकड़ा से कोई ख़तरा नहीं और जिस शख़्स को लोहे के ज़ंग आलूद टुकड़ा से ज़ख़म होजाने के बाद ज़ख़म को ख़ुशक होने में काफ़ी वक़्त लगे तो ऐसे शख़्स को कभी भी लोहे के ज़ंग आलूद कील या टुकड़ा से ज़ख़म हो जाए तो बहुत ज़्यादा फ़िक्र के साथ जल्दी से ज़ख़म को ख़ुशक करने की कोशिश और एहतियात करना चाहीए और एक ख़ास और बहुत मुख़्तसर बात में ये बता दूं की इन्सानी जिस्म के इस हिस्सा में जहां गोश्त के रेशा में ख़ून रहता है ऐसी जगह के हर हिस्सा में अगर लोहे का ज़ंग आलूद टुकड़ा या कील या धारदार औज़ार से ज़ख़म होता है तो किसी तरह का कोई ख़तरा नहीं होता है चाहे एक बार या सौ बार ज़ख़म हो जाए ऐसा ज़ख़म बड़े आसानी से भर कर ख़ुशक होजाता है लेकिन जिस आज़ा के गोश्त के रेशा और खुलिया में लुआब और लुआबी ज़ररात से बनी खाल मौजूद है तो उस जगह लोहे के ज़ंग आलूद टुकड़ा या कील के अंदर मौजूद ज़ंग आलूद ख़बीस ज़र्रात का लुआबी ज़ररात और लुआब के आपस में मिल जाने से कीमियावी अमल पैदा हो कर या तो ज़हर की शक्ल एख्तियार कर लेता है या दोनों जुज़ के आपस में मिलने पर नई किस्म की जरासीम वाइरस या फफूंद पैदा होजाती है और उसको ख़त्म करने के लिए ऐसाब की क़ुव्वते मुदाफीअत के अंदर इस लोहे के ज़ंग ख़बीस ज़र्रात से पैदा होने वाली जरासीम या ज़हर को ख़त्म करने की ताक़त नहीं होती है और इस कीमियावी अमल के ज़हर या वाइरस से ऐसाब मरीज़ होजाता है और ऐसाब की क़ुव्वते मुदाफीअत कमज़ोर हो कर ऐसाबी बीमारी की कोई शक्ल एख्तियार कर लेता है हमने अपने इलाज के ज़रीया इस मर्ज़ के ऊपर जो तजुर्बात और याददाश्त को ज़ाहिर कर रहा हूँ हो सकता है इन्सानी ख़िदमत के लिए किसी साईंसी इदारे की हिस्स बेदार हो जाए और इस नुक़्ता पर काम शुरू करके इन्सानों की भलाई का ज़रीया बन जाये साईंस पर काम करने वालों के लिए

ये एक रास्ता ज़ाहिर कर दिया हूँ की जो अलामत ठंडे ज़हर की होती है वही अलामत टेटनस की होती है, ठंडे सर्द ज़हर में मुँह का जबड़ा अकड़ जाता है और इस तरह से बैठ जाता है की मुँह खुलता नहीं है बड़े मुश्किल से एक चम्मच जाने की जगह बचती है और हाथ पैर ख़ुशक लकड़ी की तरह से अकड़ जाता है हाथ पैर में सिर्फ इतनी लचक रह जाती है की दस से पंद्रह फ़ीसद हाथ पैर काम कर रहा हो और मुड़रहा हो सिर्फ इतना काम कर रहा होता है और पीठ पीछे की तरफ़ झुक जाती है और पुठा में और उसके अगले हिस्सा शर्मगाह के बगल में काछ वाली जगह पर खिंचाव शदीद किस्म का होता है इस जगह के अगले पिछले हिस्सा में अकड़न खिंचाव इस तरह का होता है की अगर पैर को पूरा फैलाना हो या चलना हो तो दर्द शदीद किस्म का होता है ये जो कैफ़ीयत को हमने बयान किया है यही कैफ़ीयत टेटनस में होती है दोनों तरह की अलामत में किसी तरह का कोई फ़र्क़ नहीं होता है अब इन सारी अलामत को हिक्मत के सामने रखकर सोचने से ये बात साफ़ समझ में आजाती है की जब पैर के नीचले हिस्सा में ज़ंग आलूद ख़राब किस्म का लोहे का टुकड़ा से ज़ख़्म होजाता है इसके बाद इस जगह पर ज़ख़्म के अंदर गंदा पानी मिट्टी और लोहे के असर से ज़ख़्म के अंदर कीमियावी अमल पैदा हो कर इस ज़ख़्म के रास्ता से लुआबी आज़ा और सफ़ेद लुआबी नस यानी ऐसाबी नस के अंदर ख़मीर पैदा होजाता है और ऐसाब के अंदर सूजन पैदा होने का अमल शुरू होजाता है यानी ऐसाबी और लुआबी आज़ा के ज़ररात का ठोसपन ख़त्म होजाता है और लुआबी आज़ा के ज़ररात ढीले होजाते हैं यानी लुआबी आज़ा और ऐसाब का रेशा मोटा होजाता है और खुलिया तंग होजाता है इस लिए ऐसाबी नसों और झिल्लियों की लचक ख़त्म होजाती है और लंबाई में अकड़ जाती है और खिंचाव पैदा होजाता है, इस बीमारी का बेहतरीन इलाज ये है की ये बीमारी के लिए **रोग़न मुर्ग़ाबी** और **लकवानी तेल** दोनों को मिलाकर या सिर्फ **मुर्ग़ाबी तेल** को गर्दन पीठ पुठा और पूरे पैर में और शर्मगाह या आज़ाए तनासुल के बगल में जिस जगह कौड़ी की तरह गिलटी रहती है ये सब पूरी जगह ख़ूब अच्छी तरह से सुबह शाम मालिश करें और खाने वाली दवा को इस्तेमाल करें ये अंदर से ऐसाबी नसों झिल्लियों में ताक़त और लचक पैदा करती है सूजन ख़त्म करेगी **माजून कलबिया मोतदिल, माजून ज्वाला खास, माजून याक़ूत मुक़व्वी ख़ास** और पेट का निज़ाम ठीक रखने के लिए **इतरीफ़ल सरसरा** ये सभी दवा को इस्तेमाल करने से मुकम्मल आराम होजाता है।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट सुबह ख़ाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें और इसी तरह शाम को खाना खाने से एक या दो घंटा पहले दस दस ग्राम माजून एक एक टैब्लेट ख़ाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें, **रोग़न मुर्ग़ाबी** और **लकवानी तेल** दोनों को मिलाकर या सिर्फ **मुर्ग़ाबी तेल** को गर्दन पीठ पुट्ठा और पूरे पैर में और शर्मगाह या आज़ाए तनासुल के बगल में जिस जगह कौड़ी की तरह गिलटी रहती है ये सब पूरी जगह ख़ूब अच्छी तरह से सुबह शाम मालिश करें और खाने वाली दवा को इस्तेमाल करें ये अंदर से ऐसाबी नसों झिल्लियों में ताक़त और लचक पैदा करती है सूजन ख़त्म करेगी।

साटीका अर्कुन्निसा की मुख़्तसर मालूमात,टेटनस से उसका क्या रिश्ता है और इस बीमारी के इलाज का तरीक़ा

साटिका(अर्कुन्निसा) की बीमारी का ईलाज इस दवा से करें

याकूत मुकव्वी खास माजून

कलबिया मोतदिल माजून

ऐसाबी आज़ा की ताक़त और तहरीक को बढ़ाने के लिए इस दवा का इज़ाफ़ा ज़्यादा बेहतर होगा

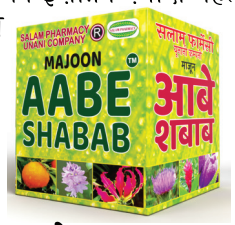

आबे शबाब माजून

मालिश केलिए ये तेल इस्तेमाल करें

लकवानी तेल

अर्कुन्निसा की बीमारी के ऊपर हमारी तहक़ीक़ और तजुर्बा के हक़ीक़त की सच्चाई ये है की टेटनस और अर्कुन्निसा दोनों एक बीमारी की दो शक्ल है एक बहुत छोटा बच्चा की शक्ल में है उसका नाम अर्कुन्निसा या साटीका है दूसरी बीमारी का नाम टेटनस है ये ताक़तवर नौजवान की तरह से है ये दोनों बीमारी का वजूद ऐसाब और लुआबी आज़ा और ऐसाबी झिल्लियों से है, लुआब के जौहर से ऐसाब को ताक़त मिलती है और ऐसाब के अंदर क़ुव्वते मुदाफीअत की ताक़त का ख़ज़ाना मौजूद है और इसी ऐसाब की ताक़त और कमज़ोरी में बचपन नौजवानी और बुढ़ापा का राज़ छुपा होता है, पैर के निचले हिस्सा घुटना से नीचे के हिस्सा में गोश्त के ऊपर ऐसाबी झिल्ली होती है ये झिल्ली गोश्त को पकड़ कर बांध कर रखती है और पैर को उठते बैठते और हर तरह की हरकत में मदद करती है गोश्त हड्डी सबको एक साथ हरकत देने में मदद करती है उठते बैठते चलते फिरते और हर तरह की हरकत के लिए दिमाग से जुड़ी हुई सफ़ेद लुआबी नस और सफ़ेद ठोस लुआबी झिल्ली ये सब दिमाग के इशारे और दिमाग की सोंच को महसूस करके हरकत में आती है हाथ और पैर की सारी ऐसाबी नस और झिल्ली दिमाग के खुलिया रेशा से जुड़ी है इस लिए उसके किसी भी इशारे और सोंच की हरकत को महसूस करके मुतहर्रिक रहते हैं ऐसाबी नस झिल्ली ये लुआबी आज़ा हैं लेकिन जिस्म के दूसरे लुआबी गोश्त के रेशा खुलिया से मुख़्तलिफ़ है पूरे जिस्म के लुआबी गोश्त के रेशा खुलिया में सिर्फ लुआब का गोंद इस्तेमाल होता है लेकिन जगह बदलती है तो लुआब का जौहर बदल जाता है और ऐसाब की नस और झिल्ली में फ़ौलाद का जौहर होता है इसी लिए ऐसाब बहुत ज़्यादा सख़्त और ठोस होता है अर्कुन्निसा(साटीका) में सिर्फ एक दो लुआबी नस पर असर होता है और ये ज़हरीला माद्दा बहुत मामूली हद तक दाख़िल हो कर इसका असर ख़त्म होजाता है और सिर्फ एक दो लुआबी नस में सूजन पैदा कर देता है और बाक़ी पूरे जिस्म की ऐसाबी नसों पर किसी तरह की ख़राबी या सूजन वरम नहीं होता है अगर पूरे ऐसाब पर सूजन पैदा हो जाए तो ये टेटनस की शक्ल एख्तियार कर लेगा साटीका में एक या दो ऐसाबी नस में सूजन पैदा होती है और नस

की गोलाई बढ़ जाती है लंबाई में खिंचाव पैदा होजाता है यानी जिस नस में सिर्फ लुआब रहता है सफ़ेद नस का रेशा मोटा होजाता है खुलिया मैं तंगी पैदा होजाती है इस लिए लचक ख़त्म होजाती है और लुआब की कमी और सूजन की वजह से नस अकड़ कर जकड़न पैदा करती है अपने क़रीब का क़ुदरती निज़ाम ख़राब कर देती है और उसकी अकड़न खिंचाव जल्दी ख़त्म नहीं होता है लुआब के किसी दूसरे आज़ा का सूजन ख़त्म होजाता है लेकिन ये सूजन ऐसाबी नस के ऊपर पैदा होता है इस लिए आसानी से ख़त्म नहीं होता है इस लिए इस बीमारी में बहुत तेज़ी से लुआब पैदा करने के लिए **याक़ूत मुक़व्वी ख़ास माजून** इस्तेमाल करें और ऐसाबी आज़ा और आज़ाए रईसा दिल दिमाग गुर्दा मसाना जिगर मेदा की ताक़त बढ़ाने के लिए **शबाबे कलबिया माजून** इस्तेमाल करें और दिमाग के खुलिया रेशा और ऐसाबी नसों झिल्लियों को और नसों को मुतहर्रिक करने के लिए **कलबिया मोतदिल माजून** इस्तेमाल करें और मालिश के लिए **लकवानी तेल** इस्तेमाल करें इस चार दवा को दो से चार महीना तक इस्तेमाल करें मुकम्मल आराम हो जाएगा, **भरोसा कंपनी का होता है दवाई का नहीं ज़ायक़ा हलवाई बनाता है मिठाई का नहीं चाय चार सामान से बनती है होटल बदलने से ज़ायक़ा बदल जाता है,** और ऐसाब के अंदर लोहा का जौहर बाहर से आया हुआ लोहा को ख़राब करने वाला ज़हर ऐसाब के अंदर ख़मीर पैदा कर देता है और ऐसाबी नस थोड़ी दूर तक फूल जाती है इस नस या झिल्ली में सूजन पैदा होने से लंबाई में खिंचाव पैदा कर देती है इस लिए दूसरे आज़ा और जोड़ों का निज़ाम बिगड़ जाता है अगर इस बीमारी को सिर्फ लगाने वाली दवा से इलाज करते हो तो ये दर्द अपनी जगह बदलते रहता है और अगर खाने वाली दवा साथ में इस्तेमाल करते होतो ये बीमारी बड़ी आसानी से ख़त्म होजाती है और अगर इस बीमारी को जुगाड़ से चलाते हो तो ये मर्ज़ दूसरी बीमारीयों को वजूद में लाने का ज़रीया बन जाता है इस बीमारी को सिर्फ ऐसाब की ताक़त बढ़ाने से मर्ज़ ख़त्म नहीं होता है इस बीमारी में ज़हरीला माद्दा ख़त्म करने की दवा का होना ज़रूरी है इस बीमारी को ख़त्म करने का इलाज, इस बीमारी में जो इलाज का तरीक़ा टेटनस का है उसी तरीक़ा से वही दवा को इस्तेमाल करें तो बड़े आसानी से ठीक हो जाएगा या फिर उस का तरीक़ा इलाज इस्तेमाल करें, इस दवा को कम अज़ कम दो महीना तक ज़रूर इस्तेमाल करें अगर आपको मुकम्मल फ़ायदा हो गया तो भी एक महीना इज़ाफ़ा कर के इस्तेमाल करें ताकि ऐसाब में किसी तरह की कमज़ोरी ना रह जाये और अगर दो महीना के अंदर आपको पच्चास फ़ीसद का फ़ायदा हुआ है तो आपको मुकम्मल ठीक होने का रास्ता मिल गया है आप अपने लिए बेहतरीन फ़ैसला कर सकते हो।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम माजून और अगर टैब्लेट है तो एक एक टैब्लेट सुबह खाली पेट सादे पानी से इस्तेमाल करें और इसी तरह दस दस ग्राम माजून और एक एक टैब्लेट शाम को खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें, और **लकवानी तेल** से दर्द वाली जगह और उसके इर्द-गिर्द मालिश करके कम अज़ कम आधा या एक घंटा तक खुला छोड़ दें ताकि तेल जज़ब हो जाए।

ऐसाबी बीमारी गर्दन पीठ कमर पुट्ठा हाथ पैर का ढीला होजाना इस बीमारी की मुख़्तसर मालूमात और इलाज का तरीक़ा

ऐसाबी बीमारी का ईलाज इस दवा से करें

पैगामे शिफा टैब्लेट

शबाबे कलबिया माजून

याकूत मुकव्वी खास माजून

छोटे बच्चे को मालिश के लिए ये तेल इस्तेमाल करें

लकवानी तेल

ये दवा सिर्फ जड़ी बूटी से बनाई गई है इस में किसी तरह का कोई नुकसान नहीं है छोटे बच्चे को सिर्फ ये माजून खिलाते रहने से बच्चे के जिस्म के हर ऐज़ा को हर तरह की ताक़त का इज़ाफ़ा होते रहेगा

सलाम माजून

गर्दन पीठ कमर पुट्ठा हाथ पैर के अंदर बहुत ज़्यादा ढीलापन पैदा हो गया हो या मामूली ढीलापन पैदा हो गया हो ये ऐसाबी बीमारी है, ये बीमारी अक्सर छोटे बच्चों में पैदा होती है या पच्चास साल के ऊपर के लोगों में ये बीमारी पैदा होजाती है, इस बीमारी की अलामत ये है की गर्दन हिलने लगती है या उसको इस तरह से देखो की गर्दन में इतनी ताक़त नहीं होती की सर मुंडी का बोझ सँभाल सके और सर इधर उधर लुढक जाता है, और बाज़ लोगों में ये कमज़ोरी इतना ज़्यादा बढ़ जाती है की गर्दन पीठ कमर और हाथ पैर में इतनी ताक़त बाक़ी नहीं रहती है की ये सभी आज़ा को अपनी ऐसाबी ताक़त के सहारे से हरकत करे और अपनी जिस्मानी और ऐसाबी क़ुव्वत से चलने फिरने उठने बैठने का क़ुदरती निज़ाम मुतहर्रिक करता हो, ये बीमारी अलग अलग मरीज़ों पर अपना असर अलग तरह का ज़ाहिर करती है किसी का सिर्फ गर्दन कमज़ोर है किसी का गर्दन पीठ तक ये बीमारी होती है किसी को सिर्फ पैर में होती है किसी को सिर्फ हाथ में होती है यानी अलामत और शक्ल मुख़्तलिफ़ है लेकिन बीमारी एक है, इस बीमारी के होने का अस्बाब और उसके होने का तरीक़ा ये है, इस बीमारी की बहुत मुख़्तसर तशरीह ये है दिमाग के खुलिया रेशा के साथ लुआबी झिल्ली और लुआबी नस दिमाग को पकड़ कर दिमाग को बांध कर रखती है और फिर यहां से ये ऐसाबी नस और झिल्ली निकलती है और ये लुआबी नस और झिल्ली गर्दन में होते हुए पीठ कमर पुट्ठा से होते हुए जाँघ यानी मांडी में होते हुए घुटना के नीचे ऊपर से हुए पैर के पंजों में होती है इसी तरह से जिस्म के दूसरे आज़ा के अंदर मौजूद रहती है, ये सफ़ेद झिल्ली और सफ़ेद लुआबी नस पूरे जिस्म की सारी हड्डीयों को और सफ़ेद झिल्ली सुर्ख़ गोश्त और जिस्म के दूसरे आज़ा को पकड़ कर बांध कर रखती है और यही सफ़ेद लुआबी झिल्ली और सफ़ेद लुआबी नस के ज़रीया से दिमाग की हर तरह की सोंच और हर तरह की हरकत को ये ऐसाबी आज़ा जिस्म के दूसरे आज़ा तक पहुँचाते हैं और इसी झिल्ली और सफ़ेद नस के ज़रीया से हाथ पैर और दूसरे आज़ा

हरकत करते हैं और ये सफ़ेद लुआबी नस और सफ़ेद लुआबी झिल्ली जो दिमाग को पकड़ कर बांध कर और चिपक कर रहती है यही ऐसाब है इसी को ऐसाबी आज़ा बोलते हैं इस ऐसाबी आज़ा की शक्ल में जिस्म के अंदर लुआबी झिल्ली जिस्म के दूसरे आज़ा में मौजूद है वो झिल्ली ऐसाब नहीं होती है, मुख़्तसर बात ये है की ऐसाबी नस और झिल्ली में लुआब के अंदर का ठोस करने वाला गोंद और लुआब का जौहर मौजूद होता है और दूसरा जुज़ ख़ून के अंदर का फ़ौलाद का जौहर मौजूद होता है जब लुआब पतला होजाता है तो लुआब के अंदर से ठोस करने वाला गोंद ख़त्म होजाता है यानी ऐसाब को ठोस रखने वाला जौहर ख़त्म होजाता है और जिस्म के अंदर फ़ौलाद की मिक़दार कम होजाती है तो ऐसाब के अंदर सख़्ती पैदा करने ठोस रहने वाली सिफ़त ख़त्म होजाती है और इन्सान बुढ़ापे की तरफ़ बहुत तेज़ी से बढ़ने लगता है और यही हालत छोटे बड़े नौजवान सब के अंदर पैदा होने वाली ऐसाबी कमज़ोरी और ऐसाबी बीमारी की शक्ल में ज़ाहिर होती है, इस बीमारी में बेहतरीन तरीक़ा इलाज ये है, **याक़ूत मुक़व्वी ख़ास माजून** और **शबाबे कलबिया माजून** और साथ में **पैगामे शिफा टैब्लेट** ये तीन दवा को एक साथ इस्तेमाल करने से पूरे जिस्म के अंदर ऐसाबी क़ुव्वत मुतहर्रिक होजाती है और ऐसाबी आज़ा के अंदर ठोस करने वाला जुज़ ऐसाबी जौहर को ठोस मज़बूत बनाने में मदद करता है, यही दवा छोटे बड़े बूढ़े सब पर अपनी ताक़त को ज़ाहिर करती है और एक ख़ास बात ये है की अगर बहोत छोटे बच्चा के अंदर ये बीमारी पैदा हो जाये तो इसके लिए बेहतरीन इलाज ये है की गधी का दूध इस तरह से सुबह शाम पिलाऐं की गधी का दूध पिलाने का ये तरीक़ा इस्तेमाल करें की बच्चा को दूध पीलाने से एक घंटा पहले कुछ भी ना खिलाएँ ना पिलाऐं और सबसे अहम बात ये है की गधी का दूध ठंढा होने से पहले बचा के पेट में चला जाये इसका सबसे बेहतरीन तरीक़ा ये है की दूध निकालने के वक़्त गधी के पास बच्चा मौजूद रहे और जब दूध निकल जाये फ़ौरन चम्मच या दूध दानी के ज़रीया से बच्चा को फ़ौरन पिला दिया जाये ताकि दूध ठंढा ना होने पाए, अगर इस तरीक़ा से बच्चा को दूध पिलाया जाये तो बहुत कम वक़्त में फ़ायदा आपकी नज़रों के सामने होगा और अगर इस दवा को इस्तेमाल करना चाहें तो ये दवा सिर्फ़ जड़ी बूटी से बनाई गई है इस में किसी तरह का कोई नुक़्सान नहीं है छोटे बच्चा को सिर्फ **माजून सलाम** खिलाते रहने से बचा के जिस्म की हर आज़ा को हर तरह की ताक़त का इज़ाफ़ा होते रहेगा और अगर दूध पीने वाला बच्चा है और उसकी माँ को **माजून सलाम** के साथ तीनों दवा को इस्तेमाल करते हो तो ज़्यादा बेहतर है और अगर दो साल से ज़्यादा उम्र का बच्चा है तो इस बच्चा को सिर्फ **माजून सलाम** और **शबाबे कलबिया माजून** सिर्फ दो माजून से हर तरह की ताक़त में इज़ाफ़ा होगा और ऐसाबी बीमारी ख़त्म होजाती है इनशाअल्लाह ताला और छोटे बच्चा को मालिश के लिए **लकवानी तेल** इस्तेमाल करें सिर्फ तेल से हडडी और नस की ताक़त में इज़ाफ़ा होगा।

दवा को इस्तेमाल करने का तरीक़ा है।

बड़ी उम्र के लोगों को सुबह खाली पेट दस दस ग्राम माजून और एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और शाम को खाना खाने से एक दो घंटा पहले या खाना खाने से एक दो घंटा बाद दस दस ग्राम माजून और एक टैब्लेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और छोटे बच्चों को उम्र के हिसाब से पाँच साल से कम उमर के लिए एक चौथाई टैब्लेट और तीन तीन ग्राम माजून सुबह शाम दो टाइम इस्तेमाल करें।

हरनीया की बीमारी के इलाज का तरीक़ा

हर्निया की बीमारी का ईलाज इस दवा से करें

जखमीनों टैब्लेट मगज़ीन टैब्लेट बासीर टैब्लेट

पेट के चारों तरफ़ और खास तौर से निचले हिस्सा की सख़्त झिल्ली में वरम पैदा हो जाता है और झिल्ली नरम और ढीली होजाती है, इस झिल्ली को ढीला होने की बहुत सी वजूहात होती हैं, बाज़ लोगों के अंतड़ी के रेशों से लग कर कीड़ी अपना खोल(घर) बना लेती है और वहां से पेट के पूरे हिस्सा में फैल कर अपनी गेज़ा हासिल करती है, रात में अपनी ख़ुराक लेकर वापिस अपने ख़ौल में दाख़िल हो जाते हैं, बाज़ बच्चों को देखा गया है बग़ैर किसी दवा के मुँह या संडास के रास्ता से बाहर निकल आते हैं, बाज़ काफ़ी बड़े हो जाते हैं ऐसी कीडियों पर दवा का जल्दी असर नहीं होता है ऐसी ही बारीक कीड़ी अंतड़ी के रेशों में दाख़िल हो कर इस झिल्ली पर आजाते हैं जिस पर छोटी बड़ी आंत का बोझ रहता है, ये कीड़े इस सख़्त झिल्ली का लुआब खा कर इस जगह को कमज़ोर और इतना ढीला कर देते हैं की बहुत ज़्यादा ताक़त से कभी ज़्यादा वज़न उठाने पर इस झिल्ली पर इतना दबाव पड़ जाता है की अंतड़ी की इस झिल्ली में दाख़िल हो जाती है, इस के बाद दुबारा इस झिल्ली का ढीलापन ख़त्म नहीं होता है, जवानी में वज़न उठाने पर पोते की नाली की तरफ़ कुछ फूला हुआ भारीपन महसूस होता है लेकिन बुढ़ापे में ये तक्लीफ इतनी बढ़ जाती है की थोड़ा भी दबाव बढ़ा तो पोता की नाली की तरफ़ अंतड़ी दाख़िल हो जाती है इसी तरह पेट के दूसरे हिस्सा में इस तरह फूला हुआ रहता है जैसे फूले हुए हिस्सा में हवा पानी एक साथ मौजूद हो, दबाने पर बजबजा हट महसूस होती है, दूसरे हिस्सा की हरनीया तक्लीफ-दह नहीं होती है लेकिन पोते में अंतड़ी दाख़िल होने वाली असल हरनीया होती है ये बहुत ज़्यादा तक्लीफ-दह होती है, इस का इलाज करें या एहतियात करें। इलाज बेहतर होता है हमारी दवा से हरनीया मुकम्मल ठीक होजाता है, इस दवा को शुरू कर के देखें दो महीना में या तो ठीक हो जाती है। अगर कुछ बाक़ी है उम्मीद से कम फ़ायदा हुआ है तो आप अपने लिए बेहतर सोच सकते हैं और हरनीया का मुकम्मल इलाज कम से कम छे[6] महीना का कोर्स करने से इस बीमारी को ख़त्म करने में मदद करती है।

तरीक़ा इस्तेमाल

एक एक टैब्लेट सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और कम अज़ कम आधा घंटा बाद नाशता करें इसी तरह शाम को भी खाना खाने से एक या दो घंटा पहले एक एक टैब्लेट खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें।

परहेज़: हर तरह के गोश्त में मादा जानवर का गोश्त हर गज़ि ना खाएँ, कद्दू और बैंगन का परहेज करें।

बच्चों के दाँत निकलते वक़्त होने वाली बीमारीयों की जानकारी और इलाज का तरीक़ा

छोटे बच्चों को कराहीयत दर्द तक्लीफ का बुरा वक़्त उस टाइम शुरु हो जाता है जिस दिन से उनका पहला दाँत निकलने की शुरूआत होती है और ये हर वक्त जल्दी जल्दी बीमारी होने वाली तक्लीफ उस वक़्त तक ख़त्म नहीं होती है जब तक पूरे जबड़े का आख़िरी दाँत निकल कर दाँत का निकलना बंद नहीं होता है, जब बच्चों के जबड़े के मसूड़ों का पूरा दाँत मुकम्मल होजाता है तो छोटे बच्चों के हर वक्त बीमार होने वाली सिफ़त ख़त्म होजाती है, जिस दिन से पहला दाँत निकलने की शुरूआत होती है आगे का नीचे का दाँत या ऊपर के दाँत के मसूड़ों में ढीलापन उभार सूजन पैदा होती है तो कुछ बच्चों की सूजन का असर गले तक पहूंच जाता है और कुछ बच्चों को सिर्फ दर्द की तक्लीफ होती है तो माँ का दूध पीना कम कर देते हैं या बंद कर देते हैं या सिर्फ दूध खींचने के वक़्त बहुत ज़्यादा रोते चिल्लाते हैं तो कुछ औरतों में ग़लतफ़हमी होती है की गठई लग गई है और ये लोग बच्चों के गले में उंगली डालकर दबाती हैं तो ठोढ़ी देर के लिए बच्चा वापस दूध पीने लगता है लेकिन सच्चाई ये है की गले में सूजन बढ़ जाती है इस लिए ऐसा होता है और लाल बुझक्कड़ औरतें कहती हैं की हँसोली सरक गई है और ये औरतें हँसोली बैठाकर बच्चों की बीमारी को उलझा देती हैं इस लिए इस तरह की हर हरकत से दूर होना चाहीए, बच्चों का जब तक आगे का दाँत निकलता है तब तक ये सूजन दर्द कराहत बेचैनी गले तक रहती है और बच्चों को दूध पीने खींचने में बहुत तक्लीफ होती है और जब बच्चों को चौड़ा मोटा दाँत निकलने की शुरूआत होती है तो बच्चों को या तो जुलाब होगा पेट झड़ेगा या तो सर्दी बुख़ार होगा, अगर नीचे के जबड़ों का मोटा दाँत निकलता है तो कुछ बच्चों को गले से लेकर अंतड़ियों तक सूजन पैदा होजाती है और लुआबी आज़ा ढीले होजाते हैं इस लिए बड़े आसानी के साथ लुआबी आज़ा में सूजन पैदा होजाती है और जब ऊपर के जबड़ों का दाँत निकल रहा होता है तो बुख़ार सर्दी खांसी की बीमारी अक्सरीयत में बच्चों को होती है ये सारी बीमारीयां होना यक़ीनी होता है, बहुत कम बच्चे इस तरह के होते हैं की ऐसा ना होता हो, ऐसे बच्चे लाखों में एक होते हैं, बच्चों के दाँत निकलने की शुरूआत होते ही आप इस दवा की शुरूआत कर दें आपको अपने बच्चों में दूसरे बच्चों में फर्क दिखाई देगा जब बच्चा को पहला दाँत निकलने की शुरूआत ज़ाहिर होने लगे तो रोग़न **फानूस**

बच्चों के दांत निकलने में आसानी पैदा करने वाली दवा, दांत निकलने की वजह से होने वाली बीमारियों के ईलाज का तरीका ये है, ज़्यादा मालूमात के लिए आलमगीर हाज़िक किताब में देखें

फानूस तेल	दायमी बुखार टैब्लेट	बंदिश जुलाब टैब्लेट	इतरीफल सरसरा
फानूस तेल बच्चों के मसूढ़ों पर लगाते रहने से दांत निकलने में आसानी पैदा करता है और मुंह के अंदर गले में अंतड़ियों में सूजन पैदा होने से रोकता है और सूजन ज़ख़्म खतम करने में मदद करता है	ऊपर का दांत निकलने से दिमाग की झिल्ली में पैदा होने वाले बुखार को खतम करने में मदद करता है इस दवा को इस्तेमाल करने से चढ़ने उतरने वाला बुखार खतम होजाता है सूजन भी खतम होजाती है	नीचे का अंदर वाला दांत निकलने से होने वाली जुलाब को रोकने केलिएस दवा को इस्तेमाल करें	बच्चों में पेट की बीमारी और गैस की हाज़मा की खराबी खतम करने केलिए इस दवा को इस्तेमाल करें

तेल एक दो बूँद उंगली पर लगा कर बच्चा के दाँत निकलने की जगह लगा देने से बड़े आसानी के साथ दाँत निकल जाता है और बच्चों को किसी तरह की कोई तक्लीफ ज़ाहिर नहीं होती है **फानूस तेल** लगाने का सही तरीक़ा ये है की पहले अपना हाथ धोकर साफ़ करलें उसके बाद उंगली पर तेल लगाकर मसूड़ों पर लगा दें या कापुस में भीगा कर एक दो बूँद मुँह में गिरा देने से दाँत बड़े आसानी के साथ निकल जाता है, इसी तरह से जब भी आपको गुमान हो की बच्चा का मसूड़ा फूल रहा है और दाँत निकलने की कोई अलामत ज़ाहिर हो रही है तो फ़ौरन **फानूस तेल** मसूड़ों पर लगाते रहें, दाँत बड़े आसानी से निकल आता है क्यों की इस तेल से सूजन ज़ख़म बहुत आसानी से ख़त्म होजाता है और अगर दवा गले में पेट में दाख़िल होती है लुआब के ज़रीया से तो किसी तरह का कोई नुक़्सान नहीं होता है और अगर किसी बच्चा को बहुत ज़्यादा जुलाब संडास हो रही है तो **बंदिश जुलाब टैब्लेट** खिला देने से लीवर मेदा अंतड़ियों का सूजन ख़त्म हो कर फ़ौरन संडास जुलाब बंद होजाती है और अगर किसी बच्चे को दाँत निकलने के दौर में बुख़ार की बीमारी हो जाए तो अक्सर बच्चों को चढ़ने उतरने वाला बुख़ार या चौंक जाने वाला बुख़ार की शक्ल एख्तियार करने में देर नहीं लगती है क्यों की शुरूआत आम बुख़ार से होती है अगर ये दो से तीन दिन में मुकम्मल ठीक हो गया तो बेहतर है वर्ना दिमाग की झिल्ली में सूजन पैदा होने में देर नहीं होती है क्यों की दाँत के मसूड़ों में ढीलापन मौजूद होता है, अब अगर किसी बच्चा को आम बुख़ार या ख़ास बुख़ार की बीमारी है तो **दायमी बुख़ार टैब्लेट** के इस्तेमाल से हर तरह का बुख़ार ख़त्म होजाता है क्यों की **दायमी बुख़ार टैब्लेट** की ख़ास सिफ़त ये है की ये टैब्लेट ख़ास तौर से सूजन की वजह से होने वाले बुख़ार को ख़त्म करने की ख़ुसूसीयत रखता है और आम तौर से हर तरह के बुख़ार को ख़त्म करने में मदद करता है और अगर मलेरीया टाईफ़ाईड का यक़ीन है तो इसके साथ में **मलारिया हुम्मा टैब्लेट** इस्तेमाल करादें और अगर किसी बच्चा को दाँत निकलने के ज़माना में उल्टी की बीमारी है तो **मतली हरन टैब्लेट** इस्तेमाल करने से उल्टी मतली की बीमारी ख़त्म होजाती है और अगर किसी बच्चा को पेट दर्द की वजह से बहुत ज़्यादा रोता है और गैस की तक्लीफ रहती है तो इतरीफ़ल सरसरा को इस्तेमाल कराने से पेट की सारी बीमारी ख़त्म होजाती है और खाना और दूध दोनों को हज़म करने में मदद करता है और खाने की रग़बत पैदा करता है, पेट में दर्द मरोड़ को ख़त्म करने में मदद करता है और गैस को पतला करके ख़ारिज करने में मदद करता है, अगर बहुत छोटा बच्चा है तो आधा चम्मच माजून में माँ का दूध या पानी मिलाकर पतला करलें और पानी वाला हिस्सा बच्चा को चटा दें और तलछट को फेंक दें या किसी को खिला दें इस तरह करने से आसानी के साथ दवा हज़म होजाती है।

दवा को इस्तेमाल करने का तरीक़ा ये है

फानूस तेल लगाने का तरीक़ा ये है की साफ़-शफ़्फ़ाफ़ हाथ की उंगली पर तेल लगाकर दाँत के मसूड़ों पर अच्छी तरह से लगा दें सुबह शाम दो मर्तबा लगाने से बड़े आसानी से बग़ैर किसी तक्लीफ के दाँत निकल आता है और बहुत छोटे बच्चों को टैब्लेट खिलाने का तरीक़ा ये है की थोड़ा सा पानी में टैब्लेट को भीगा दें साफ़ हाथ से मसल कर निथरा हुआ पानी पिला दें, इसी तरह से माजून भी पानी में या दूध में भिगाकर मसल दें उसके बाद निथरा हुआ पानी पिलादें, छोटे बच्चों को एक टैब्लेट भीगाने पर आधा टैब्लेट पेट मैन जाता है आधा टैब्लेट तलछट की शक्ल में रहता है उसको फेंक दें और जब बच्चा एक साल का होजाता है तो उसको आधा खिलाएँ क्यों की बच्चा दवा को हज़म कर लेगा और जो बच्चा एक साल से दो साल तक का है उसको पौना टैब्लेट से एक टैब्लेट तक सादा पानी से खिला दें इनशाअल्लाह मुकम्मल आराम हो जाएगा।

उल्टी, संडास, घबराहट, बेचैनी, कमज़ोरी के इलाज का तरीक़ा ये है

जब पेट की छोटी बड़ी अंतड़ियों के अंदरूनी परत में या तो सूजन पैदा होजाती है या पूरे पेट के अंदरूनी आज़ा में शदीद किस्म की कमज़ोरी के साथ सूजन पैदा होती है तो ये संडास कंट्रोल से बाहर होती है, क्यों की अंतड़ियों में एक चम्मच गेज़ा का बोझ उठाने की ताक़त बाक़ी नहीं रहती तो हर एक दो घंटा बाद संडास महसूस होती है, बहुत ज़्यादा संडास होने की बुनियादी वजह सूजन इन्फ़ेक्शन से होता है और ये **बंदिश जुलाब टैब्लेट** बड़ी तेज़ी से सूजन ख़त्म करके हर तरह के संडास को फ़ौरन रोक देता है, अगर चौबीस घंटा में चार पाँच दफ़ा संडास होती है तो दो टैब्लेट सुबह शाम खिला देने से संडास रुक जाएगी, अगर दवा का असर बहुत तेज़ करना है तो दो दो टैब्लेट तीन टाइम खिला देने से फ़ौरन आराम होजाता है और अगर संडास चौबीस घंटा में दस बारह दफ़ा संडास होती है तो **इतरीफ़ल सरसरा** आधा चम्मच के साथ पाँच टैब्लेट **बंदिश जुलाब** का खुला दें और अगर उल्टी संडास दोनों एक साथ में हो रही है तो इसी के साथ में **मतली हरन टैब्लेट** पाँच टैब्लेट खिला दें फ़ौरन आराम होगा, और अगर मरीज़ के उलटी संडास की बहुत ख़राब हालत है तो मरीज़ को सबसे पहले **कलबिया मोतदिल माजून** आधा चम्मच खिला दो ताकि मरीज़ के दिल दिमाग और ऐसाब के अंदर ताक़त पैदा हो जाए उसके दस पंद्रह मिनट के बाद **मतली हरन टैब्लेट** पाँच टैब्लेट खिला दें, अब दस पंद्रह मिनट या आधा घंटा के बाद मरीज़ को घबराहट बेचैनी और उल्टी से आराम हो गया होगा अब मरीज़ को **बंदिश जुलाब टैब्लेट** को पाँच टैब्लेट खिला दो और उसके बाद **इतरीफ़ल सरसरा** माजून को आधा चम्मच खिला दो इनशाअल्लाह इस पहली ख़ुराक से आराम होना शुरू हो जाएगा, इसी तरह दो से तीन दिन में मुकम्मल आराम हो जाएगा, अगर पहले या दूसरे दिन संडास कंट्रोल में आजाती है तो **बंदिश जुलाब टैब्लेट** को तीन फिर दो टैब्लेट फिर एक

उल्टी संडास घबराहट बेचैनी का मुकम्मल इलाज इस दवा से करें

बंदिश जुलाब टैब्लेट

इतरीफल सरसरा

मतली हरन टैब्लेट

अगर सिर्फ संडास जुलाब होरहा है तो इस दवा को इस्तेमाल करें

बंदिश जुलाब टैब्लेट

इतरीफल सरसरा

अगर सिर्फ उल्टी मतली की बीमारी है तो इस दवा को इस्तेमाल करें

मतली हरन टैब्लेट

इतरीफल सरसरा

टैब्लेट के साथ चलाकर मुकम्मल आराम होने के बाद दवा को बंद करदो, अगर मरीज़ की हालत में कमज़ोरी है तो सिर्फ **कलबिया मोतदिल माजून** और **इतरीफ़ल सरसरा** माजून को इस्तेमाल करलो ताकी दिल दिमाग ऐसाब और अंतड़ियों की कमज़ोरी मुकम्मल तौर से ख़त्म हो जाए और बीमारी को ख़त्म होने के बाद पूरी दवा को पंद्रह दिन या एक महीना तक ज़रूर इस्तेमाल करा देने से इस बीमारी को मुकम्मल ख़त्म करने में मदद मिलती है और इस बीमारी को पैदा करनेवाले आज़ा को मुकम्मल आराम होजाता है और इस बीमारी के अस्बाब से दूसरी बीमारीयों का ख़ातमा होजाता है।

उल्टी संडास घबराहट बेचैनी की दवा को इस्तेमाल करने का तरीक़ा ये है।

अगर सिर्फ संडास हो रही है हर एक दो घंटा बाद पतली पानी की तरह या गाढ़ी संडास हो रही है तो सिर्फ **बंदिश जुलाब टैब्लेट** का पाँच टैब्लेट एक साथ सादा पानी से खिला दें, अगर इसके साथ में **इतरीफ़ल सरसरा** भी आधा चम्मच खिला देने से किसी भी वजह से संडास हो रही है तो फ़ौरन आराम होगा और दो तीन ख़ुराक देने से जब जुलाब संडास का होना रुक जाये तो **बंदिश जुलाब टैब्लेट** की तादाद घटा दें और अगर दवा के असर से दो तीन दिन हो गया संडास बंद हो गई नहीं हो रही है तो चूकंदर का जूस एक गिलास पीला दें एक दो घंटा के अंदर संडास हो जाएगी और अगर उलटी मतली संडास सब एक साथ में घबराहट बेचैनी भी है तो सबसे पहले **मतली हरन टैब्लेट** की पहली ख़ुराक चार टैब्लेट खिला दें सादा पानी से उसके आधा घंटा बाद **बंदिश जुलाब टैब्लेट** चार पाँच टैब्लेट और साथ में **इतरीफ़ल सरसरा** आधा चम्मच खिला दें पहली ख़ुराक से आराम होना शुरू हो जाएगा, अब अगर मुकम्मल आराम नहीं हुआ है तो दो-चार ख़ुराक इसी तरह से इस्तेमाल करें मुकम्मल आराम होने के बाद दो-दो टैब्लेट सुबह शाम कर दें और अगर सिर्फ मतली उल्टी हो रही है तो सिर्फ **मतली हरन टैब्लेट** को एक दो दिन तक सुबह शाम डबल डबल ख़ुराक चार टैब्लेट सुबह चार टैब्लेट शाम को सादा पानी से इस्तेमाल करें मुकम्मल आराम हो जाएगा, अगर उसके साथ में इ**तरीफ़ल सरसरा** को इस्तेमाल करते हो तो ज़्यादा बेहतर है। सारी दवाओं का मुख़्तसर में तरीक़ा इस्तेमाल ये है की जब मरीज़ की हालत ज़्यादा ख़राब हो तो हर दवा को डबल ख़ुराक करके पहली दूसरी ख़ुराक सुबह शाम यानी एक दिन डबल ख़ुराक इस्तेमाल कराएँ उसके बाद आधा करदें यानी सुबह को दो टैब्लेट और शाम को दो-दो टैब्लेट इस्तेमाल करें क्यों की ये हमारी **सलाम फार्मेसी यूनानी कंपनी** की दवा हक़ीक़ी जड़ी बूटी से बनाई गई है इसलिए डबल टिबल ख़ुराक खिलाने से किसी तरह का नुक़्सान या साईड इफेक्ट नहीं होता है।

मौसम का बुख़ार या मलेरीया टाइफ़ाइड या चढ़ने उतरने वाला बहुत पुराना बुख़ार है, इस तरह के सारे बुख़ार को ख़त्म करने का तरीक़ा इलाज।

हर तरह का बुखार, मलेरिया, टाइफाइड या बहोत पुराना बुखार है या चढ़ने उतरने वाले बुखार का ईलाज इस दवा से करें

आम बुखार की हालत में सिर्फ दायमी बुखार टैब्लेट से मुकम्मल आराम होजाता है	अगर बुखार के साथ मलेरिया टाइफाइड है तो इस दवा को इस्तेमाल करने से मुकम्मल आराम होजाता है		अगर बुखार के साथ सर्दी ज़ुकाम खांसी नज़ला है तो साथ में इस दवा का इज़ाफ़ा करें
दायमी बुखार टैब्लेट	**मलारिया हुम्मा टैब्लेट**	**दायमी बुखार टैब्लेट**	**इतरिफल दायमी नज़ला**

मौसमी बुख़ार की अलामत है की पूरे जिस्म के अंदर शदीद किस्म के दर्द के साथ बुख़ार है तो ये आम बुख़ार है और अगर शदीद किस्म के दर्द के साथ ठंडी बुख़ार के साथ हल्का या भारी सरदर्द भी साथ में है तो ये मलेरीया बुख़ार की अलामत है और अगर उल्टी या मतली के साथ जिस्म के अंदर सनसनाहट है या साथ में चक्कर बेचैनी महसूस हो रही है और इसी के साथ में सिरदर्द पूरे जिस्म में दर्द के साथ बुख़ार भी है तो ये अलामत है की हवा या पानी के ज़रीया से जिस्म के अंदर किसी तरह का बदबूदार ताफ़्फ़ुन और सड़न पैदा करने वाला माद्दा दाख़िल हो गया है जो अपने ताफ़्फ़ुन और बदबू से जरासीम वाइरस को पैदा करके जिस्म को नुक़्सान पहुँचा सके उसको टाइफ़ाइड का नाम दिया गया है और अगर एक साथ में ये अलामत ज़ाहिर हो रही है सर्दी खांसी बुख़ार बदन दर्द सिरदर्द उल्टी मतली के साथ बेचैनी नींद में कमी पैदा हो जाए तो अब आप समझ लो की ख़ून और लुआब दोनों के अंदर जरासीम वाइरस के साथ में शदीद किस्म का ताफ़्फ़ुन भी मौजूद है, ये एक साथ में पूरी अलामत का होना मलेरीया टाइफ़ाइड के ताक़तवर हालत की अलामत है और एक बुख़ार और होता है उसको चढ़ने उतरने वाला बुख़ार या दिमाग़ी बुख़ार कहते हैं और एक बुख़ार ख़ौफ़ का होता है जब इन्सान इस हद तक डर जाये की उसका पूरा जिस्म लरज़ उठे कंप कपी पैदा हो जाए तो इस तरह का

ख़ौफ़ बाद में जूड़ी बुख़ार की शक्ल एख्तियार कर लेता है यानी ठंडी के साथ बुख़ार है लेकिन सर में दर्द नहीं है तो ये ख़ौफ़ का डर का बुख़ार है, अब मैं इलाज बता रहा हूँ अगर आपको सिर्फ बुख़ार की बीमारी है तो **दायमी बुख़ार टैब्लेट** को इस्तेमाल करने से मुकम्मल आराम होजाता है, उसका तरीक़ा इस्तेमाल ये है की बहुत तेज़ बुख़ार है तो पहली ख़ुराक में पाँच टैब्लेट एक साथ खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें इसी तरह दूसरी तीसरी ख़ुराक इस्तेमाल करके दो टैब्लेट सुबह खाली पेट दो टैब्लेट **दायमी बुख़ार** शाम के वक़्त खाली पेट इस्तेमाल करें मुकम्मल आराम हो जाएगा और अगर एक साथ मलेरीया बुख़ार है या मलेरीया बुख़ार टाईफ़ाईड ये तीनों तरह की तक्लीफ एक साथ में है तो ये दो तरह का टैब्लेट एक साथ में इस्तेमाल करने से आपको मुकम्मल आरम हो जाएगा, **दायमी बुख़ार टैब्लेट** और साथ में **मलारिया हुम्मा टैब्लेट** ये दोनों टैब्लेट की जब पहली ख़ुराक और दूसरी तीसरी ख़ुराक इस्तेमाल करें तो ये तीनों ख़ुराक में पाँच टैब्लेट **दायमी बुख़ार** और पाँच टैब्लेट **मलारिया हुम्मा** दोनों को पाँच पाँच टैब्लेट सुबह शाम इस्तेमाल करें इसके बाद दोनों दवा में से दो दो टैब्लेट सुबह शाम इस्तेमाल करें ये दोनों दवा हर तरह के बुख़ार को ख़त्म करने में मदद करती है और सर्दी खांसी के लिए **इतरिफल दायमी नज़ला** का इस्तेमाल करने से हर तरह की सर्दी खांसी नज़ला ज़ुकाम को ख़त्म करने में मदद मिलती है और अगर छोटे बच्चों को बुख़ार है तो दो साल से चार साल के बच्चों को एक एक टैब्लेट सुबह शाम इस्तेमाल करें।

तरीक़ा इस्तेमाल

अगर बहुत छोटे बच्चा का बुख़ार ख़त्म नहीं हो रहा है चढ़ते उतरते रहता है तो एक एक टैब्लेट पानी में घोल कर मिल छानकर निथरा हुआ पानी सुबह शाम दो टाइम पिलाने से मुकम्मल आराम हो जाता है और अगर तीन साल से पाँच साल तक का बच्चा है तो एक एक टैब्लेट सादा पानी से खिला दें सुबह शाम और अगर छे6 साल से बारह साल तक का बच्चा है तो दो से तीन टाइम दो दो टैब्लेट खिला देने से बुख़ार उतर जाएगा इसके बाद मुकम्मल ठीक होने तक एक एक टैब्लेट इस्तेमाल कराएँ और अगर बारह साल से ऊपर अठारह साल का है तो तीन तीन टैब्लेट इस्तेमाल कराएँ और बड़ी उम्र के लोगों को पहली दूसरी ख़ुराक पाँच पाँच टैब्लेट इस्तेमाल करने से बुख़ार उतर जाएगा इसके बाद मुकम्मल ठीक होने तक दो दो टैब्लेट या तीन तीन टैब्लेट सुबह शाम हालात के हिसाब से इस्तेमाल करें मुकम्मल आराम हो जाएगा और अगर बुख़ार के साथ में सर्दी खांसी नज़ला ज़ुकाम है तो टैब्लेट के साथ में **इतरीफ़ल दायमी नज़ला** आधा आधा चम्मच सुबह शाम सादा पानी से इस्तेमाल करें।

बार बार हमल गिरजाने वाली बीमारी के इलाज का तरीक़ा

बार बार हमल गिरना या हमल ना ठहेरना इस बीमारी में इस दवा से मुकम्मल आराम होगा

लिकोरा टैब्लेट

बासीर टैब्लेट

अगर साथ में इस दवा का इज़ाफ़ा करें तो ज़्यादा बेहतर होगा

लबाब शबाब माजून

अगर हमल ठहरने के बाद दो से चार महीना के अंदर गिर जाता है तो ये अलामत है की बच्चेदानी कमज़ोर है अक्सर ये बीमारी ऐसी औरतों में होती है जो काफ़ी दिन तक लिकोरिया की बीमारी में मुबतला रहती है, जब शर्मगाह से सफ़ेद पानी ख़ारिज होने वाली बीमारी शुरूआती दिनों में रहती है साल दो साल तक ये पानी चिकट पानी कलर में रहता है और कुछ औरतों का भिंडी के लासा की तरह यानी भिंडी सब्ज़ी में जो चिकट पानी होता है उस तरह का, और जब इस बीमारी का इलाज नहीं होता है तो ये बीमारी की शक्ल बदल जाती है और लिकोरिया का मर्ज़ बहुत पुराना होने के बाद उसकी पहली अलामत है पैरों के गोश्त में खिंचाव दर्द का होना और जब ये बीमारी बड़े नुक़्सान की तरफ़ बढ़ जाती है तो कमर में दर्द हैज़ आने से पहले पेडू-पेट-कमर-पुट्ठा और पैरों में दर्द खिंचाव के साथ हैज़ की शुरूआत होती है, ये अलामत इस बीमारी में होना लाज़िम है लेकिन अलग अलग औरतों में ये अलामत मुख़्तलिफ़ होती है कुछ औरतों में सारी अलामत एक साथ में मौजूद रहती है और कुछ औरतों में ये अलामत कम ज़्यादा होती है और कुछ के अंदर इस अलामत के साथ हैज़ में ख़राबी पैदा होजाती है हैज़ की मिक़दार घट जाती है, और बाज़ दफ़ा महीना दो महीना तक हैज़ आता ही नहीं, यानी बच्चेदानी का क़ुदरती निज़ाम बिगड़ जाता है और जिस्म के अंदर कमज़ोरी पैदा होजाती है, और अगर बड़ी मुश्किल से कभी हमल ठहर गया तो महीना दो महीना चार महीना के अंदर हमल गिर जाता है, और कुछ औरतों को बड़ी मुश्किल से हमल ठहरता है क्यों की शर्मगाह के अंदर सफ़ेद पानी की मोटी परत जमी रहती है, क्यों की बच्चेदानी की हरारत बढ़ जाने से औरत की मनी गाढ़ी होजाती है और बाज़ औरतों की मनी का अंडा ख़राब होजाता है और हैज़ ख़ून में तबदील होने के बजाय दही की तरह का होजाता है और फटे हुए दूध की तरह का मोटा परत शर्मगाह के अंदर जमा रहता है इस लिए मर्द की मनी के कीटाणु औरत की शर्मगाह में पहूंच कर पानी बंकर बाहर की तरफ़ ख़ारिज होजाते हैं क्यों की औरत की मनी के अंडे फ़ौरन मिलते नहीं और औरत की मनी के ताफ़्फ़ुन से मर्द की मनी के वीज़ कीटाणु कुछ सेकंड में पानी बन जाते हैं, औरतों की इस बीमारी का बेहतरीन इलाज ये है की बार-बार हमल गिर जाने वाली बीमारी में सबसे पहला इलाज ये है की **लिकोरा टैब्लेट** और **माजून लबाब शबाब** को खाने के लिए इस्तेमाल करें इस दवा से बच्चेदानी के अंदर की ताक़त बढ़ जाएगी और शर्मगाह के अंदर की ख़राबी ख़त्म करने के लिए रोग़न **फानूस तेल** शर्मगाह के अंदर कॉटन का कपड़ा में फानूस तेल भीगा कर शर्मगाह

के अंदर सोते वक़्त रख लें और सुबह को निकाल कर फेंक दें, इसी तरह एक हफ़्ता दस दिन तक रख लेने से आपको ये फ़ायदा होगा की शर्मगाह के अंदर की हर तरह की ख़राबी ख़त्म होजाती है और शर्मगाह के गोश्त के रेशा खुलिया के अंदर से हर तरह की सूजन इन्फ़ैक्शन ख़त्म होजाती है और गोश्त के रेशा खुलिया के अंदर से हर तरह की कमज़ोरी ख़त्म होजाती है और नयापन पैदा होजाता है और खाने वाली दवा का फ़ायदा ये होता है की **लबाब शबाब माजून** लुआब की पैदाइश को बढ़ाता है और **लिकोरा टैब्लेट** बच्चेदानी की हरारते अज़ीज़िया को ऐतेदाल पर लाता है और बच्चेदानी की ताक़त को बढ़ाता है इस लिए बार-बार हमल गिरने वाली बीमारी को ख़त्म करने में मदद करता है।

तरीक़ा इस्तेमाल

लिकोरा दो टैब्लेट और **बासीर** एक टैब्लेट और अगर माजून है तो दस दस ग्राम माजून सुबह खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और इसी तरह शाम को पूरी दवा को एक साथ खाना खाने से एक दो घंटा पहले सादा पानी से इस्तेमाल करें परहेज़ कुछ भी नहीं है।

बीमारीयों की पैदाइश कैसे होती है

सर्दी की बीमारी और नाक के रास्ते से पानी खारिज होने लगता है तो लुआब के अंदर की तुरशी और लुआब के अंदर की खराबियों को खतम करने के लिए **सर्दी हरण टैब्लेट** और साथ में **इतरिफल दायमी नज़ला** इस्तेमाल करें।

इतरिफल दायमी नज़ला

सर्दी हरण टैब्लेट

अगर आपका लुआब पीला होकर पक गया है तो इस पके हुए फटे हुए लुआब के पीले बलगम को कुदरती हालत पर लाने के लिए **माजून कलबिया मोतदिल** को इस्तेमाल करने से कुदरती हालत पर लाने में मदद करता है।

कलबिया मोतदिल माजून

सर्दी खांसी नज़ला बुख़ार से शुरू होने वाली बीमारी या तो आपको सेहत की तरफ़ ले जाती है या बड़ी बड़ी बीमारीयों को वजूद में लाने का अस्बाब पैदा करती है, सांस फूलने घबराहट बेचैनी से शुरू होती है और बड़ी बड़ी बीमारीयों को वजूद में आने के लिए मदद करती है क्यों की सर्दी खांसी नज़ला बुख़ार लुआब के अंदर फ़साद पैदा होने से शुरू होता है, अगर लुआब के अंदर की ख़राबी ख़त्म होजाती है तो बलग़म की शक्ल पैदा होने से पहले बीमारीयों से नजात मिल जाएगी और पूरे जिस्म के अंदर सेहत का निज़ाम काएम होजाता है और बीमारीयों से नजात मिल जाती है और अगर लुआब के अंदर से ख़राबी ख़त्म होने से पहले बलग़मी फ़साद पैदा हो गया तो सबसे पहले फेफड़ा को नुक़्सान होता है क्यों की फेफड़ा के अंदर दो तरह का रेशा खुलिया होता है एक शक्ल लुआब के खुलिया रेशा की होती है

और दूसरी शक्ल ख़ून के रेशा खुलिया की होती है और इसी जगह से बीमारीयों की शक्ल और हर तरह के बीमारीयों की हद काएम होती है और इसके बाद एक दूसरी बीमारीयों के मिलाप से बलग़म के ज़रीया से नई नई और छोटी बड़ी बीमारीयों का वजूद सामने आता है, अब अगर सर्दी खांसी नज़ला बुख़ार की हालत में लुआब को पकाने वाली दवा दाख़िल हो गई और लुआब पक गया या लुआब ख़ुशक हो गया और पके हुए बलग़म की शक्ल एख्तियार कर गया तो सबसे पहला नुक़्सान फेफड़ा से शुरू होता है फेफड़ा के अंदर का लुआबी खुलिया रेशा के अंदर फ़साद पैदा होजाता है पके हुए बलग़म की वजह से फेफड़ा की ताक़त कमज़ोर होजाती है, उसकी लचक और फुर्ती ख़त्म होजाती है और सांस में तंगी पैदा होजाती है, अगर फेफड़ा की नालीयों में बलग़म ख़ुशक हो गया और बहुत जल्द बलग़म ख़ारिज नहीं होता है तो ये बलग़म अपने अंदर कमज़ोर किस्म की जरासीम पैदा कर देता है और इस जरासीम वाइरस की वजह से फेफड़ा के अंदर और उसकी नालीयों में सूजन और ख़राबी पैदा होना शुरू होजाती है और धीरे धीरे ये बीमारी बड़ी बीमारीयों को पैदा करने में मदद करती है, अब अगर सांस फूलने की वजह से बलग़म ख़ारिज करने वाली दवा से बलग़म को पका कर बलग़म को ख़ारिज करने की कोशिश करोगे तो बलग़म को पकाने वाली दवा सिर्फ़ फेफड़ा का बलग़म नहीं पकाएगी ऐसी दवा पूरे जिस्म के लुआब के ऊपर अपना असर डालती है और लुआब के अंदर फ़ासिद होने वाली सिफ़त पैदा होजाती है और लुआब बलग़मी शक्ल एख्तियार कर लेता है तो पूरे जिस्म के अंदर वाइरस के पैदा होने में मदद मिलती है और अगर उसका ठीक से इलाज नहीं होता है तो यही वाइरस जरासीम की शक्ल एख्तियार करलेते हैं और हर तरह की छोटी बड़ी बीमारीयों को पैदा करने में मदद करते हैं, अब अगर इस जरासीम वाइरस को ख़त्म करने का मुकम्मल इलाज नहीं होता है तो ये बीमारी आपके पूरे जिस्म के लुआबी रेशा खुलिया के अंदर ख़राबी पैदा करने में मदद करती है, दिल की बीमारी पैदा करने में बलग़म पकाने वाली दवा मदद करती है क्यों की ख़ून के अंदर कुछ मामूली मिक़दार लुआब की रहती है जब लुआब के अंदर बलग़म पैदा करने की सिफ़त पैदा होजाती है और लुआब पक जाता है तो ख़ून के अंदर का लुआब फट जाता है और ज़र्रात की शक्ल एख्तियार कर लेता है और ख़ून की नालीयों में चिपकने लगता है और धीरे धीरे जमा होते होते ख़ून की नालीयों में रुकावट पैदा करने लगता है इस लिए दिल को पूरे जिस्म के ख़ून की नालीयों में ख़ून पहुँचाने के लिए आम हालत से ज़्यादा ताक़त इस्तेमाल करना होता है और धीरे धीरे वक़्त के साथ दिल में कमज़ोरी पैदा होने लगती है और अगर सिर्फ कुछ नालीयों में बलग़म जमा होता है तो सिर्फ घबराहट बेचैनी के साथ दिल का मर्ज़ ज़ाहिर होता है और अगर लुआब पूरी तरह से फटा नहीं है सिर्फ खुरदरापन पैदा हो कर लुआब सिर्फ़ फ़ासिद हो गया है तो इस तरह का लुआब नसों की ताक़त को कमज़ोर कर देता है और नसों की लचक और नसों का ठोसपन ख़त्म होजाता है और धीरे धीरे नसों की दीवार मोटी होजाती है और नसों में तंगी पैदा होजाती है और ब्लड प्रैशर की बीमारी का वजूद ज़ाहिर होता है, और अगर बलग़म फेफड़ा की नालीयों में फंसा हुआ है और सांस फूलने की बीमारी पैदा हो गई है या दिमाग के अंदर लुआब फ़ासिद हो कर नज़ला की शक्ल में नाज़िल हो रहा है और फेफड़ों की नालीयों के तरफ़ दाख़िल होने की वजह से बार-बार खांसी आरही

है या मुसलसल खांसी आरही है और बलग़म ख़ारिज हो रहा है या मुसलसल बहुत ज़्यादा खांसी आरही है तो इसका मतलब है या तो फेफड़ों में सूजन पैदा हो गई है इस लिए बलग़म को मुकम्मल तरीक़ा से बाहर की तरफ़ ख़ारिज नहीं हो रहा है और मुसलसल बलग़मी खांसी आरही है और हवा की नालीयों में तंगी पैदा हो गई है और फेफड़ा पूरी ताक़त से बलग़म को बाहर की तरफ़ ख़ारिज करने की कोशिश कर रहा है लेकिन फेफड़ा में सूजन कमज़ोरी होने की वजह से बलग़म को इतना झटका नहीं मिलता है की फ़ौरन ख़ारिज हो जाए, इस तरह की बार-बार की कोशिश से सांस फूलने लगती है और अगर फेफड़ा को ठीक इलाज नहीं मिला तो धीरे धीरे सांस फूलने की बीमारी काएम होजाती है, इस बीमारी का बेहतरीन इलाज ये है की अगर आपको सर्दी खांसी नज़ला ज़ुकाम की बीमारी है तो **इतरीफ़ल दायमी नज़ला** माजून को इस्तेमाल करें ये दवा से आपके फेफड़ा की ताक़त बढ़ेगी और फेफड़ा का सूजन ख़त्म होगा फेफड़ा में जमा हो रहे बलग़म को आसानी के साथ ख़ारिज करके फेफड़ा के बलग़म को साफ़ कर देगा और अगर नज़ला की बीमारी से खांसी आरही है तो **इतरीफ़ल दायमी नज़ला** का माजून दिमाग़ी ताक़त को बढ़ाता है और दिमाग की बदहज़मी को ख़त्म करता है और दिमाग के अंदर लुआब को हज़म करने में मदद करता है, जब दिमाग के अंदर लुआब को पेवस्त करने की ताक़त कमज़ोर होती है तो नज़ला ज़ुकाम खांसी की बीमारी शुरू होती है और जब दिमाग के अंदर आने वाली दिमाग की गेज़ा लुआब के अंदर पेट से निकल कर दिमाग की तरफ़ जाते वक़्त अगर इस लुआब में तेज़ाबीयत(तुर्शी) मौजूद रहती है तो दिमाग तुर्शी वाले फ़ासिद लुआब को हज़म नहीं करता है और इस तरह के फ़ासिद लुआब को बाहर की तरफ़ ख़ारिज करने के लिए मुतहर्रिक होजाता है और सर के अंदर दर्द महसूस होती है और सर्दी की बीमारी शुरू होजाती है, अब अगर सर्दी की बीमारी शुरू होजाती है और नाक के रास्ते से पानी ख़ारिज होने लगता है तो लुआब की तुर्शी और लुआब के अंदर की ख़राबियों को ख़त्म करने के लिए **सर्दी हरन टैब्लेट** और साथ में **इतरीफ़ल दायमी नज़ला** का इस्तेमाल करने से सर्दी की बीमारी मुकम्मल ख़त्म होजाती है और अगर आप पहले से किसी दवा को इस्तेमाल कर रहे हो और आपका लुआब पीला हो कर पक गया है तो इस पके हुए फटे हुए लुआब के पीले बलग़म को क़ुदरती हालत पर लाने के लिए **माजून कलबिया मोतदिल** को इस्तेमाल करने से फटे हुए लुआब के पीले बलग़म को और पूरे जिस्म के अंदर फैले हुए लुआब को और लुआबी आज़ा के अंदर मौजूद लुआब की ख़राबियों को ख़त्म करके क़ुदरती हालत पर लाने में मदद करता है और दिल दिमाग फेफड़ा जिगर मेदा गुर्दा मसाना तिल्ली के अंदर की पूरी नसों को मुतहर्रिक करता है और पूरे जिस्म की सारी नसों की ताक़त को बढ़ाने में मदद करता है, अब अगर आपको एक साथ में सारी बीमारी मौजूद है तो तीनों दवा को एक साथ इस्तेमाल करना ज़्यादा बेहतर है।

तरीक़ा इस्तेमाल

दस दस ग्राम **इतरीफ़ल दायमी नज़ला** और एक एक टैब्लेट **सर्दी हरन टैब्लेट** सुबह शाम खाली पेट सादा पानी से इस्तेमाल करें और अगर साथ में **कलबिया मोतदिल माजून** भी है तो माजून भी दस दस ग्राम सुबह शाम खाली पेट सादा पानी से **सर्दी हरन टैब्लेट** और **इतरीफ़ल दायमी नज़ला** के साथ इस्तेमाल करें।

हरीसा बूटी टैब्लेट का ख़ास फ़ायदा यह है।

हरीसा बूटी टैब्लेट बहुत तेज़ी से माद्दए मन्विया को गाढ़ा करता है, एहतेलम, जिर्यान, रक़्त मनी, मज़ी, वदी और सरअते अंजाल रोकावट की बीमारी को हमेशा के लिए ख़तम करने में मदद करता है। हरारते अज़ीज़िया को बड़ी तेज़ी से बढ़ाता है और सफ़ेद नसों, लुआबी झिल्लियों, लुआबी आज़ा के गोश्त के रेशा खुलिया और गुदूदे मन्विया के अंदर कुव्वते मुदाफ़िअत और हरारते अज़ीज़िया को काएम करने में मदद करता है और लुआब को लुआबी आज़ा में पेवस्त करने की ताक़त को बढ़ाता है और पूरे जिस्म के लुआबी आज़ा को ठोस मज़बूत करके उसकी ताक़त को काएम करता है, मनी को गाढ़ा करके वीज़ किटाणु की रूह और नफ़स को तेज़ी से जमा करता है और किटाणु को ठोस मज़बूत ताक़तवर बनाने में मदद करता है।

माजून अम्बरी ख़ास का फायदा यह है।

माजून अम्बरी ख़ास गुदूदे मन्विया का ढीलापन, कमजोरी को ख़तम करता है। गुदूदे मन्विया के रेशा खुलिया और लुआबी आज़ा के अंदर हरारते अज़ीज़िया को काएम करता है। सफ़ेद ख़ून वाली लुआबी नसों, सुर्ख ख़ून वाली नसों, गुदूदे मन्विया का ठंडापन खत्म करके हरारते अज़ीज़िया को काएम करता है और सफ़ेद नसों, सुर्ख ख़ून वाली नसों, गुदूदे मन्विया के अंदर हर तरह की ताक़त को बढ़ाता है और मुर्दाना बांझपन खत्म करता है। एहसासे कम्तरी खत्म करके नौजवानी की ताक़त और जोश को काएम करने में मदद करता है। वीज़ किटाणु को बहुत तेज़ी से बढ़ाने में मदद करता है। कुव्वते बाह को पैदा करता है। गुर्दा, मसाना, एसाबी ताक़त को बढ़ाता है और कुव्वते बाह और माद्दए मन्विया की हरारत को हमेशा के लिए काएम करने में मदद करता है। माजून अम्बरी ख़ास गुदूदे मन्विया की ताक़त को बढ़ाता है। मनी को गाढ़ा करने की सिफ़त को मुतहर्रिक करके जोश रोकावट सरअते अंजाल की बीमारी को हमेशा के लिए ख़तम करने में मदद करता है और एहतेलम जिरयान की बीमारी को आने से रोकता है माद्दए मन्विया के अंदर जोश हेजान को बढ़ाता है, जिन्सी हवस से मायूसी, ठंडे मिज़ाज, शादी से डरने, मुश्त ज़नी करने वाले, औरतों से नफरत चिड़चिड़ापन रखने वालों को नई उमंग जोश नौजवानी का एहसास काएम रखने में मदद करता है।

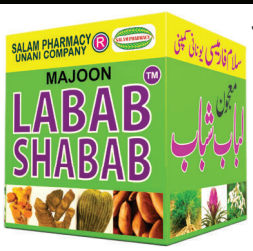

माजून लबाब शबाब का ख़ास फ़ायदा यह है।

माजून लबाब शबाब का ख़ास फ़ायदा यह है: लुआब की पैदाइश को बढ़ाता है, जोड़ों के बीच का लुआब बढ़ाकर जोड़ों के बीच की गद्दी को जोड़ों की हड्डी को ठोस ताक़त को बढ़ा कर जोड़ों के दर्द को हमेशा के लिए ख़तम करता है, घुटना, पीठ, कमर, गर्दन के दर्द, खिंचाव की बीमारी को ख़तम करता है। पूरे जिस्म की लुआबी की आजा को और लुआबी झिल्लियों को लुआब वाली सफेद नस यानी एसाबी आजा और पुट्ठों नसों की ताक़त को बढ़ाकर इन आजा को ठोस मजबूत बनाने में मदद करता है। हड्डियों को नस और एसाबी नसों का भुरभुरापन, कमजोरी को ख़तम करने में मदद करता

माजून याकूत मुकव्वी ख़ास की बेहतरीन सिफ़त यह है।

माजून याकूत मुकव्वी ख़ास की सिफ़त और कामयाब फ़ायदा यह है: बड़ी तेज़ी से लुआब पैदा करता है, जिस्म के हर आज़ा की नस को ताक़त देता है, जिस्म के लुआबी आज़ा के खुलिया (रेशों) की ताक़त को बढ़ाता है, सफ़ेद ख़ून को बढ़ाता है और सफ़ेद नसों की ताक़त को मज़बूत करता है, नस और हड्डियों को ठोस करने वाला गोंद पैदा करके उसे ठोस और मज़बूत बनाता है, मादए मन्विया और वीज़ किटाणु को बड़ी तेज़ी से बढ़ाकर कुव्वते बाह की ताक़त को मज़बूत और मुस्तहकिम बनाकर कुव्वते बाह की ताक़त को काएम रखने में मदद करता है, जिस्म के हर आज़ा की ताक़त को ठोस और मज़बूत बनाने में मदद करता है, लुआबी आज़ा हड्डियों का भूभुरापन ख़तम करके ठोस मज़बूत करता है, जिस्म के हर आज़ा की खाल का खुरदुरपन ख़तम करके चहरे पर चमक पैदा करता है, नौजवानी का अहसास ज़ाहिर करने में मदद करता है।

मुरगाबी तेल का ख़ास फ़ायदा यह है।

मुरगाबी तेल का ख़ास फ़ायदा यह है: यह तेल नसों को ताक़त देता है, नसों की दीवार को ठोस मज़बूत करके दोबारा क़ुदरती ताक़त को वापस लाने में मदद करता है। अगर आज़ाए तनासुल में मामूली कमज़ोरी पैदा हो गई है तो सिर्फ़ मुरगाबी तेल के इस्तेमाल से मुकम्मल आराम हो जाता है और अगर आधी या मुकम्मल नामर्दी पैदा हो गई है या एक दो इंच का होकर सिकुड़ गया है और मुर्दा होकर अकड़ गया है और उसमें ज़िंदगी का अहसास ख़तम हो गया है और हर तरह से मायूसी पैदा हो गई है तो सिर्फ़ एक बोतल मुरगाबी तेल अपनी सचाई बयान करने के लिए काफ़ी है। सिर्फ़ मुरगाबी तेल से मामूली फ़र्क हो जाता है अगर उसके साथ ख़ाने वाली दवा को सिर्फ़ पंद्रह दिन तक इस्तेमाल करके बंद कर दो क्योंकि दवा बंद करने के बाद दवा की सचाई समझ में आएगी की दवा टाइम पास है या हमेशा के लिए क़ुदरती हालत पर लाने में मदद करेगी। अगर हक़ीक़त मालूम होगी तो अपने लिए बेहतरीन फ़ैसला करना आसान हो जाएगा उसके साथ ख़ाने वाली दवा का नाम है माजून याकूत मुकव्वी ख़ास और हरीसा बूटी टैब्लेट और माजून अम्बरी ख़ास और मुरगाबी तेल यह चार दवा से आपको ज़िंसी मायूसी से हमेशा के लिए बाहर निकलने का रास्ता मिल जाएगा और ज़्यादा से ज़्यादा मालूमात के लिए हमारी वेब साइट पर आलमगीर हाज़िक नाम की किताब देखो या सलाम फ़ार्मेसी की किताब तरीक़ा ईलाज में मुकम्मल जानकारी का इल्म हासिल करो और फ़ायदा उठाएं।

सर्दी हरन टैब्लेट का ख़ास फायदा यह है।

सर्दी हरन टैब्लेट की कामयाब और ख़ास सिफ़त यह है: दिमाग़ की सर्दी को ख़तम करता है, दिमाग़ को ताक़त देता है, बार-बार सर्दी, खांसी, नज़ला, ज़ुकाम होने से रोकता है, दिमाग़ और फेफड़ों की ताक़त को बढ़ाता है, दिमाग़ की रुतूबत को फासिद होने से रोकता है, फेफड़ों की कमज़ोरी को ख़तम करके सांस फूलना, खांसी, सर्दी को ख़तम करने में मदद करता है, शदीद क़िस्म का दमा हो तो इतरीफल दायमी नज़ला के साथ इस्तेमाल करें।

इतरीफल सरसरा का फ़ायदा यह है।

इतरीफल सरसरा की बेहतरीन और ख़ास सिफ़त यह है: मेदा, लीवर (जिगर) छोटी बड़ी अंतड़ियों (पूरे पेट) के अंदर की हर तरह की बीमारियों को ख़तम करता है रियाह यानी गैस को तोड़ कर गैस के तअफ्फ़ुन को गलीज़ गाढ़ी गैस को बाहर की तरफ़ ख़ारिज करता है गलीज़ गाढ़ी गैस को पेट की झल्लियों में जिस्म के दूसरे आज़ा में फैलने से रोकता है जिस्म के हर आज़ा को फूलने से बादी होने से बचाता यानी रोकता है पेट को बढ़ने से रोकता है हर तरह की सूजन को ख़तम करता है पेट में शदीद किस्म के दर्द मरोड़ बद-हज़मी को ख़तम करता है जिस्म के अंदर होने वाले रियाही दर्द मरोड़ बेचैनी सीने के अंदर होने वाले रियाही दर्द खिंचाव घब्राहट को ख़तम करता है भूख पैदा करता है खाने की रगबत को बढ़ाता है और खाना को हज़म करके लुआब हवा पानी सफरा को आसानी के साथ जिस्म में फैलने के लिए मदद करता है हवा पानी सफरा लुआब के अंदर की गलाज़त और तअफ्फ़ुन को ख़तम करने में मदद करता है।

बासीर टैब्लेट का बेहतरीन फ़ायदा यह है।

बासीर टैब्लेट का फ़ायदा यह है: जिस्म के अंदरूनी बेरूनी हर हिस्सा की सूजन, इंफ़ेक्शन, छाला और जलन को ख़तम करता है। लिवर, मेदा, गुर्दा, मसाना की सूजन, इंफ़ेक्शन को ख़तम करता है। मुँह, जीभ, पर मसूढ़ों में, गले के अंदर, सीने में, छोटी बड़ी अंतड़ियों में, पेट के अंदर छाला, इंफ़ेक्शन, सूजन, जलन को ख़तम करता है। लुआबी आज़ा की झिल्लियों में, जोड़ों की गद्दी और गांठ पर, घुटना, टखना में जोड़ों की सूजन को और एसाबी सूजन को ख़तम करने में मदद करता है। पेशाब खुलने की जगह पर सूजन को ख़तम करता है और ख़ूनी बादी बवासीर, महेसी, भगन्दर, अपेंडिस, हर्निया, अल्सर, मुंह से नाक से पेशाब के रास्ते से हमल गिरने के बाद का जारी खून रोकने के लिए, हैज़ की ज़्यादती को रोकने के लिए उपर बताई गई इन सभी बीमारियों का मुकम्मल और बेहतरीन इलाज यह है, जखमीनों टैब्लेट, बासीर टैब्लेट, बरगीन टैब्लेट इस तीनों दवा को एक साथ इस्तेमाल करने से ऊपर बताई गई सभी बीमारी का मुकम्मल कायमी इलाज हो जाता है।

जखमीनों टैब्लेट की बेहतरीन और ख़ास सिफ़त यह है।

जखमीनों टैब्लेट की ख़ास सिफ़त यह है: हर जगह के जारी ख़ून को रोकता है और जिस्म के अंदरूनी बेरूनी आज़ा के ज़ख्म को ख़ुश्क करके प्राकृतिक हालत पर लाने में मदद करता है। मुंह से नाक से पेशाब के रास्ते से सन्डास के रास्ते से आने वाले ख़ून को रोक देता है और जारी होने वाले ख़ून की जगह के ज़ख्म को ख़ुश्क करके प्राकृतिक हालत पर लाता है। हमल गिरने के बाद जारी होने वाले ख़ून को रोक देता है और उस जगह के ज़ख्म को सुखाता है, हैज़ की ज़्यादती वाले ख़ून को रोक देता है और जिस्म के बाहरी आज़ा के ज़ख्म को ख़ुश्क करता है, बवासीर ख़ूनी बादी, भगन्दर, हर्निया, अपेंडिस, अल्सर, काब्च बाहर आना, इन सभी बीमारियों को हमेशा के लिए ख़तम करने का तरीक़ा है बासीर टैब्लेट, जखमीनों टैब्लेट, बरगीन टैब्लेट ये तीन टैब्लेट एक साथ इस्तेमाल करने से ऊपर बताई गई हर तरह की बीमारी को ख़तम करता है।

बरगीन टैब्लेट की बेहतरीन और ख़ास सिफ़त यह है।

बरगीन टैब्लेट की ख़ास सिफ़त यह है कि हर तरह के सड़े, गले, बदबूदार ज़ख़्म की जरासीम, वायरस और कीड़ियों को और ज़हरीले माद्दा को ख़तम कर देता है। इस लिए हर तरह का ज़ख़्म आसानी से ख़ुश्क होकर ज़ख़्म की जगह पर नया खुलिया रेशा पैदा होने लगता है और ज़ख़्म का गोश्त भर कर ज़ख़्म को ठीक करने में मदद करता है और लुआबी आज़ा के लुआब के अंदर पैदा होने वाले तअफ़्फ़ुन, जरासीम, वायरस और जहरीले प्रभाव को ख़तम कर देता है। अगर लुआब के अंदर जरासीम, वायरस, तअफ़्फ़ुन या ज़हरीले प्रभाव पैदा हो जाते हैं तो लुआब के अंदर से लुआबी आज़ा को ठोस करने वाला गोंद ख़तम हो जाता है तो सबसे बड़ा नुकसान यह होता है कि एसाब कमज़ोर हो जाता है, कुव्वते मदाफ़िअत ख़तम हो जाती है और लुआब दूध की तरह फट जाता है और फ़ासिद होकर बलग़म की शकल एख़्तियार करके ख़ारिज होता है, सर्दी, खांसी, नज़ला, ज़ुकाम की शकल में बाहर की तरफ़ ख़ारिज होता है बरगीन टैब्लेट इन सभी बीमारियों को बड़े आसानी से ख़तम करने में मदद करता है, बरगीन टैब्लेट बार बार होने वाली खांसी, नज़ला, ज़ुकाम की शकल में बाहर ख़ारिज होने वाले बलग़म को ख़तम कर देती है, अंतड़ी, पेट में होने वाले ज़ख़्म, मुंह के छाला, अल्सर, अपेंडिस, हर तरह की गांठ, गल्ती को कैंसर की शकल एख़्तियार करने से पहले इस बीमारी को ख़तम करती है।

लिकोरा टैब्लेट का ख़ास फ़ायदा यह है।

लिकोरा टैब्लेट की ख़ास सिफ़त यह है: औरतों की सफ़ेद पानी निकलने वाली बीमारी लीकोरिया को ख़तम करता है और लीकोरिया से होने वाली बीमारी पीठ, कमर का दर्द, पैरों में खिंचाव और पेड़ू(नाभ के नीचे) का दर्द खिंचाव बच्चा दानी में सूजन या शर्मगाह के अंदर खुजली, जलन, सूजन और बच्चा दानी से जुड़ी हुई बीमारी, दर्द, तकलीफ़ को ख़तम करने में मदद करता है बच्चा दानी रहम की ताक़त को बढ़ाता है बच्चा दानी शर्मगाह की अंदरूनी परत का सूजन ख़तम करता है बार बार हमल गिर जाने वाली बीमारी को ख़तम करता है लीकोरिया की वजह से होने वाली हैज़ की ख़राबी को ख़तम करता है बच्चा दानी की रूतूबत को फासिद होने से रोकता है और बच्चा दानी में अंडों की पैदाइश को बढ़ाता है रूतूबत को फासिद होने से बचाता है रहम, बच्चा दानी की हरारत को ऐतेदाल पर लाता है रहम के अंदर हमल का मुहाफ़िज़ होता है हमल को गिरने से बचाता है शर्मगाह से निकलने वाली फ़ासिद रूतूबत से होने वाली बीमारी को ख़तम करता है।

रोगन पाइरिया का ख़ास फ़ायदा यह है।

रोगन पाइरिया की ख़ास सिफ़त और कामयाब फ़ायदा यह है: हर तरह के सड़े गले, जरासीमी ज़ख़्म को ख़ुश्क करता है, जरासीम को ख़तम करके ज़ख़्म भरने में मदद करता है, मसूड़ों, दांतों के पाइरिया को ख़तम करके मसूड़ों का पुल पुलापन ख़तम करता है, दांत दर्द, मुंह का छाला या ज़ख़्म हो ख़तम करता है, फोड़ा फुंसी का गहरा ज़ख़्म हो या बहुत गहरा कटा भटा ज़ख़्म हो उसे ख़ुश्क करके तेज़ी से ज़ख़्म को भरने में मदद करता है और चमड़े पर किसी तरह के ज़ख़्म का निशान बाक़ी नहीं छोड़ता है, सफेद दाग को धीरे धीरे मुसलसल लगाते रहने से दाग को ख़तम करने में मदद करता है।

ज़रूरी हिदायत: जिस ज़ख़्म में जरासीम, कीड़ी या फफूंद के असरात हों, ऐसी जगह कम अज़ कम दो टाइम दवा को लगाना चाहिए और दवा रोकने की हालत में जरासीम या कीड़ी का गल्बा बढ़ जाता है, इस लिए वापसी का मौक़ा नहीं देना चाहिए वर्ना ठीक होने का टाइम बढ़ जाता है।

माजून ज्वाला ख़ास की बेहतरीन ख़ासियत यह है।

माजून ज्वाला ख़ास की ख़ास सिफ़त यह है: लुआबी आजा पर हरारते अज़ीज़िया यानी ताक़त देने वाली गर्मी पैदा करके लुआबी आजा के बेजान मुर्दा खुलिया रेशा को मुतहर्रिक करता है, सिकुड़कर अकड़े हुए एसाबी नसों, झिल्लियों की ताक़त को बढ़ाता है, पिस्तान, बच्चा दानी, गर्दन, पीठ, कमर, पेट, सीने के अंदरूनी बेरूनी हर आजा की गांठ गिल्टी को गला कर ख़तम कर देता है, सुर्ख़ ख़ून वाली नसों की दीवारमें सुजन या सुद्दा पैदा होगया हो या सफ़ेद ख़ून वाले सफ़ेद एसाबी नस या लुआबी झिल्लियों में सर्दी लेकर बादी होकर खिंचाव पैदा होकर अकड़ गई है ये सभी बीमारियों को ख़तम करता है, माजून ज्वाला ख़ास पूरे जिस्म के लुआबी आजा के गोश्त के रेशा के खुलिया में मौजूद लुआब के अंदर पैदा होने वाली सख़्त सर्दी और बाद से पैदा होने वाली लुआबी आजा की बीमारियों के हुजूम को ख़तम करके क़ाएमी शबाब को वापस लाने में मदद करता है। गांठ गिल्टी गलाने का तरीक़ा यह है, एक रिपोर्ट आज निकालो, दूसरे दिन से दवा चालू करके दो महीना तक दवा खिलाव, दो महीना पूरा होने पर दोबारा सोनोग्राफ़ी करा लो, अब दोनों रिपोर्ट सामने रखकर देखो गांठ गिल्टी ख़तम हो गई है या कुछ हिस्सा बाक़ी है, अब आपको अपने लिए बेहतरीन फ़ैसला करना आसान होगा।

माजून क़लबिया मुतदिल का ख़ास फ़ायदा यह है।

माजून क़लबिया मुतदिल की ख़ास सिफ़त और कामयाब फ़ायदा यह है: आजाए रईसह, दिल और दिमाग़, जिगर, मेदा, गुर्दा, मसाना, एसाबी पुट्ठों की ताक़त को बढ़ाकर क़ुवी मज़बूत करता है। घब्राहट, बेचैनी, सिरदर्द, चक्कर आना ख़तम करता है। दिल और दिमाग़ की नसों में तहरीक पैदा करके जिस्म के हर आजा की नस को मुतहर्रीक करता है, सिकुड़ कर अकड़ी हुई बंद नसों को खोलता है, नसों में लचक और तहरीक पैदा करके नस को सीधा करता है, नसों में दोबारा ख़ून दौड़ने में मदद करता है, दर्द तकलीफ से निजात मिलती है, बीमारी से छुटकारा दिलाने में मदद करता है, लुआबी आजा के अंदर मौजूद हर तरह के ज़हरीले माद्दे और उसके असरात को ख़तम करता है, नसों से जुड़ी हुई हर तरह की छोटी बड़ी बीमारियों को कामयाबी के साथ ख़तम करने में मदद करता है, कुव्वते मदाफ़िया (बीमारी से लड़ने की ताक़त) को बढ़ाता है, कुव्वते हैवानिया, रूह और नफ़्स की ताक़त को बढ़ाकर ठोस मज़बूत करके मुतहरिक रहने में मदद करता है।

माजून सलाम का ख़ास फ़ायदा यह है।

माजून सलाम का ख़ास फ़ायदा यह है कि बच्चों के जिस्म को हड्डियों को ठोस, मज़बूत, चुस्ती, फुर्ती पैदा करने और जिस्म को बढ़ाने में मदद करता है, बच्चों के मेदा जिगर की ताक़त को बढ़ाता है, भूख पैदा करता है, और औरतों को ज़चकी के बाद (बच्चा पैदा होने के बाद) इस माजून को खाने से जिस्म के हर आजा की ताक़त में इज़ाफ़ा होता है और दूध की पैदाइश को बढ़ाता है, भूख खाने का एहसास तेज़ करता है, ज़चकी से होने वाली हर तरह की कमज़ोरी को ख़तम करता है और बीमारी के बाद की कमज़ोरियों को ख़तम करने में मदद करता है, यह माजून जड़ी-बूटियों, मफ़्ज़ियात से बना हुआ, क़ुदरती नबातियाती टॉनिक है।

माजून आबे शबाब का ख़ास फ़ायदा ये है।

माजून आबे शबाब लुआबी आज़ा की ताक़त को बढ़ाता है और मुर्दा बेजान हो रहे लुआबी आज़ा के रेशा खुलिया को जिगर-गुर्दा-दिल-फेफड़ा के अंदर की नालीयों को नसों के अंदर से इन्फ़ैक्शन ढीलापन सूजन को ख़त्म करने में मदद करता है और ये सारे आज़ा की ताक़त को बढ़ाता है और नया रेशा खुलिया पैदा करने में मदद करता है, जिगर-गुर्दा-दिल-फेफड़ा-दिमाग़ के ऊपर की झिल्लियों में ताक़त देने वाली गर्मी पैदा करता है और उसकी हरारत को क़ायम करता है और मुर्दा बेजान कमज़ोर हो रही इन झिल्लियों को ठोस मज़बूत और ताक़तवर बनाने में मदद करता है और पूरे जिस्म के लुआबी आज़ा यानी दाँत के मसूड़ा से लेकर ज़बान मुँह के अंदर गले और सीना मेदा छोटी बड़ी अंतड़ियों के अंदर से और सफ़ैद लुआबी नसों झिल्लियों पूरे ऐसाब के लुआबी आज़ा के अंदर से सूजन इन्फ़ैक्शन ढीलापन को मुर्दा बेजान हो कर गाँठ गिलटी पैदा करने वाले रेशा खुलिया की बीमारी को शुरूआत होने से पहले ख़त्म करने में मदद करता है और लुआबी आज़ा के जर्रात को और उसके रेशा खुलिया को नई ताक़त देने में मदद करता है और दुबारा नया रेशा खुलिया पैदा करने में मदद करता है।

माजून आबे शबाब के ज़रीया से ये सारी बीमारीयों को ख़त्म करने का तरीक़ा इलाज ये है।

अगर फेफड़ा के अंदर की नालीयां मोटी हो गई है और सांस लेने में तकलीफ़ हो रही है और बहुत ज़्यादा खांसी आरही है सांस फूल रही फेफड़ा ठीक से काम नहीं कर रहा है और पेट के ज़रीया जल्दी जल्दी सांस ले रहे हो या दिल की नसों के ज़रीया ख़ून स्पलाई होने वाली नसों की दीवार मोटी हो गई है और नसों में तंगी पैदा हो गई है या ख़ून की नालीयों में बलग़म के जर्रात जमा हो गए हैं और ख़ून दौड़ने में रुकावट पैदा करते हैं नसों में तंगी पैदा होने से घबराहट बेचैनी होती है और ब्लड प्रैशर हाई होने वाली बीमारी की शुरूआत होजाती है या दिल की बीमारी होने का यक़ीन बढ़ जाता है इस तरह की हर छोटी बड़ी बीमारीयों को होने से पहले ख़त्म करने का तरीक़ा और अगर इस तरह की बड़ी बीमारी पैदा हो गई है तो उसको मुकम्मल तरीक़ा से ख़त्म करने का तरीक़ा इलाज ये है की हर बड़ी बीमारी होने के बाद इस दवा से मुकम्मल फ़ायदा उठा सकते हैं और अगर आपको बीमारी नहीं है तो भी इस दवा का इस्तेमाल आपको फ़ायदा देगा, पहली दवा का नाम है माजून आबे शबाब दूसरी दवा का नाम है माजून कलबिया मोतदिल और तीसरी दवा का नाम है मगज़ीन टैब्लेट, पहली दवा लुआबी रेशा खुलिया की ताक़त को बढ़ाती है दूसरी दवा दिमाग़ की नसों को और ऐसाब को आज़ा रईसा की ताक़त को बढ़ाती है और उसको मुतहर्रिक करती है तीसरी दवा सूजन को ख़त्म करती है हर तरह की लुआबी जरासीम वाइरस कीड़ी को ख़त्म करने में मदद करती है, और ये तीनों दवा की मुकम्मल ख़ासीयत मालूम करें इस किताब में हर दवा की ख़ासीयत मौजूद है और ज़्यादा मालूमात के लिए इस किताब 'आलमगीर हाज़िक़' नाम की किताब के ज़रीया मालूमात और तरीक़ा इलाज की जानकारी हासिल करें।

गैस हरन टैब्लेट का फायदा यह है।

गैस हरन टैब्लेट की कामयाब और ख़ास सिफ़त यह है: गैस (रियाह) को तोड़कर बाहर करे, खट्टी डकार, बदहज़मी दूर करे, भूख खाने की इच्छा को बढ़ाता है, पेट दर्द, मरोड़, बाव गोला दूर करता है, पेट की खराबी से होने वाली हर तरह की तकलीफ़ को खत्म करता है, पेट को साफ रखता है, कब्ज़ को दूर करता है, बवासीर की तकलीफ़ को आने से रोकता है।

इतरीफ़ल दायमी नज़ला का ख़ास फ़ायदा ये है

इतरीफ़ल दायमी नज़ला की ख़ास सिफ़त ये है की हर तरह की सर्दी खांसी नज़ला ज़ुकाम और सांस फूलने की बीमारी को पहली ख़ुराक से फ़ायदा शुरू होजाता है दिमाग़ की झिल्ली में या फेफड़ा की नाली में सूजन होने की वजह से शदीद किस्म की खांसी हो या बहुत पुरानी सांस फूलने की बीमारी है उसको हमेशा के लिए ख़त्म करने में मदद करता है, दिल दिमाग़ फेफड़ा को और ऐसाब की ताक़त को बढ़ाता है और कुव्वते मुदाफिअत को बढ़ाने में मदद करता है, सर्दी खांसी नज़ला ज़ुकाम सांस फूलने की बीमारी से हर तरह का ईलाज करके परेशान हो गए हैं तो एक बार इस दवा की आज़माईश ज़रूर करें, इतरीफ़ल दायमी नज़ला का छोटा डिब्बा आज़माईश के लिए काफ़ी है, ये दवा काम इस तरह से करती है की मादा जिगर अंतड़ियों की और हाज़मा की ताक़त को बढ़ाती है, दिल दिमाग़ फेफड़ा जिगर मेदा गर्दा मसाना के ऐसाबी झिल्ली के अंदर लुआब को पेवस्त करने की सलाहीयत पैदा करती है और ये सारे आज़ा की ताक़त को क़ायम करती है और हर तरह के जरासीम वायरस के ज़हरीले असरात को ख़त्म करने में मदद करती है इसलिए इतरीफ़ल दायमी नज़ला ऊपर बताई गई सारी तकलीफों को आसानी के साथ ख़त्म करने में मदद करता है, इस दवा की ख़ास बात ये है की लुआब या बलग़म को पकाती नहीं है और ना तो बलग़म को फेफड़ा में ख़ुशक होने देती है ये दवा इतरीफ़ल दायमी नज़ला लुआब को फ़ासिद होने से बचाती है और पेवस्त होने वाली ताक़त को मुतहर्रिक करके आज़ाए रईसा की और ऐसाब की ताक़त को बढ़ाने में मदद करती है।

माजून शबाबे कलबिया का ख़ास फ़ायदा यह है।

माजून शबाबे कलबिया का ख़ास फ़ायदा यह है: ख़ून की पैदाइश को बड़े तेज़ी से बढ़ाता है और हर तरह की कमज़ोरी को ख़तम करता है, आजाए रईसा, दिल, दिमाग़, जिगर, मेदा, गुर्दा, मसाना, एसाब, और पुट्ठों को फेफड़ा की ताक़त को बढ़ाता है और कुव्वते मुदाफियत पैदा करता है। बार बार पेशाब आना और बच्चों का बिस्तर पर पेशाब करने वाली बीमारी को ख़तम करता है, यह माजून कुव्वते मुदाफियत को इतना बढ़ाता है के बीमारी कमज़ोर हो जाती है, बीमार मरीज़ सेहत और तंदुरुस्ती की तरफ़ बढ़कर बीमारी से छुटकारा पा लेता है, इस माजून को बिना किसी बीमारी के बेज़रूरत सिर्फ़ एसाबी ताक़त बढ़ाने के लिए जिस्म के हर आज़ा की ताक़त को क़ाएम रखने के लिए इस्तेमाल कर सकते हो, यह माजून एक बेहतरीन नाबाताती टॉनिक है।

सर्दी हरन तेल का ख़ास फ़ायदा यह है।

सर्दी हरन तेल की ख़ास सिफ़त और कामयाब फ़ायदा यह है: बच्चों का सर्दी, ज़ुकाम, नज़ला, खांसी की बीमारी में पैर के तलवे पर लगाने से आराम मिलता है, जिन बच्चों को बार-बार सर्दी, खांसी, न्यूमोनिया होते रहता है, अपने बच्चों के सीना, पीठ, गर्दन, पैर के तलवे पर मालिश करने से आराम मिलता है, यह तेल नसों में गर्मी के साथ ताक़त पैदा करता है, गोश्त, चमड़े पर गर्मी का असर होते ही सर्दी ठंडी ख़तम हो जाती है। सुखन्डी सूखा रोग को ख़तम करने में मदद करता है, यह तेल बच्चों की मालिश करने से सेहत को बेहतर बनाने में मदद मिलती है।

मलारिया हुम्मा टैब्लेट की ख़ास सिफ़त यह है।

मलारिया हुम्मा टैब्लेट की कामयाब और ख़ास सिफ़त यह है कि यह हर प्रकार के बुख़ार को ख़तम करने में मदद करता है, मलेरिया बुख़ार, सफरावी बुख़ार, फेफड़ों की ख़राबी से होने वाला बुख़ार, मेदा की ख़राबी, जरासीम से होने वाले बुख़ार को ख़तम करने में मदद करता है, जिगर, मेदा, फेफड़ा, दिमाग की झिल्ली के वरम को ख़तम करता है, इस वरम से होने वाले बुख़ार को ख़तम करने में मदद करता है, ख़ासकर जूड़ी(ठंडी) बुख़ार में मददगार है।

मतली हरन टैब्लेट का ख़ास फ़ायदा यह है।

मतली हरन टैब्लेट की कामयाब और ख़ास सिफ़त यह है: बद हज़मी, क़ह, उल्टी, मतली, हिचकी, पेट दर्द, मरोड़, रियाही फ़साद को ख़तम करता है, गाढ़ी रियाह को पतला करके बाहर निकालता है। पेट और रियाह की गलाज़त को साफ़ करके सेहत के नियम को सादिर करता है, खाने को हज़म करने में मदद करता है, मेदा, जिगर के ज़हरीले असरात को ख़तम करता है, भूक को बढ़ाता है।

कंगारू तेल का ख़ास फ़ायदा यह है।

कंगारू तेल की ख़ास सिफ़त और कामयाब फ़ायदा यह है: यह तेल नसों की ताक़त को बढ़ाता है, मुर्दा बे जान नसों की अकड़न को ख़तम करता है, नसों में लचक पैदा करके बंद नसों में फिर से खून दौड़ने के लायक बनाता है, किसी भी जगह नस बंद होकर दौराने खून रुक गया हो या नस चिपक कर आधी-अधूरी हो गई है, दौराने खून रुक-रुक कर दबाव से चल रहा हो और इस दबाव से दर्द हो रहा हो तो यह कंगारू तेल अपनी गर्मी से नस में नरमी पैदा करके नस को सीधा गोल-कद्रती हालत में लाता है, इसलिए नसों का दर्द हमेशा के लिए ख़तम कर देता है और नसों की ताक़त को बढ़ाता है, दिल के मकाम का दर्द हो या सीना, पीठ, कमर, पुट्ठा में नसों का दर्द हो या गरदन की नस चढ़ी हुई नस और दर्द को ख़तम करता है और हर जगह की कमज़ोर नस की ताक़त को बढ़ाकर उसे मज़बूत करने में मदद करता है, नसों का बेरूनी टॉनिक है।

मुकव्वी दिमाग़ तेल का ख़ास फ़ायदा यह है।

मुकव्वी दिमाग़ तेल की ख़ास सिफ़त और कामयाब फ़ायदा यह है: दिमाग़ को ताक़त देता है, याददाश्त को बढ़ाता है और तेज़ करता है, दिमाग़ के खुलिया(cell) को दिमाग़ के नसों की ताक़त को बढ़ाता है, दिमाग़ की सर्दी खुशकी को ख़तम करके ऐतेदाल पर लाता है और बालों की जड़ों को मज़बूत करता है, बालों को टूटने, झड़ने से बचाता है, झड़ते बालों को रोकने में मदद करता है, बालों की ताक़त को बढ़ाता है, दिमाग़ के ऊपर की हड्डियों, झिल्लियों को और ख़ाल के रेशों को ताक़त देता है, ख़ाल के रेशों में गलीज़ पानी को ख़तम करके नया बाल उगाने में मदद करता है, बालों की सियाही को कायम रखता है, आधे या पूरे सिरदर्द को ख़तम करता है, गहरी नींद पैदा करता है, दिमाग़ की थकावट को दूर करता है, दिमाग़ की मज़बूती जिस्म के बादशाह का ताक़तवर होना है, जब दिमाग़ में ताक़त आएगी तो बीमारी जाएगी, सिर्फ़ जड़ी-बूटियों को पका कर बनाया गया तेल है, ना ठंडा ना गरम और जड़ी-बूटी की महक के अलावा कोई ख़ुशबू नहीं है।

जोहरी टैब्लेट का ख़ास फ़ायदा यह है।

जोहरी टैब्लेट का ख़ास फ़ायदा यह है: लुआब के अंदर हरारते अज़ीज़िया और एसाबी जौहर की पैदाइश को बढ़ाता है, एसाब की नसों यानी सफेद लुआबी की नसों और एसाबी झिल्लियों की ताक़त को बढ़ाता है, एसाब को ठोस मजबूत करने में मदद करता है, एसाब की कमज़ोरी को ख़तम करता है, कुव्वते-मुदाफ़िअत को बढ़ाता है, फेफड़े के अंदर की सर्दी को ख़तम करता है, न्यूमोनिया और सर्दी-नज़ला-ज़ुकाम-खांसी को रोकने में मदद करता है, लुआबी आज़ा और नसों हड्डियों का भुरभुरापन और कमज़ोरी को ख़तम करता है, लुआब से पैदा होने वाली बीमारियों को ख़तम करता है, लुआब को फासिद होने से बचाता है और लुआबी आज़ा की ताक़त को बढ़ाने में मदद करता है।

लकवानी तेल का ख़ास फ़ायदा यह है।

लकवानी तेल की कामयाब और ख़ास सिफ़त यह है: जिस्म के किसी भी हिस्से की नसों में तंगी पैदा हो गई है और दौरान खून के दबाव से दर्द हो रहा है या नसों में सर्दी खुशकी पैदा होकर नस कमज़ोर और मुर्दा होकर नस बंद हो गई हो या नस चिपक कर आधी-अधूरी बंद हुई हो और खून के दबाव से दर्द हो रहा है तो ऐसे हर तरह के दर्द को ख़तम करने में मदद करता है और जिस्म के किसी भी आजा के रेशा और पुट्ठों में लुआबी एसाबी खुलिया के अंदर से पुराना चोट मोछ, गठिया या गरदन, पीठ, कमर का दर्द हो या हाथ, पैर, छाती, सीना में दर्द हो रहा हो तो ऐसे सभी तरह के दर्द से तुरंत आराम पाने के लिए लकवानी तेल का इस्तेमाल करें, अरकुन्निसा (Sciatica) या फ़ालिज लकवा की बीमारी हो तो इस तेल की मुसलसल मालिश करने से हर जगह की नसों में गर्मी और ताक़त पहुँचाकर नस को सीधा करके बीमारी को ख़तम करने में मदद करता है, इस तेल को बेज़रूरत इस्तेमाल करके ज़रूर आज़माईश करें अपने अंदर ताक़त के साथ राहत और कुव्वत महसूस करेंगे और इस तेल के इस्तेमाल करते रहने से एसाबी नसों की बीमारियों के आने का ख़तरा कम हो जाता है।

फ़ानूस तेल का ख़ास फ़ायदा यह है।

फ़ानूस तेल की ख़ास सिफ़त और कामयाब फ़ायदा यह है: जलने, कटने, फटने, चोट, मोच, छोटे बड़े ज़ख़्म का बहता हुआ ख़ून तुरंत रोकने में मदद करता है और हर तरह के ज़ख़्म पर मुसलसल लगाते रहने से बहुत जल्द ज़ख़्म भर जाता है, ज़ख़्म खुशक होने के बाद ज़ख़्म का दाग बाक़ी नहीं रहता है, कान दर्द, मसूढ़ा दांत मुँह ज़बान का छाला, ज़ख़्म सूजन ख़तम करता है, आग या तेल से जलने के बाद जले हुए ज़ख़्म पर लगाते रहने से दर्द जलन तुरंत ख़तम करता है और बड़े तेज़ी से ज़ख़्म को खुशक कर देता है, चमड़े पर जलने का दाग बाक़ी नहीं रहता और बवासीर का मस्सा ठोंठा हो या पूरी कांच बाहर आती हो या औरतों की शर्मगाह बाहर की ओर निकल आती हो तो फ़ानूस तेल मुसलसल लगाते रहने से प्राकृतिक स्थिति पर लाने में मदद करता है और छोटे बच्चों के दांत निकलने के वक़्त हाथ की उंगली में तेल लगाकर बच्चे के मसूढ़ों पर लगा देने से दांत आसानी से निकल आता है और बच्चे के गले में मसूढ़ों में और दिमाग की झिल्ली पर अंतड़ियों के अंदर का सूजन ख़तम करता है, इसलिए सूजन की वजह से बार बार होने वाले बुख़ार से निजात और राहत के साथ सूजन से होने वाली बीमारियों को ख़तम करने में मदद करता है।

जामुनी मेथी टैब्लेट का ख़ास फ़ायदा यह है।

जामुनी मेथी टैब्लेट शुगर घटाने की दवा नहीं है, जामुनी मेथी टैब्लेट शुगर को ऐतेदाल पर रखने वाले निज़ाम को मुतहर्रिक करती है और शुगर बढ़जाने वाली बीमारी के आने के बाद मरीज के अंदर हर तरह की कमजोरी पैदा हो जाती है और मरीज अपनी उम्र से 30 साल आगे चला जाता है क्योंकि शुगर के मरीज का खाना हज़म होने के बाद गिज़ा से जो लुआब तय्यार होता है यह लुआब कुछ मरीजों का पचास फ़ीसदी हज़म होता है और कुछ मरीजों का लुआब सत्तर से अस्सी फ़ीसदी हज़म होता है, इसी लिए शुगर के मरीज का पूरा जिस्मानी निज़ाम कमजोर हो जाता है, जामुनी मेथी टैब्लेट मेदा लीवर छोटी बड़ी अंतड़ियों को एसाबी नसों झिल्लियों को और लुआबी आजा को और शुगर को कंट्रोल करने वाले आजा लबलबा(pancreas) को ताक़त देकर ये सारे आजा को मुतहर्रिक करके गिज़ा से तय्यार होने वाला लुआब और प्रोटीन लुआबी आज़ा में पेवस्त होकर हज़म होजाएगा तो आपके जिस्म की हर आज़ा के साथ आपका लबलबा ताक़तवर मज़बूत होजाएगा और यही लबलबा ढीला कमजोर होने से शुगर की बीमारी शुरू होती है जब आपका लबलबा प्राकृतिक हालत में आजाएगा तो शुगर की बीमारी हमेशा के लिए ख़तम हो जाती है, जामुनी मेथी टैब्लेट ताक़त बढ़ाने की दवा है जिस आजा की ख़राबी से शुगर की बीमारी होती है ये दवा से हर आजा के अंदर हाज़मे की ताक़त बढ़ाने की ख़ूबी मौजूद है शुगर की बीमारी को मुकम्मल ख़तम करने के लिए ये पूरी दवा को एक साथ इस्तेमाल करने से मदद मिलती है, जामुनी मेथी टैब्लेट लुआबी आजा के अंदर लुआब को पेवस्त हज़म करने की ताक़त को बढ़ाता है, माजून कलबिया मोतदिल दिमाग की नसों को और जिस्म के हर आजा की नसों को और एसाबी नसों झिल्लियों को मुतहर्रिक करके दिमाग के रेशा खुलिया की ताक़त को बढ़ाता है और याकूत मुकव्वी ख़ास टैब्लेट लुआब की पैदाइश को बड़े तेज़ी से बढ़ाता है पूरे जिस्म की नसों हड्डियों जोड़ों को और लुआबी आजा की ताक़त को बड़ी तेज़ी से बढ़ाता है और ठोस मज़बूत बनाने में मदद करता है, जामुनी मेथी टैब्लेट के साथ ये दोनों दवा का इजाफ़ा करने से शुगर को ख़तम करने में आसानी पैदा होती है और हर तरह की ताक़त का इजाफ़ा होता है और शुगर से होने वाली कमजोरी ख़तम हो जाती है और शुगर की बीमारी को हमेशा के लिए ख़तम करने में मदद करता है।

ज्वाला ख़ास टैब्लेट का ख़ास फ़ायदा।

ज्वाला ख़ास टैब्लेट की ख़ास सिफ़त यह है कि लुआब के अंदर की सर्दी और ख़ुश्की को ख़तम करता है, लुआब के अंदर से और लुआबी आजा के अंदर का ठंडापन ख़तम करता है और लुआबी आजा के अंदर लुआब को और लुआबी जौहर को पेवस्त करने में मदद करता है और लुआब को फ़ासिद होने से बचाता है। यह सर्दी खांसी की दवा नहीं है लेकिन सर्दी खांसी की जड़ को ख़तम करता है और बलगम को खुश्क होने और बलगम को पकने से बचाता है और लुआब को उसके असल मकाम पर पेवस्त करके लुआबी आजा की ताक़त को बढ़ाने में मदद करता है। दिल, दिमाग, फेफड़े, जिगर, गुर्दा के ऊपर की झिल्ली को ठोस मजबूत और ताक़तवर बनाने में मदद करता है और ख़ास बात यह है कि पूरे जिस्म का सबसे महत्वपूर्ण सबसे ख़ास हिस्सा और पूरे जिस्म को मरीज़ बनाने वाला पूरे जिस्म को बूढ़ा करने वाला और पूरे जिस्म को नौजवानी पर कायम रखने वाला हिस्सा यही झिल्ली है, क्यूंकि दिमाग की झिल्ली के बिना दिमाग आइसक्रीम है और दिल, जिगर, गुर्दा झिल्ली के बिना मुंजमिद(जमा हुआ) खून है और फेफड़े की झिल्ली के बिना बुलबुला फूगा है। ज्वाला ख़ास टैब्लेट दिमाग के ऊपर की झिल्ली के ऊपर से होकर पूरे जिस्म की हर आजा में मौजूद लुआबी झिल्ली और सफ़ेद बिना खून वाली लुआबी नस यानी एसाबी आजा की ताक़त को ठोस मजबूत और ताक़तवर बनाने में मदद करता है।

मगज़ीन टैब्लेट की ख़ास सिफ़त यह है।

मगज़ीन टैब्लेट की ख़ास सिफ़त यह है: छोटी बड़ी अंतड़ियों के अंदर पेट की हर तरह की कीड़ी को ख़तम करता है और लुआबी आज़ा लुआबी रेशा खुलिया और लुआब के अंदर मौजूद हर तरह की जरासीम, वायरस, फफूंद और कीड़ियों को ख़तम करता है और अंदरूनी बेरूनी हर तरह की गांठ, गिल्टी, फोड़ा, फुंसी, छाला, अल्सर, अपेंडिस और हर तरह के ज़ख़्म के अंदर से हर तरह की जरासीम, वायरस, कीड़ी को ख़तम करता है और नासूर कैंसर बन जाने से रोकता है यानी होने वाले कैंसर नासूर की बीमारी को ख़तम करता है लुआबी आज़ा की जरासीम, वायरस, कीड़ी और तअफ़्फ़ुन को ख़तम करके एसाब, हड्डी और नसों और लुआबी झिल्ली को ठोस मज़बूत होने में मदद करता है।

बंदिश जुलाब टैब्लेट का फ़ायदा यह है।

बंदिश जुलाब टैब्लेट की कामयाब और ख़ास सिफ़त यह है: जुलाब, पेचिश को रोकने में मदद करता है, जिगर मेदा आंत के अंदर फासिद रुतूबत की रियाह को तोड़कर जुदा करता है, छोटी बड़ी आंत की अंदरूनी परत के वरम को खत्म करके जुलाब और पेचिश की बीमारी को दूर करता है, मरोड़ के साथ या बार-बार संडास का जाना, जिगर मेदा या अंतड़ियों की खराबी से बार-बार संडास जाने की बीमारी को खत्म करने में मदद करता है।

निहायतुल यरकान टैब्लेट का ख़ास फ़ायदा यह है।

निहायतुल यरकान टैब्लेट की कामयाब और ख़ास सिफ़त यह है: निज़ामे सफ़रा को ऐतेदाल पर लाता है, यरक़ान(पीलिया) की बीमारी को ख़तम करने में मदद करता है, सफ़रावी बुख़ार को रोकता है, जिगर मेदा की ताक़त को बढ़ाकर सूजन वर्म को ख़तम करता है, जिगर (लीवर) की बेतरतीबी को ख़तम करके ऐतेदाल पर लाता है, लुआबी रुतूबत और खून के अंदर की गलाज़त को साफ़ करता है, सफ़रा को कम करता है, यरक़ान (पीलिया) की बीमारी ख़तम करने में मदद करता है, सफ़रावी बुख़ार में फ़ायदेमंद है।

पैगामे शिफ़ा टैब्लेट का ख़ास फ़ायदा यह है।

पैगामे शिफ़ा टैब्लेट की ख़ास सिफ़त यह है: ख़ासकर पेट जिगर हाज़्मे की ताक़त को बढ़ाता है, खूब ज़्यादा खाया जाए खूब ज़्यादा हज़म करता है, लुआब के अंदर ताक़त देने वाली गर्मी पैदा करके लुआबी आज़ा और एसाब और पुट्ठों की ताक़त को बढ़ाता है, माद्दए मन्विया के अंदर हरारते अजीजिया को बढ़ाता है, मनी को गाढ़ा करता है, गुदूदे मन्विया को ताक़त देता है, वीर्य किटाणु बढ़ाने में मदद करता है, चालीस साल के बाद की कमज़ोरी को ख़तम करके जिस्म के हर आज़ा को ठोस मज़बूत करने में मदद करता है और कुव्वते बाह की ताक़त को हमेशा क़ाएम रहने में मदद करता है।

पत्थर चट्टा टैब्लेट का ख़ास फ़ायदा यह है।

पत्थर चट्टा टैब्लेट की ख़ास सिफ़त यह है: हर जगह की पथरी को गलाकर ख़तम करने में मदद करता है, गुर्दा मसाना यानी किडनी या पेशाब की थैली या पित की थैली में पत्थर मौजूद है तो बड़े आसानी के साथ और बिना किसी नुक़सान और बिना किसी तकलीफ़ के पत्थरी हमेशा के लिए ख़तम हो जाती है। अब पत्थरी को ख़तम करने का आसान रास्ता और बेहतरीन तरीक़ा यह है कि सब से पहले आप ताज़ा रिपोर्ट निकालो, पत्थर की साइज़ क्या है, उसके बाद पत्थर चट्टा टैब्लेट का इस्तेमाल शुरू कर दो। इस दवा को दो महीना तक इस्तेमाल करो, उसके बाद तुरंत दुसरी रिपोर्ट निकाल कर दोनों रिपोर्ट को सामने रख कर देखो कि सोनोग्राफी में पत्थरी की पोज़िशन क्या है, पत्थरी ख़तम हो गई है या कुछ हिस्सा बाक़ी है। अगर पत्थरी छोटी है तो दो महीने में मुकम्मल ख़तम हो जाती है और अगर पत्थरी की साइज़ बहुत बड़ी है और साथ में छोटी बड़ी बीस एम एम के साथ में और भी अलग अलग साइज़ का दो चार पत्थर मौजूद है तो आपको दो मरतबा सोनोग्राफी कराने से और दो महीना तक दवा को इस्तेमाल करने के बाद हक़ीक़त और सच्चाई का रास्ता मालूम होजाएगा और आप अपने लिए बेहतरीन फैसला और अपना फ़ायदा नुक़सान अपने आप से मालूम कर सकते हो। अगर पत्थरी गुर्दा मसाना में है तो यह पत्थरी बड़े आसानी के साथ दो तीन महीने में हर तरह की पत्थरी ख़तम होजाती है और अगर पत्थरी पित की थैली में है तो किडनी की पत्थरी से कुछ वक़्त ज़्यादा लगता है। पत्थर पित की थैली में है या किडनी में पत्थर है, दोनों जगह का पत्थर मुकम्मल ख़तम होजाता है, बस साइज़ के हिसाब से कम या ज़्यादा वक़्त लगता है लेकिन ख़तम ज़रूर होता है। पित की थैली और किडनी या पेशाब की थैली का पत्थर ख़तम करने का हमारा तरीक़ा इस्तेमाल करो, पहले रिपोर्ट निकालो, उसके बाद दवा को इस्तेमाल करो, उसके बाद दोबारा रिपोर्ट निकाल कर बेहतरीन रास्ते की जानकारी हासिल करके अपनी और दूसरों की तकलीफ़ ख़तम करने का ज़रिया बन जाओ, नेकी कर दरिया में डाल।

दायेमी बुख़ार टैब्लेट का ख़ास फ़ायदा यह है।

दायेमी बुख़ार टैब्लेट की कामयाब और ख़ास सिफ़त यह है: नया पुराना बुख़ार हो या मौसम का बुख़ार हो, या सर्दी खांसी के साथ बुख़ार हो, या ठंडी के साथ शरीर में दर्द मुंह का ज़ायेका ख़राब होने के साथ बुख़ार होता है, तो उसे ख़तम करने में मदद करता है। अगर सर्दी खांसी के साथ बुख़ार है तो सिर्फ़ दायेमी बुख़ार टैब्लेट का उपयोग करें और अगर सिर्फ़ बुख़ार है, काफ़ी दिनों से तकलीफ ख़तम नहीं हो रही है तो दायेमी बुख़ार के साथ बरगीन टैब्लेट का इज़ाफ़ा करें यह दोनों दवा को एक साथ चलाने से हर प्रकार के बुख़ार को ख़तम करने में मददगार है।

माहेरवाँ टैब्लेट का ख़ास फ़ायदा यह है।

माहेरवाँ टैब्लेट की ख़ास सिफ़त और कामयाब फ़ायदा यह है: हैज़ बंद हो गया हो या पेड़ू, कमर, जांघ, पैर में खिंचाव दर्द के साथ हैज़ आता हो या एक दो दिन तक हैज़ जारी होकर बंद हो जाता है, तो माहेरवाँ टैब्लेट बच्चा दानी (रहम) की हर तरह की तकलीफ़ को ख़तम करने में मदद करता है। बच्चा दानी (रहम) के रेशों को मुतहर्रिक करके मनी को ठहरने और उसमें अंडा बनाने में मदद करता है, रहम की दूसरी कई तरह की बीमारियों को ख़तम करता है और बच्चा दानी को ताक़त देता है, रहम की कमज़ोरी को ख़तम करके उसे मुतहर्रिक रखने में मदद करता है।

सलाम फार्मेसी® यूनानी कम्पनी

आलमगीर हाज़िक नाम की इस वेबसाइट पर हमारी कम्पनी की हर दवा को ऑनलाइन ऑर्डर कर सकते हैं और आलमगीर हाज़िक की किताब को हर ज़बान में लोड कर सकते हैं और हर बीमारी की मुकम्मल तफ्सील वेबसाइट और YouTube चैनल पर वीडियो की शकल में मौजूद है उसका फायेदा उठा सकते हैं।

Website:AALAMGIR-HAZIQ.COM
YouTube Channel:AALAMGIR-HAZIQ

इस वेबसाइट पर जाकर आलमगीर हाज़िक नाम की किताब को हर ज़बान में Google Translate करके किताब को लोड करें

Website:SALAMPHARMACYUNANI.COM
Mobile No.:9172154577/9763383553

डीलर का नाम,
पता और
मोबाइल नंबर